

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

जगत् अम्बा माता उमा देवी
वार्षिक महायज्ञ - 1997

माता उमा देवी मन्दिर (Lower Roop Nagar) मुट्ठी, जम्मू ।

मूल मन्त्र

विश्वे-श्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वा-त्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति
विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति-नम्रा: ॥

(दुर्गा-अ.ए.श्लो.-३३)

अर्थ : विश्व की स्वामिनी ! तुम विश्व का पालन करती हो । विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो । तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो । जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

VISHVESHWARI TUOM PARIPĀSI VISHWAM
VISHWĀTMIKĀ DHĀRYASĪTI VISHWAM
VISHWESH VANDYĀ BHAVTĪ BHAWANTI
VISHWĀSHRAYĀ YE TOUYI BHAKTI NAMRĀH

O Queen of the universe, you protect the universe. As the self of the universe, you support the universe. You are the (Goddess) worthy to be adored by the Lord of the universe. Those who bow in devotion to you themselves become the rufuge of the universe.

Ā-आ (ा), Ī-ई (ी), BH-भ

सोमा भवतान्तुष्टा
सर्वमानन्द फलदायनी

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

ओं

श्री महिम्नःस्तोत्रम् ।

(कश्मीरी भाषा में अर्थ तथा हिन्दी में पदार्थ)



रचतक जीयालाल सराफ

प्रकाशकः श्री भवानी मण्डली हारीपर्वत श्रीनगर

संवत् २०१२ जिल्द १०००

मूल्य १ रुपया

आरती

ॐ शंकरः भव भय हरः मोजतम च म्यानि जारी ।
दुःख त संकट ही त्रिपुर हरः दूर करतम म्य सारी ॥ १
छुख च अजर छुख च अमर–छुख च सच्चिदानन्द गण ।
सारिस्य त्रिभवनस च पूरित–व्यापक च त्रिन भवनन
त्रि नेत्र धारवुनि शंकरः–चूय छुख त्रिशूल धारी
दुःख त संकट ही त्रिपुरहरः दूर करतम म्य सारी ॥ २ ॥
त्रिन भवनन हुन्द च स्वामी- ब्रह्मादिक चि आदीन
चोनुय कराण स्मरन तीम–रातस दुहस चिय लीन ।
च्यानि सेवाय मंज रोज़ान–तीम कलः धारि धारी
दुःख त संकट० ॥ ३ ॥
च्यानि आज्ञाय कीन छु सपदान-सारि जगतुक विवहार
जगतकि पैदः करनुक पालनुक–मांटि ह्यतोमुत चि भार ।
च्यानि मायायि कीन छि ब्रह्माण्ड फलिमुत चोपारी
दुःख त संकट० । ४ ॥
भक्ती ध्यान युस छु प्रावान गथि ज़न्मा सु खागान
तसन्दि भापत हुन्ज भनिथूय तस च भवभरः तारान ।
छुख कगान दोर संसारः भय तस च कासान खारी
दुःख त संकट० ॥ ५ ॥
युस चोनुय महिमा गिव्य लोल सान रात्रो दिन
तस छुख सूति सूति रोज़ान छुयन तसनिंश किन्ह चि भिन
तसन्दि मापत च ही शंकरः छुख भनान हितकारी
दुःख त संकट० ॥ ६ ॥
पुष्पदन्त ओस दास चोनुय सेवाय मंज चि रोज़ान
च्यानि शाप मनषु लोकस मञ्ज पिव पथर तस पनुन पान
गुण लीला गिव तमि च्यानि रातदिन करून जारी
दुःख त सकट० ॥ ७ ॥
नाव थुवुन अथ गुण लीलायि-च्यानि महिम्नःपार
गुण गिव्य गिव्य रातस दुहुन शंकरः चि ओननय आ…
मृति लोक ह्युर खोरथन कास्यस शापच भेमारी
दुःख त संकट० ॥ ८ ॥
यिम गिवान गुण च्यानि शंकरः यिम परान महिम्नःपार
कासान छुख भय तीमनूय छुख दिवान भवसरः तार ।
भक्तिन छुख छनान चूय ह्युरो भवसरः खारि खारी
दुःख त संकट० ॥ ९ ॥

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा रमन्तं हृदयार बिन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥

काफ़ोर रंग सफ़ेद दयायि हुन्द युस अवतार
संसारुक सार वासुक हटि यस छु हार
हृदय कमलन मञ्ज़ युस फेरवुन भारं भार
भवानी सहित तस शिवस म्यान नमस्कार



त्पादपद्म संपरक मात्र संभोग संगिनम्।
े पाद्यकथा नाथ मामम् वेषमप्रवेशय॥

.ध कमलन हन्दि मिलापकि भोगकि संग युस कीवलम्य थाव
लूच रज हटि म्यकरतम पननिस द्वारस मञ्ज़ म्य चान्वस

मूढोऽस्मि दुःख कलितोऽस्मि जरादि दोषैः
भीतोऽस्मि शक्तिरहितोऽस्मि तवाश्रितोऽस्मि ।
शम्भो तथा कलयशीघ्रमुपैमि येन
सर्वोत्तमाद्धुरमुपोज्झित दुःख मार्ग ॥

मूढ छुस त दुखवुय सूतिन वरिथ छुस, वुजरकि दूषि किज व खोफज़दह सामर्थ रोस छुस म निर्बल त केवल, आसरस चानिस थफ करिथ छुस ही शम्भो बनाव म्य जल त्युथ युथ मावै, सारिवुय खोतह परम उत्तम वोर त्राविथ छुनह व दुःख मार्ग सारी, रोजहा व चाने समाधि लोर ॥

जनस्त्वद्पादाब्ज श्रवण मनन ध्यान निपुणाः
स्वयं ते विस्तीर्णा न खलु करुणा तेषु करणा।
भवे लीने दीने मयि मनन हीने न करुणा
कथं नाथ ख्यातस्त्वमसि करुणा सागर इति॥३॥

जनः	भक्त लोग	भवे	संसार में
त्वत्	आप के	लीने	डुबे हुये
पादाब्ज	चरण कमल पर	दीने	अनाथ
श्रवण	सुननी स्तीर्ण	मयि	मुझ पर
मनन	मननः स्तीर्ण	मनन हीने	बे सोच को
ध्यान	निदिध्यासन पर	न	नही करोगे
निपुणाः	ततपर है	करुणा	दया जब
स्वयं	खुद ही	कथं	किस तरह
ते	वह	नाथ	हे स्वामी
विस्तीर्णा	संसार से पार हुये हैं	ख्यातः	मशहूर
न + खलु	नही निश्चय से	त्वं + असि	तुम होगे
करुणा	दया	करुणा	दया का
तेषु	उन पर	सागर	समन्दर
करणा	करने के काबिल	इति	इस तरह

शंकर चानि चरण कमलुक युस, करि श्रवण मनन ब्यह निदि ध्यासन।
र पानै सु भवसरह हाजत तस, चानिन कटाक्षण हुन्द कति रोजन।
ारस मझ फटिमतिस म्यि दुखियस, विचार रुस्तीस त म्यि अनाथस
न करख न दया म्यि मूढभाव सोस्तिस, नाव चोन दयासागर व[illegible] ब कस,
त सपदि नाव चोन मशहूर जगतस, शंकर क्याज छु भवसागरस॥

[illegible] شمرون منن تہ [illegible] کری [illegible]
[illegible] چانن [illegible] حاجت تس [illegible]
[illegible] وچارہ رستس تہ [illegible]
[illegible] ناو چون دیا ساگر [illegible]
[illegible] مشہور جگتس [illegible]

ॐ महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्य सदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिनामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥४॥

महिम्नः	महिमा को	अथ	इस से
पारं ते	आप के अंत को	ऽवाच्यः	अनिन्दय
परम	बिलकुल	सर्वः	सब
ऽविदुषो	न जानने वाले की	स्वमति	अपने बुद्धि के
यदि	अगर	परिनाम	ताकत
ऽसदृशी	टुट फुट	ऽवधि	हद तक
स्तुति	तुता	गृणन्	गाने वाला
ब्रह्मादीनां	ब्रह्मादिकों का	ममापि	मुझको
अपि	भी	एष	यह
तद्	उस महिमा	स्तोत्रे	तुता
अवसन्नाम्	न पुहंचने वाले	हर	हे शंकर
त्वयि	आप के	निरपवादः	अनिन्द्य है
गिरः	वानियां	परिकरः	उद्योग

करह चानि महिमुहुक अन्त युस न, आसि जानान करि चानी तोता
सो तोता टुट फूट छि आसवुञ, क्यैंइ ति छुनह तेजुबाह त बड कांह कथां
न हुञ्ञ ग्यवमूच वाणी, छनह वातान तोर यति सु महिमा
[illegible] किञ वुज हुन्दि ताकत, युस यवि महिमा छनह तस निन्दा।
वि कुर उद्योग उन्य ग्यवह भ चानी गुण, अपवादु रोस्तु बनि इ म्यानी वोता

چپانی [illegible] کری آسی زانان
[illegible] شنکرہ چانی مہمہ وک انتھ [illegible] کیہنہ تعجب تہ
[illegible] سو تتا پھٹ پھٹ چھی آسون چھنہ واتان تور
[illegible] دِکن [illegible] گیمچ والی نیش گیوی مہما
[illegible] بوز ہندی طاقتہ [illegible] ایوادہ [illegible]
[illegible] کادات [illegible] اودیوگ اونبہ گیوہ چانی گن

भा[illegible]

[illegible]

अतीतः पन्थानं तव स महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्यायं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥५॥

अतीतः	दुर है
पन्थानं	रास्ते से
तव	आप का
स	वह
महिमा	ऐश्वर्य
वाङ	वानी
मनसयो	मन के
अतद्	देहादिक के
व्यावृत्त्या	मिथ्या करने से
यं	जिस महिमा को
चकितं	डर कर
अभिधत्ते	कहते हैं
श्रुतिरपि	वेद भी

स	वह महिमा
कस्य	किस को
स्तोतव्यः	तुता करने के लाविच
गुणः कतिविध	कैसे गुण वाला है
कस्य	किस का
विषयः	ज्ञान में आया है
पदेतु	सुरूप पर
अर्वाचीने	स्वाकार
पतति	पोच्छेगा
न मनः	नहीं मन [illegible]
कस्य	कि[illegible]
न	न[illegible]
वचः	[illegible]

वाणी त मनह निश दूर छु चोन महिमा, श्रुति [illegible] वी[illegible] [illegible]।
अजताज कमि चाअ चाअ गुणलीला, किथि [illegible] त केत[illegible] [illegible]
अदह कुस करि चानि स्वरूपुक गुण वर्णन, [illegible]।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन्पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता ॥ ८ ॥

मधुस्फीता	शहद से मीठे	ममत्व	मेरी (अपनी)
वाचः	श्रुतियों को	तां	इस
परमं अमृतं	अमृतात्मक	वाणीं	वाणी को
निर्मितवतः	बनाने वाला	गुणकथन	गुण गाने के
तव	आप के	पुण्येन	पुण्य से
ब्रह्मन्	हे पूर्णात्मक	भवतः	आप के
किं	किया	पुनाम्	शुद्ध करोंगा
वागपि	वाणी भी	इति	ऐसे
सुरगुरोः	ब्रह्मा जी की	अर्थेऽस्मिन्	प्रयोजन इस
अवसन्नाम्	अचम्भे की	पुरमथने	हे त्रिगुणात्मन
त्वयि		बुद्धिः	बुद्धि
गिरः	जगह है	व्यवासिता	दृढ निश्चय वाली है

करह चानि महि[illegible]
सो तोता दुट मृत रूपी[illegible] श्रुति, ब्रह्मा जी सुझ [illegible]ह छे वाणी ।
न हुझ ग्ववम्त वाति [illegible]ाति तोत, अदह कोत वातितोत द [illegible]ज अस्तुति
म [illegible] किन बुज हु[illegible]त
यांति कुर उद्योग उन्य ग्यव[illegible]ान वाणी, आमि प्रयोजन बुद्ध दृढ छि[illegible]ज ॥

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलय कृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुँ व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥७॥

तवैश्वर्यं	आपका महिमा	अभव्यानां	संसारिकों को
यत्तद्	अनिर्वाच्य	अस्मिन्	इस महिमा पर
जगद् + उदय	जगत की उतपति	वरद	हे वर देने वाले
रक्षा प्रलय	स्थिती और नाश	रमणीयां	अर्थ वादों से
कृत्	करने वाला	अरमणीं	दुख प्रापक
त्रयी वस्तु	तीन वेदों से साध्य	विहन्तुँ	नष्ट करने के वास्ते
व्यस्तं	बांटा हुवा	व्याक्रोशीं	मद भेदों के भ[illegible]वास
तिसृषु	तीन	विदधत	करते हैं
गुण भिन्नासु	गुणों मे भेद वाले	इहैके	इस संसार [illegible] कई
तनुषु	शरीरों में	जडधियः	अनात[illegible]

[illegible]ी इच्छा पूर्ण त्रेन वीदन मंज, होवमुत स्वरूप चोन त्रिगुणात्मक [illegible]
जगतुच सृष्टि ब्यइ स्थिति संहार, त्र[illegible] शरीरन म[illegible] दारमुन [illegible]।
[illegible]युस चोन महिमा अनि[illegible]ची आसुवुन, क्येंह अनात[illegible]वादी [illegible]
[illegible]र्खन खोश इवान तलहकानि दुख दिवान, महिमा चोन [illegible]

[illegible]

किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादानमिति च
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसुरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगताम् ॥८॥

किमीहः	कैसी कृपा वाला
किं कायः	कैसा शरीर वाला
स + खलु	
किं + उपायः	कैसे युक्ती वाला
त्रिभुवनं	त्रैलोकी को
कि[illegible]धारो	किस आधार वाला
धाता	ब्रह्म। जी
सृजति	पैदायश करता है
किम्	क्या
[illegible]नम्	मसाला वाला
[illegible] च	ऐसे ऐसे ही

अतर्क्यै	बे सोंच
ऐश्वर्ये	महिमा वाले
त्वय्य	आप पर
ऽनवसुरदुःस्थो	संशय युक्त
हतधियः	मोंह से मारी अ[illegible] वा[illegible]
कुतः को	अनात्म विचार वा[illegible]
यं	ऐसा
कांश्चिन्	कईयों को
मुखरयति	भकवास करते है
मोहाय	मोह करने वास्ते
जगताम्	जगत को

[illegible]वरह [illegible]
करह चा[illegible]ानि ईश्वरी [illegible]यठ छुय, कैंचन मतः वादिशन श[illegible] सपदान।
सो [illegible]ड्डकोसुह हिश हरकत, कुस उपाय कुस मसाल्लह छुख लगावान
न हुड्डः [illegible]वनस सारिस्रुय, उपदावान छुय इ छिय तिम वनान्।
[illegible] किन बुज ह[illegible]
[illegible]ति कुर उद्योग उन्य ग्यवरिस्य जगतस, मूह [illegible]डनह [illegible]त छिय बकवास करा।

[illegible]

भा[illegible]

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोपि जगता—
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद्भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥६॥

अजन्मानो	पैदा न होने वाला
लोकाः	चौदा भवन
किं	किया है
अवयववन्तो	स्थूल आकार वाले
ऽपि	भी
जगतां	लोकों की
अधिष्ठातारं	ईश्वर को
किं	किये
भवविधिः	उत्पति
अनादृत्य	न मान कर
भवति	होगी
अनीशो	ईश्वर के विना
वा	या
कुर्याद	कोन करेगा
भुवन	भवनों के
जनने	पैदाइश पर
कः	कौन है
परिकरो	सामग्री
यतो	क्योंकि
मन्दाः	देहाध्यासी
त्वां + प्रति	आप के महिमा [illegible]
अमरवर	[illegible] सुर[illegible]
संशेरत	शक करते हैं
इमे	यह

[illegible]येंह वनान जन्मह रोस आसवुन छु त्रिभुवन, क्येंह वनान थूल[illegible] [illegible]ति छान ! क्येंह वनान जगत छुय कर्ता रोस्तुय, उत्पति किथह पा[illegible] आसि[illegible] सप-[illegible] । [illegible]येंह वनान ईश्वर योद् आसि मानोन, कमि साम[illegible] न[illegible] [illegible] । [illegible]ह [illegible] [illegible]नवो इथय पाठ्य दीह अध्यासी, चानिस महिमाहस [illegible] [illegible]गान ।

[illegible] کینہہ وانان تھؤلہ رُوپ پیدہ کتی گژھن [illegible]
[illegible] کتھ پاٹھ اتھ چھی سپد [illegible]
[illegible] کی سانہ نیت چھؤن اوپدا [illegible]
[illegible] جانس مہاہس پیٹھ چھی [illegible]

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥ १० ॥

त्रयी	वेद	रुचीनां	श्रद्धाओं [illegible]
सांख्यं	विचार	वैचित्र्याद्	नाना प्रका[illegible]
योगः	यम नियम आदि	ऋजु	सीदा
पशुपति	शिव उपासना	कुटिल	टेडा
मतं	मत	नाना पथ	बहुत रास्तों [illegible]
वैष्णवम्	विष्णुभक्ति	जुषां	चलने वाले [illegible]
इति	ऐसे	नृणाम्	मनुषों को
प्रभिन्ने	अनेक प्रकार	एको	एक ही
प्रस्थाने	रास्तों पर	गम्यः	पाने के काबि[illegible]
परम् [illegible] इदं	अच्छा यह है	त्वं असि	आप ही हैं
अदः [illegible]थ्यम्	साधु वही है	पयसाम्	पानीयों को
इति च	इसी तरह	अर्णव इव	समन्दर जैस[illegible]

क्येंह मत[illegible]न [illegible] वेद [illegible] उ[illegible]म, क्येंह मनान विच[illegible]र क्येंह योग साधान ।
क्येंह [illegible]
सा[illegible] [illegible] भक्ति क्येंह मनार, नाराय[illegible] सुञ्ज भक्ति सीवा ।
न [illegible] अव[illegible]ति प्यठ प[illegible] र, प[illegible]न र[illegible]क तिम जान छि जानान
म [illegible] किन बुज[illegible]ति प्यठ पकि र, चुय छुख प्रावणी सिद छि प्राधान
[illegible]यांति कुर उद्योग उन[illegible] नालह [illegible]ोन र, आखिर[illegible] समन्दरस मंज छि वातान ।

[illegible]

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥ ११ ॥

महोक्षः	बुढा बैल	सुराः	ब्रह्मादि
खट्वाङ्गं	मुसल[चारपाइ खूर]	तां तां	उस उस
परशुः	तबर	ऋद्धिं	ऐश्वर्य को
अजिनं	मृग खाल	विदधति	दिया हुआ
भस्म	चिता भस्म	भवद्	आप के
फणिनः	सांप	भ्रूप्रणिहितां	भूवें से पाई हुइ
कपालं	नृकरोटी[कलखपर]	नहि	नहीं
चेती	भी ऐसी	स्वात्मारामं	सच्चिदानन्द
यत् + तव	इतना ही है	विषय	विषय भोग रूप
	आप का	मृगतृष्णा	भ्रम
वरद	वर देने वाला	भ्रमयति	[illegible] वादी करती है
तन्त्रः	काम की		
उपकरणम्	सामग्री		

[illegible]यक दान्द मुहुल तबर भस्म, मृग खाल कलह खपर [illegible] आसान।
[illegible] वापत छय इ चय सामग्री, योसह पानस सूति छय रे रोज[illegible]।
[illegible]ह हरकच सूति ब्रह्मादिकन कु[illegible], रंगह २ कुस २ [illegible]
[illegible] आनन्द छुख विषय मृग तृष्णा, सति आसिथ [illegible] भ्रमरावान।

[illegible]

ध्रुवं कश्चित सर्वं सकलमपरस्तु ध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवन्जीह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥ १[illegible]

ध्रुवं	सत्य है
कश्चित	कुछ लोक
सर्वं	सब जगत
सकलं	सब जगत
अपरस्तु	और वेदान्त
ऽध्रुवम्	मिथ्या ही है
इदं	यह नाम रूप
परो	अन्य युक्ति
ध्रौव्य	सत्य असत्य
अध्रौव्य	विषय वाले
जगति	संसार पर
गदति	कहते हैं
व्यस्त	नमोद प्रत्यम
विषये	पदार्थ वाले

समस्तेप्ये	सब भी
एतास्मन्	इस
पुरमथन	हे त्रिगुण मल ह[illegible]
तैः	उनके मतों
विस्मित	हैरान हुए
इव	जैसे
स्तवन	स्तुती करता
जीह्रमि	लज्जित होता
त्वां	आप को
न + खलु	क्या नही क[illegible]
ननु	ज़रूर
धृष्टा	निर्लज्जित
मुखरता	।कि रस की
	कह।।[illegible]

[illegible]येंह वनान सत क्येंह वनान असत यथ जगतस, क्येंह वनान [illegible] छुया[illegible] [illegible]सुवन। नाना प्रकारन मतह वादियन हुन्दि [illegible], ही शिव [illegible] हैरान हुस व[illegible] दान। [illegible] जोनन निर्लज्जित बनिथ, [illegible] हुन्द तुता च[illegible] क[illegible]

[illegible]

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुँ यातावनलमनलस्कन्द वपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरु गृणद्भ्यां गिरिशयत्
स्वयँ तस्थें ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।१३।

तवैश्वर्य	आप की महिमा	ततो	फिर
यत्नाद्	यतन से	भक्ति	पुज्यो पर राग
यत्	जो	श्रद्धा	गुरु वेदान्त वाक्यों पर श्रदा
उपरि	ऊपर की तरफ		
विरिंचो	ब्रह्मा जी	भरगुरु	बहुत गौरव से
हरि	विष्णु	गृणद्भ्यां	तुता करने वालों को
अधः	नीचे की तरफ	गिरिश	हे कैलास पर रहने वाले
परिच्छेत्तुँ	मापने के लिए	यत्	जो
यातौ	गई हुई	स्वयं	खुद ही
अनलं	कामयाव न हुये	तस्थे	अपरोक्ष हुवा था
अनलःकन्दः	ज्योतिर्मय	ताभ्यां	उनको
	(जयते लिङ्ग)	तव किं	आपकी क्या
वपुषः	सुरूप को	अनुवृत्तिः	सेवा
		न	नही
		फलति	फल देती है

ज्योति स्वरूप हारि किज ब्रह्मा, वोनि किज विष्णो मेनुनि [illegible]।
[illegible]वय धाकि स्यठाह अन्द लोबुख न चोनुय, दोशवय छारिथ [illegible]।
[illegible]पतह श्रद्धा भक्ति किन तिमव चेय, ही कैलास वासी करहय [illegible]
[illegible] सन्मुख द्युत थक दर्शुन, चानि सीवाइ हुन्द फल ई [illegible]

[illegible]

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरिव्यतिकरं
दशास्यो यद्बाहूनमृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्म श्रेणीरचित चरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् १४

अयत्नाद्	बिना कोशिष	शिरः	सिर रुपी
आसाद्य	पा कर	पद्म	कमल
त्रिभुवनं	त्रिलोकी को	श्रेणी	कतार से
अवैरि)	शुत्र के भय	रचित	कि्इ हुइ
व्यतिकरं)	रहित	चरण	चरण
दशास्यो	रावणासुर	अम्बुरुह	कमल के
यद् बाहू-	जो बुजावों को	बलेः	पुजा वाले
नभृत	धारन लगा	स्थिराः याः	मजबूत हुइ
रणकण्डू	युद्ध पर	त्वद्भक्तेः	आपकी [illegible]क्ति का
परवशान्	परिश्रम वाले	त्रिपुरहर	त्रिपुर[illegible]
		विस्फूर्जितं	फल
		इदं	यह

ही त्रिपुर ह[illegible] [illegible]वणन [illegible] यतह रोस्तुय, [illegible] बापत बोज [illegible] शत्रु गालिन।
शत्रव रास्तुय जगतस [illegible]ोस फेरवुन, स[illegible] त्रि[illegible]वनुक [illegible] राज [illegible]वुन।
ओस तस [illegible] महिमा पननि भक्ति हुन्[illegible] [illegible] ओस [illegible] बनावान।
[illegible]ोय पनुनि कलह मा[illegible] चानेन [illegible]पोशि [illegible]दन, [illegible] ओस [illegible]इ तिम चे लागा[illegible]

[illegible]

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात्कैलासेपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः १५

अमुष्य	उस रावण को	अलभ्या	पाने के नाकाबिल
त्वत्सेवा	आपकी सेवा से	पाताले	पाताल में
सम् अधिगत	पाई हुई	अपि	भी
सारं	ताकत वाले	अलस चलित	आलस से दबाई हुई
भुजवनं	बुज जंगल को	अङ्गुष्ट शिरसि	अंगुठे के नोक से
बलात्	जोर से	प्रतिष्ठा	रहने की जगह
कैलासे अपि	कैलास पर्वत भी	त्वय्य	आप पर
त्वत्	आप के	आसीद्	था
अधिवसतौ	निवास्थान	ध्रुवम्	निश्चय करके
विक्रमयतः	पूर्ण पौरष चलाने वाले	उपचितो	एश्वर्य वाला
		मुह्यति	मोह को पाता है
		खलः	दुष्ट [नष्ट बुद्दि वा

शंकर तमि रावणन चाने, सीवाइ किज बोज़ त बल प्रोनुन।
बलहके मदह चानिस निवासस, कैलासह पर्वतस यालि [illegible]
वि आलुच्छि पाठ्य पननि न्योठह के, नोखह सूति गुथुन [illegible]
ह तस तिथिस राजनस पातालस, मञ्ज ठहरनस कांह आम [illegible]

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीम्
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयो-
र्नकस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१६॥

यत्	जो	न	नहीं
ऋद्धिं	संपदा	तत्	वह
सुत्राम्णो	इन्द्र की	चित्रं	अचम्भा है
वरद	हे वर देने वाले	तस्मिन्	उस पर
परम उच्चैः	बहुत ऊंचे	वरिवसितरि	सेवा करने वाले
अपि	भी	त्वत्	आप के
सतीम्	होने वाले	चरणयोः	[illegible]रणों की
अधः चक्रे	नीचे दबाई है	न	नहीं
बाणः	बाणासुर ने	कस्य अपि	किस को भी
परिजन	नोकरों की	उन्नति	उन्नति के लिए
विधेय	मान हानी के रक्षक	भवति	होती है
त्रिभुवनः	त्रैलोकी वाले	शिरसः	सि[illegible]
		त्वय्य	तु[illegible] पर
		वनति[illegible]	[illegible]प्रणाम [illegible]रता

हे वरद यमि बा[illegible]सुरन पननि [illegible]शवह किअ, इन्द्र[illegible] [illegible] सम्प[illegible] बान दबावुन
[illegible]पदह तम चा[illegible]नि बन्[illegible] सीवाइ [illegible] [illegible] [illegible]ोकी प[illegible]स आ[illegible]ीन करून।
[illegible]हुनह [illegible]जुव सु[illegible] [illegible] [illegible]ह कि[illegible], कस आकि[illegible] [illegible]नह अदह उन्नति द[illegible]

[illegible]

[illegible]

अकाण्ड ब्रह्माण्डक्षयचकितदेवा सुर कृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्ग व्यसनिनः ॥१७॥

अकाण्ड	बे मौका [अनियत समय पर]	स	वह
ब्रह्माण्ड	त्रिलोकी के	कल्माषः	कालाई
क्षय	नाश होने पर	कण्ठे	गले पर
चकित	डरे हुये	तव न	आप के नही
देव	देव	कुरुते	करता है
असुर	असुर	न	नही
कृपा	दया पर	श्रियम्	शोभा को करता है
विधेयस्य	लगे हुये	अहो !	अचम्बा है
आसीत	था	विकारः	तबदीली
यः	जो	अपि	भी
त्रिनयन	हे तीन नेत्र वाले	श्लाघ्यो	फक़र होता है
विषं	जहर को	भुवन	लोगों के
संहृतवत	पीने वाले	भयभङ्गः	भय दूर कर[illegible]
		व्यसनिनः	शौक वाले

ही त्रिलोचनह बेमोकह त्रैलोक नाशिस प्यठ, राक्षस त दीव आमि [illegible]
योसह दया चे करथख छुनथख जहर चथ, तमि सूति अद [illegible]
सुय सियाही निशानह चानिस हटिस प्यठ, युस दिवान [illegible]
त्रैलोकीहुन्दिस खोफस नष्ट करनस प्यठ, छुख चुय [illegible]

[illegible]

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः । १८

असिद्धार्था	नाकामयाव
नैव	नही हो
क्वचिद्	किसी से
अपि	भी
स देव	देव सहित
असुर	असुर
नरेः	मनुष्यों पर
निवर्तन्ते	वापस नही आते हैं
नित्यं	हर वक्त
जगति	संसार में
जयिनो	जीत करने वाले
यस्य	[illegible] के
विशिखाः	[illegible]
स पश्यन्	वह देखता हुवा
ईष	हे ईश्वर
त्वां	आपको
इतर	सामान्य
सुर	देवताओं
साधारणम्	बराबर
अभूत	हुवा था
स्मरः	कामदेव
स्मर्तव्यात्मा	सोंच के काबिल रुप वाला
नहि	नही
वशिषु	योगियों के
पथ्यः	अच्छा फल निकालता है
परिभवः	अनादर

[illegible]ी भगवानड युस कामदीवह सुन्द [illegible] दीवन मनुष्यन राक्षसन न त्रावान ।
[illegible]ंगनस मंज सारिनुय युस जेनानु [illegible] नाकाम इरान ।
[illegible]ाव चे निश भस्म गव तम कामदेव [illegible]
[illegible]ुवि सपद सोरनस लायक युं [illegible] कोर, [illegible] वशुस [illegible] नेरान ॥

[illegible]

महीं पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ॥ १९ ॥

मही	भूलोक	अनिभृत	हर वखत
पादाघाताद	पैर के दबाव से	जटाताडित तटा	दबाइ हुइ तरफ वाला
व्रजति	जाती है	जगत	जगत की
सहसा	अचानक	रक्षायै	रक्षा के लिये
संशय पदं	शक में	त्वं	आप
पदं विष्णु	अन्तरिक्ष भवनों को	नटसि	नाच कर
भ्राम्यद्भुजनः	हिलाइ हुइ भुज	ननु	निश्चय करके
परिघरुग्न	तोफों से इरद गिरद किइ हुये	वामैव	नियमों से
ग्रहगणम	तारामंडल वाले	विभुता	ऐश्वरय होता है
मुहुः	बारं बार		
द्यौः	सुर लोक		
दौस्थं	चकर को		
याति	पाता है		

[illegible]वी च[illegible]नेन पादन हुन्दि दबावह सूती अचानक शुकस मंज [illegible] [illegible]नन [illegible]जन हु[illegible] हार कुन हिलवनह किन तारामंडुल मो[illegible] [illegible] न जटा मुकुटक रगाड सूती [illegible] सोरग चकर [illegible] [illegible]बानह जगतुचि रचाइ बापत तुहि नचान विभूता चाना [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि–
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ॥ २० ॥

वियद्व्यापीः	आकाश में फैला हुवा	जगद्द्वीपा कारं	भूलोक जजीरे शकल वाला
तारागण	तारा समुह	जलधि वलयं	समन्दरने घेरा हु
गुणित	जानने में आया हुवा	तेन	उस प्रवाहने
फेनो	कफ दरया के	कृतं	किया है
उद्गमरुचिः	जमने की शुभा वाले	इति	ऐसे
प्रवाहो	फैलाव	अने नैव	इसी विधी से ही
वारां यः	पाणियों का जो	उन्नेयं	जानने के योग्य
पृषतलघु	बिन्द छेन्ट सा पतला	धृत महिम	हे माय प्रेरक
दृष्टः	नजर में आया हुवा	दिव्यं	आनर्वाच्य
शिरसि ते	सिर पर आप के	तव	आप का
		वपुः	वास्तव रूप

आकाशस मंझ [illegible] तारामण्डल, दरियावस कफ हुइ शोभा दिवान । [illegible]न्युक यूत फैलाव चा[illegible]न [illegible]रुइके आकिस बून्दस स[illegible]न बोजनह इवान । सोय अ[illegible] बून्द जगतर दीप[illegible] [illegible] समन्द[illegible] नथि अन्द २ कुर [illegible] घेरह [illegible] । इअलाय[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वास्तव स्वरूप चो[illegible] [illegible]निर्वाची छु [illegible]सा[illegible] ॥

[illegible]

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो-
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथ चरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।२१।

रथः	रथ	दिधक्षोः	जलाने के इच्छा वाले
क्षोणी	पृथवी	ते	आप को
यन्ता	रथ चलाने वाला	कोयं	कोन यह
शतधृतिः	ब्रह्मा	त्रिपुर	त्रिपुरासुररूप
गेन्द्रो	समीरु पर्वत	तृण	तिनके को
धनुः	कमान	आडम्बर	जमगठकी
अथो	और	विधिः	तरीका
रथाङ्गे	दो चक्र	विधेयै	भक्तों से
चन्द्रार्कौ	चांद व सूर्य	क्रीडन्त्यः	खेलते हुई
रथ चरणपाणिः	विष्णु	न खलु	नही है
शरः	तीर	परतन्त्रा	नियति के
इति	ऐसे	प्रभुधियः	ईश्वरों [illegible]

...ुरह त्रेन भस्म करबुनि रथ चे पृथ्वी, ब्रह्मा रथस छुय च...
...रु पर्वत कमान रथ चक्र सिर्यि चन्द्रम, विष्णो पानह ...
...ावतु च इच्छा छुख चुय पानह ईश्वर, परतन्त्र रोस्तु ...

[illegible]

हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्र कमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परि नतिमसौ चक्र वपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ॥ २२

हरिः	नारायण	गतः	हुवाथा
ते	आप के	भक्त्युद्रेकः	भक्ती की तीव्रता
साहस्रं	हजार गिनती	परिणतं	फलरूप
कमल बलिं	कमलसे पूजा	असौ	वह
आधाय	करके	चक्रवपुषः	नारायण की
पदयो	पैरोंकी	त्रियाणां	तीन की
यत	जो	रक्षायै	रक्षा के लिई
एकोने	एक से कम	त्रिपुरहर	[illegible] हारक
तस्मिन्	उस हजार पर	जागर्ति	हुश्यार
निजं	अपना	जगताम्	भवनों की
उदहरन	चढाया था		
नेत्रकमलं	नेत्र कमलको		

[illegible] त्रिपुर हरह [illegible] ानि पद पूजाइ यालि [illegible] विष्णोहन [illegible] [illegible] गोयलागान।
[illegible] अस पंप [illegible] गास [illegible] नेत्र कोडुन, [illegible] नि प [illegible] आइ [illegible] रोवुन।
[illegible] दह धन्यव [illegible] की [illegible] रक्षाइ हुन्द, हावा गु [illegible] हुँद फल [illegible] हुव ई मनान।

[illegible]

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां उत्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदान प्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसुजनः ॥ २३ ॥

क्रतौ	त्रिविधकर्म वाङ्ग मनो वाचक
सुप्ते	नष्ट होने पर
जाग्रत	होशयार हो
त्वमसि	आप है
फल योगे	फलदेने पर
क्रतुमतां	यज्ञ करने वालों को
क्व कर्म	कहां काम
प्रध्वस्तं	नष्ट होगा
फलति	फलदेवेगा
पुरुषाराधनं	किसी की सेवाके
ऋते	विना

अतस्त्वां	उससे आप को
उत्प्रेक्ष्य	जान कर
क्रतुषु	यज्ञों पर
फलदान	फल देने के
प्रति भुवं	जिमवार को
श्रुतौ	सतश.[illegible] पर
श्रद्धां	श्रदा भक्ती
बद्ध्वा	रख के
दृढ परिकरः	दृढ उद्योग
कर्म सुजनः	कामो पर [illegible]

यज्ञ करन [illegible]ल्यन यज्ञ मोकलनस प्यठ फल दिनह बापत हुरम[illegible]ज्ञान,
चानि सीवाइ रोस यज्ञ करन वाल्यन यज्ञुक फल तिमन क[illegible]
सारिनुय यज्ञन प्यठ फलादिनह बापत सारिय जिमहदा[illegible]
अदह मनुष्य [illegible]दस प्यठ श्रद्धा गण्डिगण्डि [illegible] करन[illegible]

[illegible]

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता-
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुं श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखा ॥ २४

क्रिया दक्षः	कर्मों पर दाना	क्रतुभ्रंशः	यज्ञ का नाश
दक्षः	दक्ष प्रजापति	त्वत्तः	आप से
क्रतु पतिः	यजमान	क्रतुफल	यज्ञ का फल
अधीशः	अधिष्ठान	विधान	देने [illegible]
तनुभ्रतां	देहधारियों का	व्यसनि नः	शोक वाले
ऋषीणां	ऋषयों का	ध्रुवं	निश्चय से
आर्त्विजं	तन्त्र का काम	कर्तुः	यजमान
शरणद	हे भक्तों को पालने वाले	श्रदा विधुरम	श्रदा हीन
सदस्याः	सभा के गुण दोषचिन्तक	अभिचाराय	बुरे फल के [illegible]
सुरगणाः	इन्द्र आदि देवों का समुह	हि	ही
		मखा	यज्ञ बनते हैं

भगवान दक्ष प्रजापत क्रियाय प्यठ ओस हुशियार दोहिधारियन हुँद स्वामी [illegible] यजमान दीवता त इन्द्राज़ आसि सभासद याज्ञिकि ऋषि आसि अमि यज्ञि [illegible] ब्रह्मण यज्ञुक फल [illegible] प्यठ छे शौक [illegible] स्तरु [illegible] नाय रोस सु ओस [illegible] दिति यजमानस [illegible] सद्गुद चानि [illegible] तय तिथिस यज्ञस [illegible] भावनाइ रो[illegible] दह नन्यव [illegible] ॥

[illegible]

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमऽपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ॥ २५ ॥

प्रजानाथं	ब्रह्मा का	धनुष पाणि	कमान हाथ वाले
नाथ	हे स्वामी	यातं	भागे हुये
प्रसभं	जोर से	सपत्राकृतं	तीर का लक्ष
अभिकं	काम के	अमुं	उस का
स्वां	अपनी	त्रिसन्तं	डरे हुये
दुहितरं	कन्या को	ते	आप से
गतं	गये हुये	ऽद्यापि	अब भी
रोहित	हिरण	त्यजति	छोढता है
भूतां	बने हुये	न	नहीं
रिरमयिषु	मैथन के इच्छा से	मृगव्याध	शिकारी का
मृष्यस्य	मृग के	रभसः	भय
वपुषा	शरीर से		

[illegible]ह्मा रू[illegible] [illegible]न कामनाइ जोरः किन [illegible] रूप कन्याइ पतः ओस [illegible]
[illegible]नइ हिरणी अमि सून्दि पतः दोरन किन ब्रह्मा रूप मनन ति [illegible]
[illegible]द चूय शिकारि गनिथ तीर कमान हारिथ मन रूप [illegible]
[illegible]ाकाशस पिठ वातिमुतिस ब्रह्माजियस तस चोन शिकार्य [illegible] ॥

[illegible]

अपूर्वं लावण्यं विवसनतनोस्ते विमृशतां
मुनीनां दाराणां समजनि स कोपव्यतिकरः ।
यतोभग्ने गुह्ये सकृदऽपि सपर्यां विदधतां
ध्रुवं मोक्षो श्लीलं किमऽपि पुरुषार्थ प्रसवितॆ ॥२

अपूर्वं	अलौकिक	यतो	जिस
लावण्यं	सौन्दर्य	भग्ने गुह्ये	टूटे हुए लिंग को
विवसनतनोः	दिगम्बर देवादि	सकृदपि	एकही दफा भी
ते	आपके	सपर्यां	पूजा
विमृषतां	देखते हुए	विदधतां	करने वालों को
मुनीनां	ऋषियों के	ध्रुवं	निश्चय से
दाराणां	स्त्रियों को	मोक्षो	मोक्ष
समजनि	पैदा हुआ	अश्लीलं	[illegible]
सकोपि	वह कोई	किमपि	[illegible]
व्यतिकरः	चित्त विकार	पुरुषार्थं	प्रयोजन को
		प्रसवि ते	देने वाला आप

ही शङ्कर चोन दिगम्बर स्वरूप युस-ओस अलौकिक सुन्दर निरावर्ण, यु
चोन वुछिथुय ऋषियन हुन्जन त्रियन [illegible] अमरई चित्तविकार [illegible] तिम
भ्रम शापह किन फुटिमुत्[illegible]स लिङ्गस [illegible] रुस्-मोक्ष [illegible] ना गई तिमन यु
तनह शिवलिङ्ग पूजा करान्‌ह मुतां [illegible] सपदान म[illegible]

[illegible]

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा वत वरद मुग्धा युवतयः ॥ २७ ॥

स्वलावन्यः	अपने सौन्दर्य को	यदिस्त्रैणं	जब स्त्रीजन
आशंसा	कहने वाली	देवी	पार्वती
धृत धनुष	पकडे हुये	यमनिरत	हे जितीन्द्रिय
	कमान वाला	देहार्ध	अर्धनारीश्वर
अह्नाय	जठ	घटनात	को होने से
तृणवत	तीनके की तरह	अवैति	जानेगा
पुरः	अपने सामने	त्वां	आप को
प्लुष्टं	दग्ध होइ को	अद्धा	प्रत्यक्ष
दृष्ट्वा	देख कर	वत वरद	हे कामदेव जलाने वाला
पुरमथन	हे त्रिमलहारक	मुगधा	मूढ है
पुष्पायुधमऽपि	कामदेव को भी	युवतयः	औरतें

त्रिगुण हारक पनुनि सुन्दरता व्यकवुन, पार्वती पानस सन्मुख [illegible] ।
[illegible] कांच हुन्दि पाठ्य तस कामदीवस, भस्म गछान चानि [illegible] ।
वरदायक यालि सु ज़ानि छुखं त्रियव, ज्यून्मुत च लालि [illegible] ।

[illegible]
[illegible]
[illegible]

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ २८ ॥

श्मशानेषु	श्मशानो पर	अमङ्गल्यं	बुरा
आक्रीडा	क्रीडा करना	शीलं	आचार
स्मरहर	कामनाशक	तव भवतु	आपका हो
पिषाचा	भूत प्रीत	नामैवं	निश्चय से
सहचरा	परिवारहे	अखिलं	सब
चिताभस्मालीपः	चिताभस्म मला है	तथापि	फिर भी
स्रगपि	माला भी	स्मर्तॄणां	भक्तों को
नृकरोटी	मनुष्य के	वरद	वर देने वाले
पारकरः	सिरों का कतार	परमं	बडा
		मङ्गलमऽसि	कल्याण हो

हाँ वरदायक श्मशानन प्यठ खेल करनी, भूत प्रीत परिवार चोन आसवुन । चिता भस्म अतुर चाज़ चे़ मनुष्य कलह म[illegible] नाल[illegible], युथ आचार चोन युद छु आसवुन । आसितन युथ्य चाल चलन [illegible], भक्तिन प्यठ मंगल दिवुन छुख आसवुन ॥

[illegible]

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ॥२९॥

मनः	चित से उलठा
प्रत्यक	असत्य जड दुःख [जगत से उलठा]
चित्ते	चिदानन्द रूप
सविधं	विधी सहित
अवधाय	रखकर
आत्तमरुतः	जीते हुये प्राण
प्रहृष्यत	हर्षित हुये
रोमाणः	रोम वाले
प्रमद	आनन्द
उत्संगित	बरे हुये
दृशः	आंख वाले

यत	जिस
आलोक्य	अनुभव करके
अह्लादं	आनन्द को
हृद इव	जील में सा
निमज्ज्य	डुब हुयं
ऽमृत मये	अमृत रूप
दधति	अपरोक्ष करता
अन्तः	अन्तर्मुख भाव से
तत्वम	तत्वं लक्षण से
किमपि	अनिर्वाच्य
यमिनः	योगीश्वर [नाम रूप रहित]
तत्किल भवान	वही है आप

तह निश बर्खलाफ युस चित्त स्वरूप तथ वारह पाठ्य मनह सु [illegible] निमति
सोस । रूम रूम आसन बुथदन्य सुखरूपी आशि म्रांत [illegible] सोस ।
यूगीश्वर अमृत रूपी हृदय सरसुय फटियाति आनन्दह सोम [illegible]
नेस स्वरूपस सुय । चान स्वरूप अनिर्वाची नाम [illegible]

[illegible]

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणतां बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि ॥ ३० ॥

त्वंमऽर्कः	आप सूरय हैं	परिच्छिन्नां	परिमितां
त्वम सोम	आप चन्द्रमा हैं	एवं त्वयि	तुज पर ऐसे
त्वमऽसि	आप हैं	परिणतां	परिनाम वाली
पवन	हवा	बिभृतु	शोभा वाली
त्वं हुतवह	आप अग्नी हैं	गिरं	वानी को
त्वं आप	आप जल हैं	न विद्मः	न जानते हे
त्वं व्योम	आप आकाश हैं	तत्तत्त्वं	वुह वसतु
त्वं धरणि	आप पृथवी हैं	वयं	हम भक्त
आत्मात्वं	यजमाण आप हैं	इहतु	इस संसार में
इति च	इसी तरह	यत्वं न भवसि	जो तु नही हे

चुय [illegible] सिर्यि चन्द्रम वायु अग्न, जल आकाश [illegible] यजमन
योद इमन आठन [illegible] थकह सोम सान [illegible] छुनह [illegible] इहतु [illegible]
आसना [illegible]सारस मंज छुनह कांह त्युथ [illegible] छुनह आसनस

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरनुरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ३१

त्रयीं	वेद	तुरीयं	तुरयात्मक
तिस्रो वृती	स्त्व रज तम	ते धाम	आप का स्वरूप
त्रिभवनं	भू भवः स्वः	ध्वनिभिः	शब्दों से
अथो त्रिन	और ३ भी	अनुरन्धानं	पीछे चलने वाले
अपि सुरान	३ स्वर [अनदात]	अनुभि	लक्षनों
अकाराद्यैः	अ मात्रा से ण तक	समस्त	अखन्ड
वर्णैस्त्रिभिः	अ उ म	व्यस्तं त्वां	परिछिन हुये आप को
अभिदधत	कहा हुवा	शरणद	भक्ति पालन
तीर्ण	अतीत हुये	गृणात्य	कहता है
विकृति	विकारों से	ओं इति पदम	ओं यह पद

हमन त्रन अक्षरन हुन्द छिय वनान , अकार शब्द रिखवेद भूर्लोक
गुण , उद्धात स्वर पतह बिकारह सूतिय,युजर्वेद भुवःलोक व्यह र... गुण
...न तैजस पतह मकारह सूनिय, अथर्वेद स्वःलोक व्यह तमोगुण ...
... इथय पाठ्य त्रेन अक्षरण हुन्द,उपाधिक नाम रूप आत्मक ...
वकवुन्यन त्रिविध विकारण गाछिथ हौर , चोन तुर्या स्वरू...
...र ई पद ईश्वर रूप सारिसूय,जीवह रूपह किजव्येन ब...

[illegible]

भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहा-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते।

भवः	भवदेव	अमुष्मिन	इस नामाष्टक में
शर्व	शर्व	प्रत्येकं	हर एक महिमा
रुद्रः	रुद्र	प्रविचरति	अनवास्थित हो
पशुपति	देव	देव	हे चिद्धन
अथ	और	श्रुतिः अपि	वेद भी
उग्रः	देव	प्रियाय	परम प्रेमास्पद
सहमहान	नामों के साथ	अस्मै	उस स्वात्माद्वैत
तथा	उसी तरह	धाम्ने	तुरीय स्वरूप में
भीमेः	देव	प्रणिहित	अर्पन किए हुये
ईशानः	देव	नमस्यः	अहं भाव वाला
इति यत	ऐसे ही	अस्मि	हुँ
अभिधानं	आठ गिन्ती वाले	भवते	आप को
अष्टकं इदम			

भव दीव शर्व दीव रुद्र दी[illegible] पशुपति दीव, उग्र दीव महादी[illegible] भीम दीव ईश[illegible] दीव। [illegible]मन आठन नावन हन्द प्रथ [illegible]क महिमा, वेद [illegible]नह महिमा त[illegible] थनिथ छकान। आं[illegible] परम [illegible] स्वात्म[illegible] तुर्या स्वरूपस, नमस्कार पनुन [illegible]भ अर्पन करान ॥ आस[illegible]

پشپتی دیو اوگرہ دیو مہادیو بھیم دیو ایشن
[illegible] دیو شروہ دیو رُدرہ دیو [illegible] دیو چھیہ مہا تھیوک [illegible]
[illegible] بند پتھ ایوک مہا [illegible]
[illegible] سفری جایہ تُریا شروپس [illegible]

वपुष्प्रादुर्भावादनुमितमिदं जन्मनि पुरा
पुरारेनैंवाहं क्वचिदपि भवन्तं प्रणतवान् ।
नमन्मुक्तः संप्रत्यतनुरहमग्रेऽप्यनतिमान्
महेश क्षन्तव्यं तदिदं अपराधद्वयमपि ॥ ३३ ॥

वपुः	शरीरके	नमन	प्रणाम करता हुवा
प्रादुर्भावात	प्रकट होने से	मुक्तः	मुक्त शरीर हुवा
अनुमितं	जान लिया	संप्रति	इस वक्त
इदं	यह	अतनुः	शरीर रहत
जन्मनि	जन्मों में	अग्रे पि	आगे भी
पुरा	पिछले	अनतिमान	प्रणाम न करनेवाल
पुरारे	हे शंकर	महेश	हे ईश्वर
नैवाहं	नहीं मैंने	क्षन्तव्यं	माफी देना
क्वचित	किसी तरह	तदिदं	वह यह
अपि	भी	अपराध	दोषोंको
भवन्तं	आप के	द्वयमऽपि	जोढी को
प्रणतवान	झुका हुवा हूँ		

ही शङ्कर पनुन शरीर प्रकट सपदनह किञ । छुम करान पानै पनुन अनुमान पतिम्यन जन्मन मंज कुनि जन्मस मंज । ओ तुह्म न च़ेय कुन नमस्कार कर[illegible] ज़ानिकयन यथ जन्मस मोक्लयोमहुम । छुम अ यमि किञ च़ेय [illegible] करान ब्रोंठ कुन शरीरह रोस इयम न करनह चाञ तोता । इमन दोन [illegible] क्षमा छुसय मंगान ॥

[illegible]

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमितिसर्वाय च नमः ॥ ३४

नमो-	नमस्कार	नमः	नमस्कार
नेदिष्ठाय	नजदीक वाले को	वर्षिष्ठाय	बहुत बुडे को
प्रियदव	जङ्गलों पर प्रिय	त्रिनयन	त्रिनत्र वाले
दविष्ठाय च	बहुत दूर वाले का	यविष्ठाय	बहुतछोटे को
नमः	नमस्कार	नमः	नमस्कार
नमः	नमस्कार	नमः	नमस्कार
क्षोदिष्ठाय	बहुत सूक्ष्म का	सर्वस्मै ते	सब को
स्मरहर	हे कामदेव नाशक	तदिदं	उस [illegible]
महि[illegible]य च	बहुत मोठे को	अति सर्वाय च	अतीत
नमः	नमस्कार	नमः	तुर्यासुरूप को भी नमस्कार हो

[illegible]ठाह नजिदीक रूपस चानिस नमस्कार । वनन हुन्दिस प्रेमियस चय नमस्कार । [illegible]मदीव गालवुनि सूक्ष्म रूपस प्रणाम । [illegible] रूपस चानिस [illegible]स्कार । [illegible]नेत्र दारवुनि बुड़ रूपस [illegible]णाम । लोकिटिस [illegible] चानिस [illegible] । [illegible]ारिसुय वातिमुतिस चे प्रणाम [illegible] सारिय निशि अतीतस [illegible] नमस्कार ॥

[illegible]

बहलरजसे विश्वोपत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसिपदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ॥ ३५ ॥

बहल	बहुत	जन	जीवों के
रजसे	रजोगुणवाले	सुखकृते	पालने वाले
विश्वोत्पत्तौ	जगतकी सृष्टी वाले	सत्वोद्रिक्तौ	सत्वगुणवाले
भवाय	भवरूप को	मृडाय	सुख रूप को
नमो नमः	नमस्कार हो	नमो नमः	नमस्कार
प्रबल	बुहुत	प्रमहसि	मायैश्वर्य से
तमसे	तमोगुणवाले	पदे	अतीत स्थान वाले
तत्संहारे	जगत प्रलय वाले	निस्त्रगुण्ये	गुणातीत
हराय	हर रूप को	शिवाय	शिव रूप को
नमो नमः	नमस्कार हो	नमो नमः	नमस्कार

तुचि सृष्टि प्यठ रजोगुण सोस्तिस, भवरूपस चानिस नमस्कार ।
ताकिस प्रलयस प्यठ तमोगुण सोस्तिस, हरह रूपस चानिस नमस्कार ।
ताकिस पालनस प्यठ सतोगुण सोस्तिस, सुख रूपस चानिस नमस्कार ।
सोस्तिस तुर्यारूपस महेश्वरस, कल्याण रूपस चानिस नमस्कार ।

[illegible]

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधा-
द्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ॥ ३६

कृश	विनाश ही	इति	इसी विचार से
परिणति	फलवाला	चकितम	डरे हुये
चेतः	बुद्धिः से	अमन्दी	पटुबुद्धी वाली
क्लेशवश्यं	विक्षेपों का स्थान	कृत्य	करके
क्व	कहां है	मां भक्ति	मुजको भक्ती
इदं	यह	आधात	करान लगी हे
क्वच	कहां	वरद	हे वरदेने वाले
तव	आप को	चरणयोः	चरणों पर
गुणसीम	त्रिगुण से	ते	आप के
उल्लंगिनी	अतीत	वाक्य	तुति मय
शश्वद	अविनाशी	पुष्प	फूलों से
ऋद्धिः	समपदा	उपहारम	पूजा को

हे वरदायक म्याज बुद्ध दुःखन आधीन . खराब फल दिनह वाजिन्य बासान कति नाशि र स्न सापदाइ मोय चेन महिमा , गुमन हुँधव हदवानशि अती आसान । अपि किन सु चमान राज़ पोम ब आम्बुर , मनुन्य भक्ति छ्यम बननावान । चान्यन चरणन पठ ई अस्तोति शकलि , पोशि पूजा छ्यम करनावान ॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३७॥

असित	अञ्जन [सुरमा]	लिखति	लिखेगी
गिरिसमं	पहाडसा	यदि	अगर
स्यात	होगा	गृहीत्वा	पकड कर
कज्जलं	सियाहि	शारदा	सरस्वती
सिन्धुपात्रें	समन्दर दवात	सर्वकालं	हरवखत
सुरतरु	कल्पवृक्ष	तदपि	फिर भी
वरशाखा	उतम टहनी	तव	आप के
लेखनी	कलम	गुणानाम	गुणों के
पत्रं	कागज	ईष	हे सर्वसमर्थ
उर्वी	पृथवी	पारं	पार को
		न याति	न पुहुंचेगी

मुक पहाड आसि युद मीलि रूपी, समन्दर आसिय दवाच रूपी ।
वृक्ष शाख योद आसिय कलम रटिथ, कागज़ बदल आसि योद पृथ्वी
वती रोजि योद सर्व काल लेखान, चाअन गुणन हुन्दिस हदस न वातिय ।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः
प्रथितगुणमहिम्नो ज्ञानकारुण्यमूर्तेः ।
सकलगुणवरेण्यः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतत् चकार ॥ ३८ ॥

असुर	दैत्य	सकल	सब
सुर	देव	गुण	गुणों से
मुनीन्द्रैः	योगियों ने	वरेण्यः	अच्छा
अर्चितस्य	पूजा की हुयी	पुष्पदन्त	पुष्पदन्त
इन्दुमौलेः	शिवजी	अभिधानः	नामवाला
प्रथित	मशहूर	रुचिरः	अच्छे
गुणमहिम्नः	गुणमहिमा	अलघुवृत्तैः	लम्बे छन्दों से
ज्ञान	अनुभव	स्तोत्रं	तुति
कारुण्य	दया के	एतत	यह
मूर्ते	सुरूप वाले	चकार	करने लगा था

असुरव दीवव मुनीश्वरव पूज़मुत सु, शिवनाथ ड्यकस चन्द्रम युस दारवुन । गण्डमति गुण महिमा तस निर्गुण ईश्वर सुन्द, पुष्पदन्तन उत्तम गुणव सो युस आसवुन । जान जान जेठ्यव छन्दव सान ई तोता । करने लजोव तमि स्तोत्र बनोवुन ॥

اسر دیوو منیشرو پوجمت سُہ شوناتھ ڈیکس چندرمہ یُس دارُون
گنڈمتی گن مہما تس نرگن ایشورس سُند پشپدنتن اُتم گنو سُتین یُس آسُون

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेत-
त्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र
प्रचुरतरधनायुःपुत्रवान्कीर्तिमांश्च ॥ ३६ ॥

अहरहर	हर दिन	स	वह
अनवद्यं	अच्छे	भवति	होवेगा
धूर्जटेः	शिवजी का	शिवलोके	शिवलोक में
स्तोत्रं	स्तोत्र	रुद्रतुल्य	शिव जैसा
एतत	यह	तथात्र	वैसा यहां
पठति	पढेगा	प्रचुरतर	बहुत
परम	वडे	धनायुः	धन आयुः
भक्त्या	भक्ती से	पुत्रवान	पुत्र वाला
शुद्धचित्तः	साफ दिल से	कीर्तिमान	यशवाला
पुमानयः	जो पुरुष	च	भी

युस दोहय शुद्धमन वडि भक्ति भावह किज, शिवनाथह सुत्र तोता ई आसिय रान । शिव लोकस मंज शिव समान इह लूकस, आयुवान पुत्रवान धनवान यशवान बनान ॥

یس دوہے شدھ من بڈ بھکتی بھاوکن شیوناتھ ستر توتا یی آسن
شیو لوکس منز شیو سمان ییہ لوکس آیووان پتروان دھنوان یشوان

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं स्नानं योगादिका क्रिया ।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥ ४१

दीक्षा	गुरु का उपदेश	महिम्नस्तव	महिम्नस्तव
दानं	धान करना	पाठस्य	पाठ के
तपः	तप करना	कलां	टुकडे को
तीर्थ स्नान	तीर्थ स्नान	न	न
यागादिका	यज्ञ वगैरा	अर्हन्ति	[illegible]मान है
क्रया	अच्छे काम	शोडशीम	सोलवें

यज्ञ दान धर्म तप होम तीर्थन हुन्द स्नान, इम्यव काम्यव [illegible]ते फल बनान । "महिम्नस्तोत्रुक" पाठ करनह छुतिय, तिमव खोतह [illegible] गुण फल प्राप्त सपदान ॥

[illegible] دھرم تپ ہوم تیرتھن ہند سنان [illegible]
[illegible] ستوترک پاٹھ کرنہ [illegible]

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
॥अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरो परम् ॥ ४१॥

महेशाना	शिवजी से श्रेष्ट	अघोरात	अघोर श्रेष्ट
न	नही	न	न
अपरः	दूसरा	अपरः	दूसरा
देवः	देव हू	मन्त्रः	मन्त्र है
महिम्नः	महिम्नः पारसे	न	नही
न	न	अस्ति	है
अपरः	दूसरा	तत्त्वं	लाभकारक
स्तुतिः	तुता है	गुरोः	गुरु से
		ऽपरम	दूसरा

शिवदीवह सुन्दि खोतह थोद न ब्यई कांह दीव, "महिम्नस्तोत्र" खोतह थूज़ कांह तोता। अघोर मन्त्र खोतह थोद ब्यई न कांह मन्त्र, गोरह [गुरु] सुन्दि तह थोद न ब्यई कांह स्वरूप॥

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषा-
त्स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ॥ ४२

कुसुमदशननाम	पुष्पदन्त था	स	वह
सर्व	सब	खलु	निश्चय करके
गन्धर्व	गन्धर्वों का	निज	अपने
राजः	राजा	महिम्नो	महिम्न से
शशिधर	चन्द्र धारणवाले	भ्रष्टव	गिरा था
वरमौले	मौलपर	रोषात	क्रोध से
देवदवेस्य	[शिवजी] देवों का देव	तवनम इद	यह तव
		अकार्षिद	करने लगा
दासः	दास था	दिव्यदिव्यं	अलौकिक
		महिम्नः	महिम्नः पार

पुष्पदन्त ओस गन्धर्वन हुन्द राजह, शिव नाथह सुन्द ओस दास आसवुन तस्सुन्दि क्रोधह किञ ओस ओहदह निश गियोंमुत, तमि किञ महिम्नस्तव बनोवुन ॥

پُشپدنت اوس گندرون ہُند راجہ شِوناتھہ سُند اوس داس آسُون
تسُند کرودھہ کِن اوس عہدہ نِش گرومُت تمہ کِن مہمن ستوتر بنوون

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेता ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ॥ ४३ ॥

सुरवर	उतम देव	व्रजति	जाता है
मुनि	मनीश्वर को	शिवसमीपं	शिवके नजदीक
पूज्यं	पोजनी है	किन्नरैः	किनर
स्वर्गमोक्षैक	सुर्ग मोक्ष का	तूयमान	तुता करेगे
हेतुं	हेतु है	तवनमिदं	यह तव
पठति	पढेगा	अमोघं	शुदे
यदि	जब	पुष्पदन्त	पुष्पदन्त
मनुष्यः	मनुष	प्रणीतं	कही हुई
प्राञ्जलि	हाथ जोड कर		
नान्यचेता	एकाग्र चितसे		

[illegible]म दीवन मुनीश्वरन युस पूजनी शिव, स्वर्गुक त मूक्षुक हीतो आसवुन ।
[illegible]न्तन वनिमुच ई तोता न डलवुनि, मनह सोस गुलि गण्डिथ आसिययुस
[illegible]न । गछि सुद शि[illegible]नाथस नजदीक किन्नर, तस्सुन्जूय आस[illegible] तिम तोता
[illegible]न ॥

[illegible]

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ॥ ४४ ॥

श्री	शोभावाला	कण्ठस्थितेन	याद की हु
पुष्पदन्त	पुष्पदन्त	पठितेन	पढी हुयी
मुखपङ्कज	मुखकमल से	समाहितेन	ध्यान की हु
निर्गते न	निकली हुयी	सुप्रीनतो	प्रसन्न
स्तोत्रेन	यह तोत्र	भवति	बनता है
किलिषु	पाप	भूतपति	जीवों का स्वा
हरेण	दूर करने वाला	महेशः	ईश्वर
हर	शिव को		
प्रियेण	खुश आने वाली		

श्री पुष्प दन्तह सुन्दि पंपोशि मोखह निशि, द्रामुच ई तोता पापन
शिव नाथस खोश करवुन ई तोता, युस याद करि परि ध्यान आसि द
वमिस प्यठ सपदान प्रसन्न पानह शिवनाथ, जांवन हुन्द स्वामी युस आ

...پُھ دنتہ سندی پمپوشہ موکھہ نشہ دراپیچ یہی توتا پاپن گالان...
...خوش کروُنی یہی توتا یُس یاد کری پری دھیان آسی داران...
...کرو رعت پیٹھ یانہ شیوناتھ جیون ہند سوامی یُس...

आशयि च्यानि आस छुख च भवभय हरः
 शंकरः ईतनै चि आरम्योनुय ।
चूय वन्तू कुस छुम यमि कटिनि भवसरः
 चिय रुस्त यस चालि भार म्योनुय ।। १ ।।
छान्ढान छान्ढान गूय म्य जन्मादिक
 चिय पतः पतः करसना च सुथि म्य पिख ।
रठहत भ नालमति अनहत चूय भ अरः
 शंकरः ईतनै चि आर म्योनूय ।। २ ।।
वुछथूय थप दिम्य दामनस रटये चि खोर
 पकनः किन्ह दिमहय न कुनीचि ओरयोर ।
त्रन्हैः शंकरः दोरिरः चोन किथ भ जरः
 शंकरः ईतनै० ।। ३ ।।
यचकाल वोतुम हृदयस म्य अरमान
 कर हावक म्य आरतीस पनुन पान ।
मुख वुछन बापत अछि लजमच म्य दरः
 शंकरः ईतनै० ।। ४ ।।
क्या गछिय कम चि शंकरः च यद बोजख
 अकिस्यूय त्तनस सन्मुख म्य रोजख ।
त्यलि भोज चलनम जन्मन हन्दि अरःसरः
 शंकरः ईतनै० ।। ५ ।।
मेकसन खभर हिन्य युद छु चोन व्यवहार
 दुःखियन दुःख दार करुणा चोन कार ।
त्यली कुनः इवान शंकर- छुख च म्योन घरः
 शंकरः ।। ६ ।।
मज्ञ वति शंकरः मेकस भ प्योमुत
 च्यानि यिनः भापत भ तारा गोमुत ।
यित जल मुख म्य हाव नतः चि रुस्त गोमुत भ भरः
 शंकरः ईतनै८ ।। ७ ।।

श्रीत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः ।
अर्पिता तेन मे देवः प्रीयतां च सदाशिवः ॥ ४५

इत्येषा	यह	अर्पिता	अर्पन की
वङ्मयी	वानी रूपी	तेन	जिस से
पूजा	पूजा	मे	मुजे
श्री	शूभायमान	देवः	देव
च्छङ्कर	शङ्कर	प्रीयतां च	प्रसन्न बने
पादयो	दो पादों	सदाशिवः	इश्वर [illegible]शी

श्री [illegible] [illegible]णी रूप ई पूजा शूभाइमानस, शङ्करस पादन प्यठ ब अर्पण करा
शिव [illegible] [illegible] किज सदाशिव बनितन म्य प्यठ प्रसन्न, यूतुय योत छुस [illegible] त[illegible]
वमिर[illegible] [illegible]न ॥

[illegible]یٔ پوجا شوبھایمانس شنکرس پادن پیٹھ بہ اَپرن کران [illegible]
[illegible] شومہ پیٹھ بنتن پرسن یوتی یت چھس بہ تس شوس شکی دارن [illegible]



D. N. K

निवेदन

ी ीयालाल जी सराफ जिनहों ने कश्मीर देश में सब से प्रथम षा में संस्कृत पुस्तकों का अर्थ बनाकर भजन कीर्तन पाठ रंभ करके प्रवर्तन में लाया उन्ही के प्रधानता में श्री भवानी २००० प्रति शनिवार रात को हारीपर्वत के स्थान पर भजन ोजा पाठ करती रहती है

वानी मण्डली ने लोगों के उपकार के लिये महिम्नःपार था कश्मीरी भाषा में अर्थ पदार्थ सहित छपाने का प्रयतन किया श्मीरी भाषा में महिम्नःपार हर घर में पोंचे श्रीमान सराफ ने ली के मुत्त है सुविकार करके मण्डली को २००० कापी कापी ा अधिकार धिया ताकि मण्डली इस की आमदनी धार्मिक रच करें

ा है तमाम नर नारी हमारी मिहनथ से लाभ उठाये और नःस्तोत्र के खरदने में मण्डली की सहायता करे।

श्री भवानी मण्डली



पुस्तकें जो छप चुकी हैं और श्री मत्र नीमण्डली में मिल सकती

१. पञ्चस्तवे कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित मूल्य
२. दुर्गासप्तपति अध्याय ४ कश्मीरी भाषा में अर्थ सहित
३. भजगोविन्दम् ,, ,,
४. [अतिभीषन] शिवचामरस्तोत्र ,,
५. व्याप्तचराचर ,, ,,
६. जयनारायण तथा विष्णुचामर ,,
७. गौरीस्तुति ,, ,,
८. सङ्कहस्तोत्र [उत्पलतोत्र में से] ,,
९. भजन माला पहला भाग दूसरा भाग ,,
१०. महिम्नःस्तोत्र ,, ,,

Press, 3rd: Bridge, Srinagar.



भावपोश

सम्पादक

अनुरोध पर ही हम...
स्तोत्र आदि भी सम्मिलित ...
आरम्भ से अन्त तक नवीन आका...
है कि प्रकाशन प्रतीक्ष्य जनता इस नवीन...
...ान्वित होगी।

हम प्रोफेसर मखनलाल कुकिलू के आभा...
प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन में हमारा पूरा हाथ...
श्रद्धालु भक्तजनों की देर की इच्छा को पूर्ण किया। उ...
सारे बहुत से भक्ति स्तोत्रों का, जो इस संस्करण में...

प्रकाशित हुए हैं, कश्मीरी भाषा में पद्यानुवाद किया तथा कुछेक अपनी ही लिखी हुई कश्मीरी रचनायें तथा हिन्दी में आरती माता की लिख कर हमारा बडा उपकार किया। उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

हम अपनी मण्डली के ही सदस्य, महान भक्त श्री जानकीनाथ त्रिछल के आभारी है जिन्होंने प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन के लिए उचित आर्थिक सहायता देकर हमारा उत्साह बढाया।

अन्त में ओकाज प्रेस तथा उनके मैनेजर श्री प्रेमनाथ जी को धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य हैं जिनके सहयोग से इस पुस्तक के प्रकाशन में शीघ्रता हुई।

प्रबन्धक
गणेश मन्दिर
प्रभात मण्डली,
हारी पर्वत, श्रीनगर।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
सं० २०४०



ओकाज प्रेस, श्रीनगर,

१-६-१९८३

ॐ

श्री गणेशाय नमः ।

गौरी-पुत्रं त्रिनेत्रं गजमुख सहितं नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्ष सर्वभक्षं सकलजनप्रियं सर्वगन्धर्व
सम्पूर्णं [illegible]लचन्द्रं वरदं अतिबलं हन्तु
हेरम्बं आदिदेवं गणपतिं अमलं सिद्धिदातारं ईड ॥

२

लाक्षासिन्दूरवर्णं सुरवरनमितं मोदकैः मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं हिमकरसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम् ।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशुधरं आखुसिंहासनस्थं
गांगेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुर-वधकरं [illegible]भक्ष नमा[illegible]

३

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय [illegible]
नमः ईश्वरपुत्राय श्रीगणे[illegible] नमो नमः [illegible]

माता यस्य उमा देवी पिता यस्य महेश्वरः [illegible]
मूषको वाहनं यस्य स न. प. [illegible]धिपः ॥

५

सिन्दूर कुंकम हुताशन विद्[illegible]
[illegible] दाडिम निभाय [illegible]र्भुजाय
हेरम्ब भैरव गणेश्वर नायकाय
[illegible] सिद्धि फलदाय श्रीमहागण[illegible]

प्रकाशित हुए हैं, कश्मीरी भाषा में पद्यानुवाद किया तथा कुछेक अपनी ही लिखी हुई कश्मीरी रचनायें तथा हिन्दी में आरती माता की लिख कर हमारा बड़ा उपकार किया। उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं।

हम अपनी मण्डली के ही सदस्य, महान भक्त श्री जानकीनाथ त्रिछल के आभारी है जिन्होंने प्रस्तुत संस्करण के प्रकाशन के लिए उचित आर्थिक सहायता देकर हमारा उत्साह बढाया।

अन्त में श्रीकाज़ प्रेस तथा उनके मैनेजर श्री प्रेमनाथ जी को धन्यवाद देना हमारा कर्तव्य हैं जिनके सहयोग से इस पुस्तक के प्रकाशन में शीघ्रता हुई।

प्रबन्धक
गणेश मन्दिर
प्रभात मण्डली,
हारी पर्वत, श्रीनगर।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी
सं० २०४०



श्रीकाज़ प्रेस, श्रीनगर,

१-६-१९८३

Press, ...

ॐ

श्री गणेशाय नमः ।

गौरी-पुत्रं त्रिनेत्रं गजमुख सहितं नागयज्ञोपवीतं
पद्माक्षं सर्वभक्षं सकलजनप्रियं सर्वगन्धर्व पूज्यं ।
सम्पूर्णं बालचन्द्रं वरदं अतिबलं हन्तृकं चासुराणां
हेरम्बं आदिदेवं गणपतिं अमलं सिद्धिदातारं ईडे ॥

२

लाक्षासिन्दूरवर्णं सुरवरनमितं मोदकैः मोदितास्यं
हस्ते दन्तं ददानं हिमकरसदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम् ।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वरपरशुधरं साखुसिंहासनस्थं
गांगेयं रौद्रमूर्तिं त्रिपुर-वधकरं [illegible] नमामि

३

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्तधराय [illegible]
नमः ईश्वरपुत्राय श्रीगणे[illegible] नमो नमः

४

माता यस्य उमा देवी पिता यस्य महेश्वरः ।
मूषको वाहनं यस्य स न[illegible] [illegible]पि[illegible]तः ॥

५

सिन्दूर कुंकुम हुताशन विद्रु[illegible]
[illegible] दाडिम निभाय चतुर्भुजाय
हेरम्ब भैरव गणेश्वर नायकाय
[illegible] सिद्धि फलदाय श्रीमहागणा[illegible]

६

सुमुखः चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो विनायकः ॥
धूम्रकेतुः गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि गणेशस्य समाहितः ॥
यः पठत् तु [illegible]नि स लभेत् सिद्धि उत्तमाम् ॥

१

युस पुत्र उमाय हुन्द, यस छु नाग योन्यी
गजमुख शूभवुन युस त्रिनेत्रवान् ।
सर्वसँहार - कस दीव यस छि पूजान
पम्पोश नेत्रवान युस छु म्योन प्राण ।
बालचन्द्रम डचकस युस छु वरदायक
बलवान युस छु असुरन गालान ।
सिद्धिदाता तस श्री महागणेशस
आदि दीवस छस अस्तति करान ॥

४

मग्रज्य यस ध्यकवमन्य पार्वती माता
मोल यस पूज़नीय श्री महादेव ।
युस बिहिथ गगरस प्यठ छुय सुखसान
सुय महागणेश [illegible] कारतन [illegible]ण ॥

५

मंगस त सूर्यस नारस त दम्रनस
स्येन्दरि त कुंगस ह्योह प्रज़लान ।
वुज़लि[illegible] कमलस. ह्योह युस छु वुज़लान
सारिन्यो प्रयोजनन युस स्यद करान ।
तस गणीश्वरस अज़ सर्वदीव नायकस
गुल्य गन्डिथ दास छुस ब व्यनती करान ॥

६

शूभवोन मुख यस, एकदन्त धारक
काचुर रँग यस, यस छि हम्रस्य कन ।
यस वनान विघ्नराज, दीवन हुन्द प्रधान,
लम्बोदर युस छु भीमरूपवान ।
गजमुख यस ड़्यकि च[illegible]रम शूभान
गणन हन्दिस ज़िठिस धूम्रकेतु वनान ।
सावधान मनकिन्य रोज़ि [illegible]लमान प[illegible]न
बाहभाव गणीशिन्य युस भक्तिमान ।
पान महादीवन करिमहय यिम बयान
तस [illegible] थज [illegible] छि डोलान ॥

[illegible]मुप[illegible]

ब्रह्मेन्द्ररुद्र हं[illegible] सहस्ररश्मि:
[illegible]कदन्त [illegible]द्विपानन हुताशन [illegible]ायै ।
वागीश्वरि ! त्रिभुवनेश्वरि ! विश्वमात: ।
अन्तर्बहिश्च कृतसंस्थितये नमस्ते ॥

२

यस्या: प्रभावमतुलं भगवान अनन्तो
ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिल जगत परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मतिं करोतु॥

३

देवि! त्र्यम्बकपत्नि! पार्वति! सति! त्रैलोक्यमातः! शिवे!
शर्वाणि! त्रिपुरे! मृडानि! वरदे! रुद्राणि! कात्यायनि!।
भीमे! भैरवि! चण्डि! शर्वरि! कले! कालक्षये! शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतानऽनन्य मनसः पर्याकुलान्पाहिनः॥

४

त्वद्रूपैकनिरूपणप्रणयिताबन्धो दृशोस्त्वद्गुण
ग्रामाकर्णनरागिताश्रवणयोस्त्वत्संस्मृतिः चेतसि।
त्वत्पादार्चनचातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनंवाचिमे
कुत्रापि त्वदुपासनव्यसनिता मे देवि! मा शाम्यतु॥

देवि! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृतस्तं नमन्ति
आजन्म स्फुरदङ्घ्रिपीठविलुठत्कोटीरकोटिच्छटाः।
यस्त्वामर्चति सोऽर्च्यते सुरगणैः यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्तिविधुराः ध्यायन्ति वामभ्रुवः॥

६

लक्ष्मीवशीकरणचूर्ण सहोदराणि
त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि॥

७

किं किं दुःखं दनुजदलिनि ! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायां !
का का सिद्धिः सुरवरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिन्वते चित्तमालम्बितायाम् ॥

८

न मन्त्रं नो तन्त्रं तदपि च न जानेस्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिः कथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥

९

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे
कुपु[illegible] जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥

१०

रे मूढ़ाः किमयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्य[illegible]
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्तीक्रियन्ते [illegible]।
भक्तिः चेत् अविनाशिनी भगवती पादद्वयी [illegible]यतां
उन्निद्र[illegible]बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति ॥

११

मूढोऽस्मि दुःखकलितोऽस्मि जरादि दोष-
भीतोऽस्मि शक्तिरहितोऽस्मि [illegible]ताऽस्मि।
शम्भो ! तथा कलय शीघ्र[illegible]
[illegible]तमा धुरमपोज्झित दुःखमा[illegible]

१२

ददाति [illegible]टान्भोगान् क्षपयति [illegible]

दहत्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठाद्दन्तर्दुःखं दलयति विनष्टीष्ट विरहं
सकृत् ध्याता देवी किमिव निरवद्यं नकुरुते॥

१३

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःख भयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय दयार्द्रचित्ता॥

१४

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यत्गतं।
त्वया तत् क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि!॥

१५

...तापशमनी जपान्मृत्यु विनाशिनी।
पू...जता दुःखदौर्भाग्य हरा त्रिपुर सुन्दरी॥

१

... त्रिपुर सुन्दरी जगत माता
...री छस आसवअन्य चअय
...इन्द्र सूय चन्द्रम कुमार
...ा छी पूजान चेय
अ... ...बरअ वअतिथ त्र्यभुवनस सअरिसिथ
गुल्य ग...डथ म्योन प्रणाम असिनय चेय।

२

यस्यि सुन्द... छुय हदरुछ आसवुन
भगवान... शेषनाग छिनअ वनिथ ह्यकान
ब्रह्मा त... ...र तिम ति छिय हअरिथ
चानि ... महिमा न जानान।
... अछतन म्य

युसग्र सग्ररिसग्रय जंगतस छि पालान
दीतन म्यग्र तिछ बुद्ध यहय जगत माता
यम्यसग्रत्य ग्रशुभ भय छि नष्ट सपदान
ग्रासय शरण च्यग्र पादन विनयि किनि नमिग्रथग्रय
व्याकुलतायि मंज माता रछतम चग्रय
व्याकुलतायि मंज बुद्धि ग्रापदायि मंज
ग्रहपीडायि मंज ... माता रछ तम चग्रय।

३

हे दीवी छख चग्र त्र्यम्बक पत्नी
चग्रय वनान सती च्यय ... वंती।
त्रैलोकी हग्रन्जग्र माता भगवती,
चग्रय वर दिवान छख चग्रय मृडानी
चग्रय त्रिपोर सुन्दरी. चग्रय रुद्राणी
चग्रय भयानक रूप चग्रय शरवरी
चग्रय चण्डी छख चग्रय त्रिशूलधारी
काली चग्रय कालस नाश करान
ग्रस्य हय ग्रामत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बनिथ
छुस प्यवान च्यय पादन तल परन
ग्रासय शरण०

४

हे दीवी च्यानि दर्शनुक म्यग्र ग्रभिलाष
ग्रथ विज्य नेत्रन मंज म्यग्र रूजितन
चग्रन्य गुण बोजनुक तमनाह म्यग्र शरत्यतन
ग्रथ विज्य रूजितन म्यान्यन कनन।
चोन नाम स्मरण च्यतस मंजम्य गरि गरि
चग्रन्य पादि पूजा म्यान्यन ग्रथन।
चग्रन्य ... स्वन्य रूजितन म्यग्र वग्रन्यो
... उपासना चग्रन्य मतग्र कम म्यग्र गछि॥
ग्रस्य ... ग्रामत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बनिथ
प्यवान०

५

युस पुरुष अकि लटि करि च्यय कुन प्रणाम
तसन्ज़ि खावि प्यठ छु इन्द्राज़ नमान
युस पुरुष करान आसि माता चअन्यि पूज़ा
पूज़ान तस छि समुरीय दीवता
युस पुरुष करान आसि माता चअन्यी तुता
तअम्यि सअन्ज़ अस्तुति छि दीवता करान
युस पुरुष करान आ[illegible] नुय ध्यान
स्वर्गचि अछरछ तस छि सुमरान
अस्य हय आमत्य बनिथ एकाग्र च्यथ बनिथ ।।

छुस प्यवान०

६

मअज्य भवअन्यी लक्ष्मी वश करनस प्यठ
पादअच गर्द हय चअन्य ताकत सुअस ।
चान्ये प्रणाम विज़िय लगि यिमन ललाटस
पादअच गर्द हय चअन्य बअड़ शान [illegible]स ।
स्वय पादअच गर्द गालि [illegible]र अच्छर तस
जगतस मंज बनी सु जयकार सुअस ।।
[illegible] हय आमत्य बनिथ एकाग्र च्य०।।

७

[illegible] [illegible]ना दुःख छि तिम ही दुःखन [illegible]
यिम गलन न चान्ये सुमर[illegible]
[illegible] छि [illegible]मी युस स्वलस छि [illegible]
[illegible] न बन्यि चान्ये तो त[illegible]
[illegible] [illegible] छि स्यद्धी ही सिद्धिदात्री[illegible]
युस न प्राप्त सपदि चान्[illegible]
कम [illegible] छि तिम युग ही जगत [illegible]
यिम न स्यद [illegible]नन स्य [illegible]
[illegible]त्य बनिथ०

८

मन्त्र तग्र तन्त्र छुस न कैंह ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चोन महिमा।
आराधना तग्र ध्यान छुस न कैंहति ज़ानान
ज़ानान छुस न माता चग्रन्यी तुता।
मुद्रायि चान्यि छुस न माता कैंहति ज़ानान
आर हुत वदुन ति छुस न माता ज़ानान।
कीवल ब माता यूतय छुस ज़ानान।

दुःख पकिथ च्यय पत पत दूर सपदान।
कु पुत्र छु जगतस मंज हय पग्रदग्र सपदान।
माता कुमाता ज़ांह ति छग्रनग्र बनान॥
ग्रस्य हय ग्रामत्य बनिथ ०

९

ही माता चान्यन चरनण हग्रज़ सीवा
न कग्ररम पथकुन न ग्वुन्य क्यन करान।
च्यानि बापथ खर्च काँह करुम न ग्रज़ ताम
न वुन्य क्यन च्यय पथ छुस बग्र खचान।
बेहद म्यानि लोल किन्य स्वय माता
तोति गरि गरि छम ग्रथ रुट करान।
कुपुत्र छि जगतस मंज ०

०

... पह क्यानि छुख बे फग्रयदग्र सपदिथ पनुनिस शरीरस
तक... ...दिवान
यज्ञ किन्य दान किन्य वजि दक्षिण...
...यंज लुख घरग्र पनुन खग्रलो करान
...छ शरण चग्र माजि शारिका...
हय र...न ...सग्रनज़ग्रय पादि सीवा।
...मोठ ...पद ...वुनत्यमग्रत्य पग्योश तग्रव स्य...
ओंठ ...फु छय दोरान॥
ग्रसि हय ग्रामत्य ०

११

मूढ छुस बम्र दुखवम्रय सम्रत्यन बरिथ छुस
बुजरम्रकि दूष किन्य खोचान छुस।
सामर्थ्य रुस छुस न्यर्बल त कीवल
आसरस चम्रनिस थफ करिथ छुस।
हे शम्भो कर त्युथ युथ ब सुख सान
उपायन थप करिथ राज हम्र न बम्र
[illegible]
जल थम्रज पदवी लभहम्र बम्र॥

१२

मतलब छख दिवान दुश्मनन गालान
आपदायन छख नाशम्र करान।
मन बयन रूगन माता चम्र गालान
दीह चयन व्यम्रज़न शुमरावान।
संसारम्रच्य यिम सुख संपदायि बजिय
माता तिमन छय व्यस्तारान।
अन्दरिम दुख त दम्रद्य ज़ीवस चम्र गालान
यिम हय अकि लटि माता नाव च्योन ग्रान॥
यिम हय अकि लटि माता नाव च्योन ग्रान
तिम कसव सना पापन [illegible] छि मुकलान
यिम सदा [illegible] कुन [illegible] गंडिथ छि ज़ान॥
[illegible]य। श्रीमत्य ०॥

१३

[illegible] जावम
यानि [illegible]रम्रनि [illegible]
[illegible]यन छुय नाश सपदान
[illegible] करन माता [illegible]न स्मरण
[illegible]हद [illegible] कुद तिमन चम्र व[illegible]खचान।
[illegible] कोठिनी दुख त दम्रद्य
[illegible] कुस [illegible] छुम म्यम्र [illegible]र [illegible]
[illegible]न [illegible]
[illegible]त्य बनि

उपकार छख करान तिमन सारिनी ज़ीवन
यिम सदा च्यअ कुन गुल्य गंडिथ छि रोज़ान ॥
असि हय आमत्य बनिथ ०।

१४

मन्त्रहीन असिथ क्रियाहीन असिथ
व्यधिहीन असिथ यि कैंछा परुम ।
शुन्य हय तथ सअरिसय ही परमीश्वरी
कृपायि किन्य म्यअ अरतिस माता बखछुम ॥
अस्य हय आमत्य बनिथ ०

१५

दर्शन किन्य छख पापन गालान
जप किन्य कालभय नाश करान ।
युस भक्त पूज़ी चि लोलसान माता
दु:ख त कअठच अच्छर ललाटक्य दूर तसगछान ॥

हेमजासुतं भजे गणेश ईशनन्दनम्
एकदन्त वक्रतुण्ड नाग यज्ञ सूत्रकम् ।
रक्तगात्र नेत्र शुक्ल वस्त्र मण्डितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥

२

पाशपाणि चक्रपाणि मूषकाधिरोहिणम्
अग्निकोटि सूर्यज्योति वज्रकोटि निर्मलम्
चित्रमाल रत्नजाल भालचन्द्र शोभितम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥

३

विश्ववीर्य विश्वसूर्य विश्वकर्म निर्मलम्
विश्वहर्ता विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् ।
चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥

४

भूत भव्य हव्य कव्य भव भार्गव अर्चितम्
देव वह्नि कालजाल लोकपाल वन्दितम् ।
पूर्ण ब्रह्म सूर्य वरुण पौरुषं पुरान्तकम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥

५

ऋद्धि बुद्धि अष्टसिद्धि नवनिदान दायकम्
यज्ञ कर्म सर्व धर्म वरुण अरुण अर्चितम् ।
भुक्ति मुक्ति तुष्टि पुष्टि दायकं विनायकम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥
नमोस्तुते गणेश्वरं नमोस्तुते लम्बोदरम्
कल्पवृक्ष भक्तरक्ष नमोस्तुते गजाननम् ॥

१

विषभय विनाशं दुःखदारिद्रय नाशम् ।
सकलसुखविकासं श्री महागणेशं नमामि ॥

२

महागणपतिं देवं महासत्यं महाबलं ।
महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये ॥

आशापाश क्लेश विनाशं विदधानां
पादाम्भोज ध्यान पराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीं ईशाङ्गार्धहरां तां तनुमध्यां
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीं अहं ईडे ॥

नित्य: सत्यो निष्कल एको जगदीश:
साक्षी यस्या: सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राण क्रीडन शीलां शिवपत्नीम्
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षीं अहं ईडे ॥

प्रात:काले भावविशुद्धि विदधानो
भक्त्या नित्यं जल्पति गौरी दशकं य: ।
वाचां सिद्धि सम्पत्तं उच्चै: शिवभक्तिं
तस्य अवश्यं पर्वत पुत्री विदधाति ॥

पुरुहूतप्रिया कान्ता कामिनी पद्मलोचना ।
प्रह्लादिनी महामाता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ॥

२

अघोर व्याधिनाशी च घोरदु:खनिवारिणी ।
अष्टादशभुजा दुर्गा शारिका श्यामसुन्दरी ॥

३

निर्गुणे ! निष्कले ! नित्ये ! सच्चिदानन्द रूपिणि !
नमोस्तुते महाराज्ञि ! पाहिमाम् शरणागतम् ॥

४

ज्वालामुखि ! महाज्वाले ! ज्वाले ! पिंगललोचने !
ज्वालातेजे ! महातेजे ! ज्वालामुखि ! नमोस्तुते ॥

५

शारदे ! वरदे ! देवि ! मोक्षदात्रि ! सरस्वति !
नमस्तुभ्यं नमस्तभ्यं नमस्तुभ्यं नमोनम: ॥

६

श्री शारिके ! शरण्ये ! त्वं मयि दासे दयां कुरु ।
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाशय सत्वरम् ॥

७

प्रणतोस्मि महादेव ! प्रपन्नोस्मि सदाशिव ! ।
निवारय महामृत्युं मृत्युंजय ! नमोस्तुते ॥

८

हर ! शम्भो ! महादेव ! विश्वेश ! अमरवल्लभ ! ।
शिव ! शंकर ! सर्वात्मन् ! नीलकंठ ! नमोस्तुते ॥

९

गौरीपति ! विरूपाक्ष ! शरणागत वत्सल ! ।
निवारय महामृत्यु मृत्युंजय ! नमोस्तुते ॥

१०

नमो नमो गजेन्द्राय एकदन्त धराय च ।
नमःईश्वर पुत्राय श्रीगणेशाय नमो नमः ॥

११

सर्व मंगल मंगल्ये ! शिवे ! सर्वार्थ साधिके ! ।
शरण्ये ! त्र्यम्बके ! गौरि ! नारायणि ! नमोस्तुते ॥

१२

महाबले ! महोत्साहे ! महाभय विनाशिनि ! ।
[illegible]हि मां देवि ! दुष्प्रेक्ष्ये ! शत्रूणां भयवर्द्धिनि ! ॥

१३

अचिन्त्यरूप चरिते ! सर्वशत्रु विनाशिनि !।
रूपं देहि जयँ देहि यशो देहि द्वषो जहि ॥

श्रीराजराजेश्वरी आमत्य शरण च्यय छी
पूजाय लागोय पंपोश गुलाब ादल तही।
गौरीं अम्बां अम्बुरुहाक्षी अहं ईडे ॥

१

जगत् अम्बा च्यय छख वदनस मज़ असनाव
निष्बुद्ध छुस बय म्यश्र प्यठ दयाय हुंद दामन त्राव
कल्याण सुस्तय थाव समत्य शुर्यन बडचन च्यय
श्री राज राजेश्व०

२

स्वद्ध छमन वातान च्यन्यन [illegible] कम [illegible] छी
कामीश्वरी मनकामनायन [illegible] मंगान छी
यछि चानि असि आय [illegible] भरान छी
श्री राज राजेश्वरी०

महामाया च [illegible] चठ [illegible]
[illegible] चुलमुल छुय गृहस्थ काल [illegible]
लछियसत्य सग्नरी पनन्यन [illegible]
श्री राज [illegible]श्वरी०

४

वाहन [illegible] अश्चन च्यन्यन हुन्द [illegible]
चरण [illegible] छी करान [illegible]
[illegible] गर्ं समत्य [illegible] मुक [illegible] जरण छी।
श्री राज राजेश्व[illegible]

५

लूकालुकन ह्यथ सतजन कारण दोदगण
सिहासनस च्यग्निस छि दिवान निथ प्रदिक्षण
परमधामग्रक्य पुरुष च्यग्र ध्यवान परन छी।
श्री राज राजेश्वरी ०

६

प्रसाद कर गाल जन्मादि जन्मन [illegible] अपराध
सब्ज़ रंगय जलय म्ज हाव पंपोश पाद
[illegible]र्भातम स्वरान यथ भवसरस तरान छी
श्री राज राजीश्वरी ०।

७

पननिन भक्तिन दासन [illegible] दास
तिह [illegible] पासय कुकर्मन [illegible]
ज्योत [illegible]रूप हाव [illegible]
श्री राज राजीश्वरी।

८

[illegible] चवुंन नेरान
तीर अच छि [illegible] यि [illegible]ग्रयं च्यन[illegible]तन
यूगी [illegible] अपनी सुय ध्यान चोनुय आरान
श्री राज राजेश्वरी० ॥

१

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरापराऽपरमयी माताकुमारीत्यसि ॥

२

खड्गं चक्र गदेषु चाप परिघान्शूलं भुशण्डीं शिरः
शंखं संदधती करैस्त्रिनयनां सर्वांगभूषावृतां।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभं
नीलाश्म द्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥

३

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माहिषोन्मूलिना
या धूम्रेक्षण चण्ड मुण्ड मथिनी या रक्तबीजाशनी।
शक्तिः शुम्भनिशुम्भ दैत्य दलिनी या सिद्धलक्ष्मीः परा
सा काली नवकोटि मूर्ति सहिता मां पातु माहेश्वरी ॥

४

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥

५

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवी [illegible]श्वरी
दीनानाथकृपावती स्वजननी भक्तानुरक्ता सती।
ॐकाराक्षरवासिनी सुरनुता सर्वेश्वरी सर्व[illegible]
भूयात् नो वरदा स[illegible] [illegible]भय[illegible] [illegible]श्वरी कामदा।

६

सौन्दर्यविभ्रमभुवो भुवनाधिपत्य
सम्पत्तिकल्पतरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकरावबोध
पूर्णेन्दवस्त्वयि जगज्जननि ! प्रणामाः ॥

७

लक्ष्मीवशीकरण चूर्ण सहोदराणि
त्वत्पादपंकज रजांसि चिरं जयन्ति ।
यानि प्रणाममिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि ॥

क्षण सग्रय मंज़ दुःख त संकट
दूर करतय च़ग्र म्यग्रन्यो ।
ॐ श्रीमत ही भग्रवग्रनी छय म्यग्र आशा चग्र
छय म्यग्र आशा बग्रड़ वुमेदा
छय मि आशा च़ग्रन्यो
क्षणसग्रय मंज़ दुःख त संकट
दूर करतय च़ग्र सग्रन्यो ॥
छय चयग्र ग्रदीहि भुज़ भवग्रनी
[illegible] सग्रहस्प प्यठ चयय सवार
ग्रन्धि [illegible] दीवता सग्ररी
[illegible]छी करान च्यय ज़ार पार
[illegible]टसिद्धी ग्राधीन छय
पाद च्यग्रन्य न्यथ छलग्रन्यी ॥ क्षणसय०

२

[illegible]सतये छ्यय चन्द्रम छी प्राराण चयय हुकम
कार करि मग्रज भवग्रन्य ग्राशा प्रकाश [illegible]न्यि [illegible]
च्यानि प्रकाश किन्य छु सन्तुष्ट
त्रिभुवन रोजग्रनी [illegible]ण०

३

यलि्य इन्द्राज़ ब्यायि दीव अ्न्य
तंग महिषासुर नय
इन्द्राज़ आ्येय च्यय शरनय
पादन च्यअ़ प्युय परअ्नय।
पत पत तस़ दिवता आयि
फक हअ्रतय तअ़ दोरअ्न्यी।
क्षण सग्रय० ॥

४

बूजिथ तिहुंद हाल सोरुय
अद महिषासुर सअ्रय
बातनोवथन पाताल यलि्य
ज़ीर दिचथस खुरसअ्रय
मुकलअ्व्यथक दीव भय निश
करथक म्यिहरबअ्न्यो। क्ष०

५

ॐ शब्द छख सर्वशक्तिमान
महामाया च्यय बनान
काम क्रूध लूभ मूह तअ़ अन्धकार
भक्त्यन छख चय कासान
चअ्न्यी भक्त शिव शक्ति रूप
ध्यान चोन धारअ्न्यी। क्षण०

६

बोजा[illegible] छख [illegible]विनती म[illegible]ज़्य
[illegible] च्योनुय छु द[illegible]बार
च[illegible]ानि हुकुमअ़ [illegible] सारि [illegible]
[illegible]छुय चलान अद कार बार।

(1) ॐ अकृथ अक्षर परम सुथ हैं माहिय
रहम वृन्दस ~~सुख~~ ~~है~~ मज सुथ है
माहि कन्ये प्यठ गारूमत गरूम
अस्स सासा सय द्विस सुन्न,

(2) ॐ आहत ॐ सुरूम ॐ ठहरेय
पनुनुय पान अंन्यार त्रविथ
नति नासोम तवय ग्रोवुम प्रथ
सथान,

(3) ॐ हुय वुथ - पथ ॐ हु सरून
ॐ हुय वुय दीशा सरून अहु
ॐ परून ॐ सरून ॐ सीथक
जनी जान,

(4)

३

यलिय इन्द्राज़ ब्यथि दीव अन्य
तंग महिषासुर नय
इन्द्राज़ ओय च्यय शरनय
पादन च्यअ प्युय परअनय।
पत पत तअ दिवता आयि
फक हअत्य तअ दोरअन्यी।
क्षण सगग० ।।

४

बूजिथ तिहुंद हाल सोरुय
अद महिषासुर सअय
बातनोवथन पाताल यलिय
जीर दिचथस खुरसअय
मुकलअव्यथक दीव भय निश
करथक म्यिहरबअन्यो। क्ष०

५

ॐ शब्द छख सर्वशक्तिमान
महामाया च्यय बनान
काम क्रूध लूभ मूह तअ अन्धकार
भक्त्यन छख चय कासान
चअन्यी भक्त शिव शक्ति रूप
ध्यान चोन धारअन्यी। क्षण०

६

बोजा... ...विनती मअजय
...[illegible] च्योनुय छु दरबार
च...नि हुकुमअ ...अत्य सारि आनुक
...छुय चलान अद कार बार।

(4) ॐ कार शरीर कीवहजु नुम रंग
रूप रस गन्धित आहुम स [illegible] सु
पानघज़ नुम परूनतिध दुरूम
शोरूपठ

(5) अकु ॐ कार घुस नाभि परे
भ्रमाउस समुंध दरे एकुय मनत
घुस परपर करे सध्य सासा मनत्र
वध्याज़न करे

6 अकुथ ॐ कार पहिलय अनुम
बुही वरूप पनुन प्रान शुद्धि
कुत तओविथ सुध मार्ग रटुम
तती लल ब वचसा प्रथम स्थान

(7) धाम धाम ॐकार प्रान ब्रुम
पानथ परान त पान बुज़ान
सुंहम पदस अंहम गु लुम
तती लह बं वउग सिस प्रकाशा
स्थान

(1) ॐ अकुय अक्षर परम सुय है माहिय रद्दम वुन्दस ~~सुयहै~~ मज सुय है माहि कन्ये प्यठ गरूमत वरूम असस सासा सपदिस सुन्न,

(2) ॐ आहत ॐ सुरूम ॐ ठहरेय पनुनुय पान अन्यार त्रविथ नति बासोम तवय शोबुम प्रय सथान,

(3) ॐ हुय वुय - पथ ॐ हु सरू ॐ हुय वुय दीशा सरून ॐ ॐ पसून ॐ सरून ॐ सीयव जनी जान,

(4)

अस्यिति आमत्य अर्ज करन्ये
दोरान तअ लारअनी । क्षण०

७

माता बोज़तम छम म्यअ हाजथ
बअड़ भक्ती चअन्यी
गरि गरि रोज़तम म्यअ सन्मुख
हृदयस मन्ज़ भअवअन्यी
सरस्वती हुंद प्रसाद युथ म्यि बनि
तेरयमं अमृत वअनी । क्षण०

भक्तानुग्रहकारिणी भगवती देवाधि०

२

अजानन्तो यान्ति क्षयं अवश्यं अन्योन्य कलहैः
अमी माय ग्रन्थौ तवपरिलुठन्तः समयिनः ।
जगत्मातर्जन्म ज्वरभयतमः कौमुदि ! वयं
[illegible]मस्ते कुर्वाणाः शरणं उपयामो भगवतीम् ॥

३

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरोसद्म गृहिणी
वपुः [illegible] मित्रम धन[illegible]यदा मां विजहति ।
तदा मे [illegible] [illegible]पदि भयमोहान्धतमसां
महाज्यो[illegible] मातर्भव [illegible]णया सन्निधिकरी ॥

४

[illegible]

मअ[illegible] पर[illegible] ब छुस [illegible]अनिस [illegible]रस

दिलक्य मुशकिल भम्रवम्रन्यो करतम अज़ हल
ब छुस चम्रनिस भरस तल हृन्य सम्रन्ध पम्रठच।
म्यम्र छमना चम्रन्यि छयम्रटि लुकमय स्यठा टम्रठच
दया युदवय करख मम्रज्य क्याह गछी कम
च़ छव पानय बम्र कुस छुस कासतम गम।।

--o--

माता व्याकुलतायि मंज बजि आपदाय मंज
व्याकुलताय मंज माता रछतम चम्रय।।
व्याकुलतायि मंज बजि आपदाय मंज
ग्रहपीडाय मंज़ माता रछतम चय।।
व्याकुलतायि मंज बजि शत्रुताय मंज
चचलताय मंज माता रछ़तम चम्रय।।

लक्ष्मीवशीकरणचूर्ण ०।।

बम्र मम्रजम्रय कँह न ज़ानय पूज़ च्यम्रनो
दया कम्ररिज्यम युदय मन्त्र मशम कांह।।
दया कम्ररिज्यम म्य मा च्यय रुस्त छुम कांह
क्षमा कम्ररिज्यम म्य नय च्यय रुस्त छुम कांह।।

२

मि कम्ररिज्यम कामना स्यद्ध ही भवम्रन्यो

म्य करिज्यम कामना स्यद्ध हं [illegible]शिव।
कडुम अमि गम मंज़ मे [illegible]न रव
म्य करतम कामना स्य[illegible] म[illegible] भवम्रन्यी
जन्म सफल म्यि करत[illegible] भवम्रन्यों।।
[illegible]दुर्गा भगव[illegible] पातु न

३

दया धर्मय व्यचारय सग्रत्य वारय
सदा रोज़तम दितम भवसर म्यि तारय ।
सूत्य रोज़तम तग्र बोज़तम ज़ार पारय
सदा बोज़तम तग्र करतय म्योन चारय ॥

माता मंगुन छुम नय तगान बोजुन तगान छुय
लकुट शुर माजि यिथ पग्रठच दुध मंगान छुय ॥
म्य छम विनती कुनी वुन्य ही भवग्रन्यी
बग्र रटहय हृदयस मंज़ पाद च्यग्रन्यी
बग्र करहय लोल अशि सूर्त्यी यिमन श्रान
छलय वथरय तग्र वथरावय पनुन पान ॥
करान रोजहय बग्र न्यथ सुमरण यि चग्रन्यी
परान रोज़हय दुहय शिव शिव भवग्रन्यो ।
यहग्रय विनती म्य माता करत मन्ज़ूर
दितम माता परम सुख करुम दु:ख दूर ॥

माता चग्र छख दाता
करनाव तारस न्यय स्वुरिथ
तारुम मि तारस थप करिथ ।
पारस बनावुम श्यसतरस
नारस करुम गुल्ज़ार
काया छि म्यग्रन्यी द्वारिका
चग्रय छख कृष्ण परमात्मा
मंगान सुदामा छुय भिक्षा
सर्वेश्वरी--[illegible]कबाल ।
मंगान अन[illegible]
मग्रस्य परमे[illegible] भिक्षा
[illegible]

माता क्षय सुख दाता
रोग नाशिनी शत्रु नाशिनी ।
बोल शारिका माता की जय ।।
बोल राज्ञी माता की जय ।।
बोल ज्वाला माता की जय ।।
बोल सांचे दरबार की जय ।।
बोल माता दुर्गा जी की जय ।।
बोल जगदम्बा की जय ।।
बोल सब सन्तों की जय ।।

१

श्रीशारिके शरण्ये त्वं मयि दासे दयां कुरु ।
ऋणं रोगं भयं शोकं रिपून्नाशय सत्वरम ।।

२

प्रद्युम्न शिखरासीनां मातृचक्रोपशोभिताम ।
पीठेश्वरीं शिलारूपां शारिकां प्रणमाम्यहम ।।

३

शान्ति नयस्याशु जनस्य पापं
रिक्तत्वं अर्थेन निराकरोषि ।
कायं निषिञ्चस्यपि भाग्यपूरैः
प्रगीयसेऽतः खलु शारिका त्वम् ।।

४

बीजैः सप्तभिः उज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्तसप्तिद्युतिः
सप्तर्षिप्रणतांघ्रि पंकजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत् ।
काश्मीर प्रवरेशमध्यनगरे प्रद्युम्नपीठे स्थिता
सप्तक संयुता भगवती श्रीशारिका पातु न

५

ब्रह्माणं च पुरन्दरं शिवहरी देवान्समस्तान्मुनीन्
या दृष्टचा दयया विलोकयति सा देव्यम्बिका पार्वती।
चक्रस्था निजबोधभासत जगत् शान्तात्मिका सर्वगा
सान्द्रानन्दप्रदा परा भगवती पायात्सदा शारिका॥

६

भक्तानां सिद्धिदात्रीनलिनयुगकरा श्वेतपद्मासनस्था
लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना सर्वदैत्येन्द्र हर्त्री।
वागेशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः सेविता या भवानी
नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहरप्रणतां शारिकां नौमि नौमि॥

७

या खड्गं डमरुं त्रिशूलपरशू खट्वांगपाशौ गदां
चक्रं मुद्गर चाप बाणवरदाभीतीः कपालांकुशौ।
धत्ते तोमर पुस्तके च मुसुलं दोर्भिः दशात्ताष्टभिः
देवीभिः परिवारिता शशिधरा सा शारिका पातु नः॥

८

या देवी शिवकेशवादि जननी यावै जगतरूपिणी
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्त जनतानन्दैक संदायिनी।
या पञ्च प्रणमन् निलिम्पनयनी या चित्कलामालिनी
सा पायात् परदेवता भगवती श्री राजराजेश्वरी॥

९

[illegible]ोर व्याधिविनाशीच घोररोग विनाशिनी।
अष्टादशभुजा पायात् शारिका श्यामसुन्दरी॥

१०

श्यमा चावतु कामाच चार्वङ्गी टंकधारिणी
[illegible]रा च पार्वती पायात् यक्षिणी शारिकाष्ट

११

श्रीशंखचक्रमुसुलाम्बुजयुग्महस्तां, नागेन्द्रहारवलयांकितकण्ठमालां।
सिन्दूरकुंकमसहस्रमरीचि दीप्तां, श्रीशारिकां त्रिनयनां हृदये स्मरामि।

१२

बालार्ककोटिद्युतिमिन्दुचूड़ां, वरासिचक्राभयभावमाद्यां।
सिंहाधिरूढां शिववामदेह लीनां भजे चेतसि शारिकेशीम् ॥

१३

माता भवानी च पिता भवानी
बन्धुः भवानी च गुरुः भवानी।
विद्या भवानी द्रविणं भवानी
यतो यतो यानि ततो भवानी॥

१४

श्री शारिके शरण्ये॰ ॥

हे मञ्ज्य शारिका सारिनी चञ्च रछवन
दासस म्यि दीनस प्यठ दया कर।
रूग भय कर्ज भय नाना दुःख तञ्च दञ्चद्य
दुश्मनन म्यान्यन जल नाश कर॥

२

प्रद्युम्न पीठस प्यठ युस विराजमान
मातृचक्र किन्य युस शूभायमान।
पीठेश्वरी युस शिलारूप आसवन्य
तस शारिकाय छुस बञ्च लोल सान

३

'शा' शब्द किन्य युसग्र पापन छि गालान
'रि' शब्द किन्य करान माला माल !
'का, किन्य कायाय भाग्यरडव सग्रत्य
सगवान तवय छिस शारिका वनान ॥

४

युस सतव बीज़ाक्षरव किन्य छि प्रजलान
युस सूर्यस हिश छि शूभायमान ।
सतऋष्य प्यठ नमिथ यस चरण कमलन
युसग्र सतन लूकन ग्ररचर हरान ।
प्रवरसेन नगरी कश्मीर देशकिस
प्रद्युम्नपीठस प्यठ विराज़मान ।
सत दीवी छय ग्रंद्य ग्रंद्य खडा यस
सुय शारिका ग्रसि करितन त्राण ॥

५

शंकरस तग्र नारायणस इन्द्राज़स
ब्रह्मास तग्र दीवन बिय मुनियन ।
युस मग्रज्य भगवती शारिका माता
दयाय हन्ज़ दृष्टि छख सदा थवान !
चक्रेश्वरी युस शांत स्वरूपा
भूतरग्रच्य प्रकाश किन्य भासनावान ।
स्वय सर्व व्यापक शारिका म्य रछतन
भक्तयन युसग्र ग्रानन्द छि बखचान ॥

६

अ[illegible]म मुख यस ब्ययि त्रिनेत्र धारवन्य
[illegible] छि स्यद्धी जल बखचान ।
[illegible]च यस ग्रथन मंज़ शूभान

युसम्र सफेद कमलस प्यठ विराजमान।
युसम्र मम्रज्य सारिन्यी म्रसुरन छि गालान
लक्ष्मी रूप किन्य छि रम्रछ्य करान।
सरस्वती रूप ब्यियि स्यद्धी करवन्य
सम्ररी ऋष यस छि म्रस्तुती करान।
यस माजि शारिकाय शंकर तम्र विष्णु
लोलसान म्रोंठ कनि गुल्य छिस गंडान।
तस्य माजि शारिकाय दास छुस बम्र गुणहीन
गुल्य गंड़िथ प्रेमसान विनती करान।।

७

युस मम्रज्य खड्गस त्रिशूलस तम्र तबरे
खूर गदा डुमडुम तम्र तीर कमान।
कल खपर टोंगुन पूथ्य म्रभय वरदान
चक्र गुरजम्र फाँस्यि रज्ज शूभायमान।
नेज़स तम्र मुहलिस म्ररदाहत्र नरिव किन्य
धारवम्रन्य डचकि चन्द्रम ज़ोतान।
दीवी खडा म्रन्द्यम्रन्द्य यस सीवान
स्वय मम्रज्य शारिका म्य करितन त्राण।।

८

शंकर तम्र विष्णु सन्ज़ युस माता
संसाररूप युस शोलम्रन्यी।
ब्रह्मा संद्य प्यठ रिय ताम सारिन्यी
लूकन करान छय शादमम्रन्यी।
पंपोश म्रछि यस, युसचित्स्वरूपा
सम्ररय जुवजात गुल्य यस गंडान।
राज़राजेश्वरी स्वय म्यय रछतन
दीतनम विज़ि विज़ि म्रसलुक ज्ञान।।

९

बे इलाज रूगन, क्रेठयन ब्यमारिन
युस मश्रज्य शारिका छि शुमरावान।
अरदाहद नरिव किन्य सुय मश्रज्य शारिका
श्याम सुन्दरी अस्य करितन त्राण

१०

अमा तश्र कामा, यक्षिणी तश्र तारा
चार्वङ्गी टकधारिणी पार्वती।
अठिम दीवी श्यामसुन्दरी मश्रज्य
शारिका रूजितन न्यथ रअछ करान।।

११

सुदर्शनचक्र मुहुल ब्ययि शंख तश्र पंपोश
जूरि यस अथन मंज़ छि शोल मारान।
सर्पराज़ हटि नअल्य ब्यय दुन नरिन मंज़
बुंगरि बनिथअय यस छु क्याह शूभान।
स्यन्दरि तश्र कुंगस बिय सूर्यस हिश
युस शारिका बुज़लान तश्र प्रज़लान।
त्रिनेत्र धारवन्यि तस्य माजि शारिकाय
हुंद बश्र हृदयस मंज़ न्यथ करान ध्यान।।

१२

खसवन्यन लुकटयन बेशुमार सूर्यन
ब्यय अनग्रार रंग किन्य छि युस प्रजलान।
वर चक्र तलवार ब्यय अभय भावस
चन्द्रमस डिकि युस मश्रज्य धारान।
आद्या शक्ती युस मश्रज्य शारिका
पादर सहस प्यठ बिहिथ शूभान।

अर्धांगिनी बनिथ शंकरस सअत्य युसअ
बिहिथ तअस्य शारिकाय गुल्य ब छुस गन्डान ॥

चअ माता कास्तम म्य गम
बअ लागय भाव कोसम ।
दितम दर्शुन चल्यम गम
ब लागय भाव कोसम ।।

दितम दर्शुन फुली म्य मन ।
ब लागय० ।

म्य माता आश चअन्य छम । ब० ।
दया दृष्टी म्य करतम । ब० ।

ब मा वोतुस च्यनिश ज़ांह
म्य करमय न पाठ पूज़ा
तवय शर मंदगी म्य छम । ब० ।

च दीवी क्याज़ि रुठख
खटिथ कथ जायि बीठख ।
दितम दर्शुन । ब० ।

गुडन्य स्यद्ध कर म्य वअणी
दुयुम दिम पअर्य जअनी
त्रयुम त्रैलोकी मंज सम । ब० ।

कुरुथ च्वन वीदन अन्द
छुं पूंच्युम परमानन्द
शयुम शिवरूप भासतम । ब लागय० ।

सत्युम भासतम म्य सत रूप
दज्यम अन्दर ज्ञानुक धूप
च्यअ डीशिथ दूर चल्यम यम । ब० ।

दज़ान छुय धूप कोफ़ूर
वज़ान छुय साज़ संतूर
नगारो साज़ मदहम । ब० ।

यिवान छिय ऋष इत्यादिक
करान दशुंन छि सन्मुख
सदा रूज़िथ छि सरखम । ब० ।

नेत्र च्यग्रन्य पद्मवथग्नर
कलस प्यठ च्यय मुक्त छथग्नर
छि तथ न्यर्वाणश्य थम। ब० ।

च़्ग्र ग्रष्टा दशभुजा छख
म्य त्ये ब्वड भोग सोज़ख
ॆय़ दीवी क्याह गछ़ी कम । ब० ।
जू

छु ब्वड़ दरबार च्योनुय
त्रन्दय ा कबील क्रोनुय
शोल मारान छि व्यलकम । ब० ।

रथ छु माया ज़ाल
मूहन म्य वुलमुत नाल
ग्रम्युक व्यस्तार वनतम । ब० ।

नच़ान छी चण्ड़ तय मुण्ड
तिमन दिख च़्ग्र पानय दण्ड़
प्यठय त्रावुख निरालम्ब । ब० ।

च छख शक्ती शिवस सग्रत्य
छि यिछ ग्रगनस ग्रन्दर ज्यूत्य
तम्युक्ष मन्त्र छु शमदम । ब० ।

छु अठुम दोह चोनुय
बोजि़ फर्याद सोनुय
म्य सायस तल च्अ रछतम ।
ब लागय० ॥

१

अघोर व्याधिना०

२

निर्गुणे निष्कले० ॥

३

उद्यत् दिवाकर सहस्ररुचि त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतां भुजगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्य कलशामृत पात्र हस्तां
राज्ञीं भजामि विकसत् वदनारविन्दाम् ॥

४

राज्यप्रदायै बिद्महि
पंचदशाक्षर्यै धीमहि
तन्नो राज्ञी प्रचोदयात् ॥

५

चराचर जगत सृष्टिस्थिति संहारकारिणी ।
नमोस्तुते महाराज्ञि ! पाहि मां शरणागतम् ॥

१

लक्ष्मी वशीक० ॥

१

आपदामपहर्तारं दातारं सुखसम्पदम् ।
घनाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥

२

श्रीराम: शरणं समस्तजगतां
रामं नमामीश्वर म्।
रामेन रचितं त्रिलोकं अखिलं
रामाय तस्मै नम: ।
रामात् सर्वमिदं जगत् समुदितं
रामस्य दासोस्मि अहं ।
रामे मे रतिरस्तु
राम ! नहि मां मोक्तुं भवानर्हति ॥
रामो राजमणिः सदा विजयते
रामं रमेशं भजे ।
रामेन निहिता निशाचरचमू:
रामाय तस्मै नम: ।
रामात् नास्ति परायणं परतरं
रामस्य दासोस्मि अहं ।
रामे चित्तलय: सदा भवतु मे
भो राम ! माम् उद्धर ॥

४

रामं विश्वमयं वन्दे रामं वन्दे रघूद्वहम् ।
रामं विप्रवरं वन्दे रामं श्यामाग्रजं भजे ॥

५

नमस्तुभ्यं भगवते विशुद्धज्ञान मूर्तये ।
आत्मारामाय रामाय सीतारामाय चेतसे ॥

६

जयति रघुवंश तिलकः कौसल्या हृदय नन्दनो रामः ।
दशवदन निधनकारी दाशरथिः पुण्डरीकाक्षः ॥

७

श्री रामः पुरुषोत्तमः नरहरिः
नारायणः केशवः ।
गोविन्दः गरुड़ध्वजः गुणनिधिः
दामोदरः माधवः ।
श्रीकृष्णः कमलापतिः यदुपतिः
सीतापतिः श्रीपतिः ।
वैकुण्ठाधिपतिः चराचरपतिः
लक्ष्मीपतिः पाहि माम् ॥

८

हे कृष्ण ! मनसि वासिन् ! क्वासि यादव नन्दन ! ।
इमां अवस्थां सम्प्राप्तं, अनाथं किं न रक्षसि ।

९

वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूर मर्दनं ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

१०

या त्वरा द्रौपदी त्राणे या त्वरा गजमोक्षणे ।
मयिदीने दीनबन्धो ! सात्वरा क्व गता हरेः ! ॥

११

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लंघयते गिरिम ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥

मग्रज्य भवग्रन्यी लक्ष्मी वश०।।

व ज़ग्ररी गोश थावतम ही भवग्रन्यो
च्य़ रस्तुय रछवुन छुय काँह न म्योनय
च्य़ रस्तुय कस वनय कुस बोज़ि फरियाद
च्य़ रुस्तुय कडयम कुस गम मंज़ दिल करिम शाद ॥

१

च्य़ दीवी सर वन्दय शेरस त पादन
च़ दीवी गोश थवतम फरियादन।
च्य़ दीवी ग्रालमस प्यठ छय ग्रमीरी
च्य़ग्र दीवी पान कग्ररिज्यम दस्तगीरी ॥

२

व छुस प्योमुत पथर ग्रथ हट करखना
म्य दिख दर्शुन तग्र शुभ वर्षुन करखना
दवा दाद्यन छुकन म्यान्यन दिहमना
म्य छम यी ग्राश पादन तल हिहमना ॥

३

दवाये दर्द दीवो कर म्य पानय
तबीबन हन्ज़ तबाबत छम बहानय।
तबाबत चग्रन्य छम मग्रज्य चोन दर्शुन
दितम दर्शुन ब करहग्रय पोष वर्षुन ॥

४

बराये ग्रकवथ केंह छुमन तोशे
च्युग्र रुल्तुय कस वनय मग्रज्य कस ब रोशे
युथुय छुम गम तिछ़य छम तंगदस्तों
म्य कुदरथ कासतम गम ब्यथि तंग दस्ती ॥

५

कुलुफ यिथ पअ़ठय छि मच़रान कअ़दखानस
गछ़ान ब्युन ब्युन छि तिम पनन्यन मकानन।
तिथय पअ़ठ्य। गम मंज़ करतम म्य आज़ाद
छ़सय फरियअ़द्य आमुत बोज़तम ज़ार।।

६

कलम तुल कर्मलीखा म्यअ़न्य नव लेख
ललाटस यथ म्य हितकारअ़क्य अछर लेख।
वुछुख यिमः हअ़ल्य अिछर तिम नाहवनाबुख
छि यिम स्यद्य तिम ति सोबूत थावुम।।

७

छि यिम पअ़न्च़य अछर लेखन्य न ज्य़ादय
गुड़न्य मअ़ज्य दूर करतम भूमि प्यठ व्याध।
दुयुम मअ़ज्य शत्रु कांह पोरुन गुछुम ना
लूभ मारिथ त्रयुम सन्तोष गुछम ना।।

८

छ चूरिम कथ यहय म्यअ़निस मनस मंज़
रछुम पनन्यन पद्यन तल छुम गोमुत कंज़।
यि पंच्युम प्राण म्योन लारान पतय छुम
शुभ वषनं त अमृत वर्षुन करुम च़अ़य।।

९

च़अ़ शेरस प्यठ सवार छख पान नेरान
जहानस सअ़रिसय छख पान फेरान।
च्य छुय वुनमुत ब छस बोज़ान तिहन्दय ज़ार
यमिस नय आसि वननस कंसि निश वार।।

खबर छा कोन छख अद म्योन बोज़ान
गयम मा ज्यव म्य कअज्य तव छख न बोज़ान I
सतन भवनन हन्ज़्य छख आदि शक्ती
शरण आमुत छसय मअज्य दिम म्य भक्ती ॥

११

ब माता युद च्यअनिश कुनि चीयँ वातय
म्य मतअ मशरावतम मअज्य कुन्यि सातय।
च्यअनिश वअतिथ गछान छुन काँह ति महरूम
पनुन अथ ड़ालतम छुसना बअ मोसूम ॥

१२

पराकन्दह छुसय चअनिस बरस तल
दिलक्य मुश्किल भवअन्यी करतमी हल।
ब छुस चअनिस भरस तल ह्न्य सन्दय पअठय
म्य छिमना चअन्य छयट लुकमय स्यठा टअठय ॥

१३

दया युदवय करख मअज्य क्याह गछिय कम
चअ छख पानय व कुस छुस कासतम गम ।
यि मुन्गमय मअज्य भवअन्यी ती दितम म्यय
वन्दय जुवजान तअ प्राण अर्पण करय च्यय

१४

म वअछ पापन चअ म्यान्यन कुन भवअन्यी ॥
म वअछ शापन चअ म्यान्यन कुन भवअन्यी
च्यअ रूस्तुय कस सना कुन कर ब ज़ारी
चअ छखना आसवअन्य त्रैलूक्य स्वामी ॥

१५

क्षमा यस प्यठ करख तस क्या छु परवाय
दया यस प्यट करख तस क्या छु परवाय ।
असथ त्रअविथ सतस कुन तस गनी माय
चअ यस भक्तिस दिहस पादन तलय जाय ॥

१६

मनक्य पम्पोश ब लागय पाद्य कमलन
दिलक्य व्यन पोश ब लागय चरण कमलन ।
चअ कन थवतम म्य फरयादन तअ नादन
ब मअज्यी मीठच दिमहय लोल पादन ॥

१७

ब लागय शेरि लक्ष्मी भाव व्यन पोश
ब लागय पाद्य कमलन भाव पम्पोश ।
सुभक्ती प्रावि परमानन्द त गछि खोश
दया करतम चअ छखना सर्व व्यापक ॥

१८

मूर्खताये किन्यी म्य कुर क्या क्या अपुज़ पुज़
खबर कमि भावनाये किन्य स्वरुम अपुज़ पुज़ ।
गुणन च्यान्यन हुंदुय सोरुय यि कीर्तन
करचम शुद्ध वासनाये लग्यम च्यय कुन यि मन ॥

१९

चअ कर मन्जूर म्यअन्यी विलज़अरी
दया रूपी ब लगहय पअर्य पअरी ।
भक्त चअन्यी परन यिम चअन्य सतगुण
लबन तिम परम सुख तय मूक्ष प्रावन ॥

१

प्रात: काल श्राव स्यति श्रनता गाश मति
छमा चश्रन्य श्राश मति पूर्ण कर ।
लटि मुख हाव मूह गटि करता नाश मति
छमा चश्रन्य० ॥

२

जन्मादि जन्मन ग्यूर श्राम फेरान
छस हालि हश्रान डेशथ कर
जल हाव मुख पनुन छुम न बरदाश मति
छम चश्रनि०

३

भक्तिभाव सूत्यन वति चानि नेरय
कति छुख श्रासान पश्रगाम सोज
नत दिम पननुय प्रोन बरदाश्त मति
छम चश्रन्य०

४

मूह गटि मंज छस वथ छम नश्र यीवान
सत गुर हावतम सत ची वथ
वथ हाव नुन त्राव सिर्य प्रकाश मति
छमा चश्रनि०

५

हनि हनि पयूरुस ह्यथ मनि कामन
शहरन तश्र गामन कति श्रासि यार० ।
छुख पाताल किन छुख श्राकाश मति
छमा चश्रनि०

६

न्यरवासन वन तअ कति च्योन आसन
अंधकार कासतम वँदयो प्राण
करतम सुद्यवानिनि हिश बअशअ मति
छमा चअनि०

७

कल्पनाय रसित्यो कलहो वन्दयो
कलि चानि रअवम निद्र तअ नेह
बुल बुन्य विषणस चलि अभिलाष मति
छमा चअनि० ॥

कल्पाँतकाटोप पटु प्रकोप
स्फुटाट्टहासोच्चलिताण्डकोष ।
घोरारि सेनार्णव दुर्निवार
महाभयात् रक्षतु वीरभद्र ॥

२

यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिं ।
वाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं
मारुतिं नमत राक्षसांतकम् ॥

३

आंजनेयं अति पाटलाननं
काञ्चनाद्रि कमनीय विग्रहं ।
पारिजात तरुमूल वासिनं
भावयामि पवमान नन्दनम् ॥

बोल पवन सुत हनुमान की जय ।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्
सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

अथ आचार्य वसिष्टकृतं शिवस्तोत्रम् ।

१

ॐ विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय
ज्ञान प्रदाय करुणामृत सागराय ।
कर्पूर कुन्द धवलेन्दु जटाधराय
दारिद्र्य दुःख दहनाय नमः शिवाय ॥

२

गौरीप्रियाय निशिराज कलाधराय,
लोकान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय ।
गंगाधराय जलदानव मर्दनाय । दारि० ॥

३

भानुप्रियाय भवसागर नाशनाय
कामान्तकाय कमलाप्रिय पूजिताय ।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षण लक्षिताय । दारि ० ॥

४

पंचाननाय फणिराज विभूषणाय
स्वर्गापवर्ग फलदाय विभूतिदाय ।
हेमांशुकाय भुवनत्रय वन्दिताय । दारि ० ॥

५

भक्तिप्रियाय भवरोग भयापहाय
दिव्याय दिव्यवसनाय गुणार्णवाय ।
तेजोमयाय सकलार्थद संस्थिताय । दारि० ॥

६

रामप्रियाय रघुनाथ बरप्रदाय
नाथप्रियाय नगराजसुता प्रियाय।
पुण्याय पुण्य चरिताय सुरार्चिताय। दारि ०।

७

चर्माम्बराय चितिभस्म विलेपनाय
मालेक्षणाय मणि कुण्डल मण्डिताय।
मञ्जीर पाद युगलाय वृषध्वजाय। दारि ०।

८

मुक्ताय यज्ञफलदाय गणेश्वराय
गीतप्रियाय वृषभेश्वर वाहनाय।
मातंगचर्मवसनाय महेश्वराय। दारि०।

६

वसिष्टेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोग निकृन्तनम्।
सर्वकामप्रदं नृणां हत्याकोटि विनाशकम् ॥

२०

ब्रह्मघ्नो वा सुरापोवास्त्रीहन्ता गुरुतल्पगः।
यः पठेत् शिवसान्निध्यं शिवसायुज्यमाप्नुयात्॥

इति वसिष्ठकृतं शिवस्तोत्रम् ॥

। कश्मीरी अनुवाद।

१

जगतुक ईश्वर दयाय हुन्द सागर
नरकव निश युस छु मुकलावान।

कुन्गपोश चन्द्रम त कोफूर रंग सफेद
युस जटाधारी छु रग्रच् गथ दिवान।
दारिद्रभाव व्ययि दुःख युस छु ज़ालान
तस महादीवस ब गुल्य छुस गंडान ॥

२

पार्वती हुन्द टोठ त्र्यभुवनन छु गालान
डचकि चन्द्रम कला यस छि जोतान।
शीषनाग यस नरिन करिव कन्यि शूभान
गंगा शेरस शोल मारान।
दुःख दायकस जल दानवस हिविस
महा असुरस युस छुय मूल प्राटान। दारि०।

३

यित गछ संसारच्य युस गालान
सूर्य भगवान ति यस छु सुख कांछान।
श्याम सुन्दर कामदीव हयुह दीवता
ज़ोलुन कुरुनस मूलमुन्ज फान।
लक्ष्मी हुंद टोठ विष्णु भगवान
यस पूजान छुय कमि लोल सान।
शुभलक्षणव किन्य युस स्यठाह रंभवुन
युस त्र्ययव नेत्रव छु मन सोन हरान। दारि०।

४

पग्रन्चव मुखव युस पंचमुख महादीव
ह्यथ शीषनागस छट मारान।
स्वर्गस त मूक्षस सुख सम्पदायन
हिव्यन दुर्लभ फलन युस बखचान।
त्र्यनवग्रन्य भुवनन मंज़ यस छि पूज़ान
स्वन रंग वस्त्रव किन्य छु प्रज़लान। दारि०।

५

भवनी यम्यिस टग्रठ दिव्यरूप धारकस
संसार भय कठिन्य दग्रद्य युस हरान
गुणन हुंद सागर युस छु तेज रूपवान
स्वर्गयव जामव छु दिल मूहान
युस भक्त्यन हन्द्यन सारिन्यी प्रयोजनन
ब्यय कामनायन छु जल स्यद्ध करान। दारि ०।

६

रामजो यमिस टोठ युस पुण्यरूप वान
यम्य श्रीरामस दितुय वरदान।
पर्वत राज हिमालय सन्ज़ कुन्य कूर
पार्वती यस प्रिया बन्यिथ शूभान।
थ्यकवमन्य चरयथ यस श्री आशुतोषस
छिस दोव सग्ररी लोल पूज़ करान। दारि ०।

७

सग्रह चम वज़ियमच़ यम्य रूप बदनस
लन्यि सूर श्मशानुक प्रजलान
यस डयकस प्यठ त्रयुम नेत्र छु शूभान
कनन दुर्लभ रत्न ग्राय मारान
खुरन श्रुन्यदार रुन्य जोर जोर यस वज़ान
बृषभ झंडस प्यठ गाह त्रावान। दारि ०।

८

सारिन्यी गणन हुन्द आसवुन ज्युठ युस
युस सदा मुक्त यज्ञफल युस दिवान
रागिसान ग्यविमति यस ग्यवन सख प्रियान

वृषभेश्वर बन्योमुत यस सवार
हम्रस्य चम वस्त्रव कन्यि युस लग्नगिथ
युस अहंरूप शिव छु सर्वशक्तिमान । दारि ० ।

९

वसिष्ठाचार्यन करमग्रच् यि अस्तुति
सारिन्यी रूगन छि मूल गालान
सारिन्यी कामनायन पूर करवन्य
कठिन्यन पापन द्रोत वायान ।।

१०

युस कांहति पापी शिवस सन्मुख बिहिथ
आसि न्यथ यि अस्तुति बोलसान परान ।
मंज़ शिवलोकस शिव बन्येमतिस तस
सअरी दीवता छि पूजा करान ।।

---

१ अज छुम घन्योमुत लोल चोन मुख हावतम सूरयमत्यो
दादि चानि रुम रुम छिम रिवान मत मारतम वारय मत्यो ।।
२ विषयव निशो सुलि सावतम वुज़नावतम रूजिथ हुशार
न्यथ नाव चोन गछहम्र स्वरान तिछ अथ म्य घन्यरावतम मत्यो ।।
३ रातस दुहस कथ कारस'य लोगथस फस्योस अथ ज़ारस'य
हनि हनि म्य गोम सोरुय नशान अथ ख'ल्य ब' गोस हावान मत्यो ।।
४ पत ब्रोंठ वुछान गोस दम दमय हर्षस गछान गोस क्षण क्षणय
शुरि ब'च ति तिम छम अज़ अपान ज़ालस फस्योस यति ब'ल्य मत्यो ।।
५ फुलिमत्य वुछिथ कम कम गुलाब संसार बनस'य बेहिसाब
ज़रि चानि सूती तिम फुलान ज़ान्य ज़ान्य म्य ज़ोनुय ना मत्यो ।।
६ सुब-शाम करान र'टय रुछयि गथ कुस छुम बनान गरि गरि च़ वुथ
आफताब नभस यित गछ करान भुंभि चानि हज़ि ज़ेरे मत्यो ।।

७ अमार चान्ये द्रास गरे छारान गोस कोह बाल नये
पय द्राम न. गोस अ'शदार हरान कथ जाय छुख चूरे मत्यो ॥

८ बूज़ुम च् छुख बिन्द्राबनय लारचोस ब. पनने तावनय
रोवुस तते रछ रछ छटान कति चोन आस्तान छोय मत्यो ॥

९ कैलास छि चोन बुजुम स्थान साधनाय मज् थय्थ न्यथ थवान
स'धिथ त. सखरिथ गोस दवान मूरान ब. रूदुस गुल्य मत्यो ॥

१० तीर्थन ब. गोसय छा'रनी तमि् वाञ्जि तन मन नावनी
रूदुस अहर्निश ध्यान धरान चल चित्त न. ठहरयोम ज़ांह मत्यो ॥

११ वोतुम हटिस प्यठ आस पतुय दामन यि चोन रटन्ये यतुय
कढतम म्य तर गुल्य छुस गंडान मत मंदछावतम वुन्य मत्यो ॥

१२ सोंबरिथ ति साधान छुम न केंह परि' परि' ति लारान छुम न केंह
क्यथ प'ठय गल्यम दीहुक यि मांन कांछा वथा हावतम मत्यो ॥

१३ मल छुम न गुलमुत क्याह वनय खीद छुम स्यठा लुगमुत तनय
जोलान चठतम छिम वलान जालस ब. लुगमुत छुस मत्यो ॥

१४ स'ह छुम अजान अन्दर्युम सुन्दर बूज़्य बूज्य ति रूदुस बेखबर
भवनाव दुह्य रूदुस सुरान अथ खोर लग्यम क्यथ प'ठच मत्यो ॥

१५ बुद बुछ छु ज़'री ह्यस लभान नादान छु बुछ बुछ गुलदिवान
दिम ह्यस ब. रोज़य गथ करान परवान बनिथय अज मत्यो ॥

१६ सरतलि त त्रामस. सुन करान पारम रत्न यलि तथ लगान
मन म्योन छु सरतल सुय हना शुजरावतम वारय मत्यो ॥

१७ नदियन कुलन हुन्द मअल वोञ्ज गगाय संगमुक पाक पोञ्ज
यक्सान व'तिथ छुख गछान आगुर म्य समभ़ावुम मत्यो ॥

१८ भाव छा ब. न'न्य प'ठय हावसय नाव छा लगान घटि घाटसय
येरान ब. श्रोल गोस भाव सान छ'ठ मा करिस तुज्य तुज्य मत्यो ॥

१९ मन वारि त्राव्योम सात व्योल ह्यल्य द्राम न. जांह् ह्युतमस म्य जोल
क'ल्य क'ल्य गयोसस सग दिवान साथ मा कुसाथ श्रोसुम मत्यो ॥

२० श्रार पल ब. श्रारस मंज बिहिथ श्रार पानि तन मन शुद्ध करिथ
दक ख्यथ ति छुा बे ह्यस बनान श्रसराह न सपद्योम जांह् मत्यो ॥

२१ बागस श्रन्दर नाना चमन लूभवन्य मुशिख छख दिल लुभन
वुछह्श्र मुश्क कति छम म्य जान नजराह म्य तिछ दिम श्रज मत्यो ॥

२२ छु'टि प'ठय वनय जानय न केंह् रुटछुम न सारान चोन स्रेह
वुनमय म्य लोलुक दास्तान श्रास्तान म्योन छुख चय मत्यो ॥

टेक :— हलमव हलमब गुलाब शङ्कर पूजि लागय ।
भंगमत्या भस्माधर शंकर पूजि लागय ॥

१ रोजान छुख श्रमरनाथ छय उमाद्देवी च्य साथ ।
सूरमत्या भस्माधर शंकर ० ।

२ नंगमत्या सूरमत्ये रोजान छुख च कत्ये
वनतम कति च्योन घर शंकर ० ॥

३ रात द्यन ह्यमयो जाग प्रारय शिशरम नाग ।
च्यानि नात्रि मंज ब'ति तर शंकर ० ॥

४ श्रासान च कैलास कोह पानस मारान छोह ।
च्यानि दूनि हुंद सूर मल शंकर ० ॥

५ नाव च्योन छय मृत्युँजय पापन सानिन करक्षय ।
च्यय वनान छिय महेश्वर शंकर ० ॥

६ हर मुख छुख रोजान जार सम्रन्य छुख बोजान।
हरमुख के हरीहर शंकर ०॥

७ कैलास छुख आसान सूत्य सूत्य असि भासान।
भक्तिन छुख दिवान वर शंकर० ॥

८ गंगा छय च्य जटनय नाश करान संकटनय।
छिय वनान च्य् गंगाधर शंकर ०॥

९ शक्ति छिय च्यअ सूत्यी तसंज छय च्य प्रीती
बोल छिय करान जानवर शंकर ०॥

१० त्रिनेत्र यलि मुचरुथ कामदेवस भस्म करुथ।
देवतान चायि थर थर शंकर ०॥

११ वासुक छुय च्योन हार भवसागरस म्यति तार।
छिय वनान च्य दिगम्बर शंकर ०॥

१२ बोज कनडूर म्याने सूरमत्या गोसाने।
गछितनय च्यअ म्योन ज़र जर शंकर ०॥

१३ कर क्याह वन क्याह बय पादन वन्दय अछ ज़य
तवय हा गोस विस्मर शंकर ०॥

१४ शरमन्द छस ब स्यठा नाव च्योन सुरमय न जांह।
गलती छम सरासर शंकर ०॥

१५ अनुग्रह चिय नजराह करतम मशरतम न जांह।
आमुत छुस स्यठा अर शंकर ०॥

१६ पतिमि गरि छुट तय गुट मेलिम यलि करिजिम अथरुट
प्राणन लग़यम यलि दर शंकर ० ॥

१७ ओरुत आस शरणय पादन प्यवान परनय।
भावक्य म्य मुचरुम बर शंकर ०॥

१८ बिल पोश त धतर पोश शंकरस छिय करान खोश।
दुछि दुछि लागय अम्बर शंकर ०॥

१९ शंकर असि मसग्र रोश शेरि लागय भाव पंपोश।
च्न्य लीला च्य निश पर शंकर ०॥

२० ओरुत छुस वनान जार शंकर यीतनय आर।
च्य सिवा गछ मा बर शंकर ०॥

२१ आलोक छुय प्रारान नेत्रव खून हारान
शिव शंकर महेश्वर शंकर ०॥

हलमव हलमव गुलाब शंकर पूजि लागय॥

। जगदम्बा अस्तुति ।

टेक— हलमव हलमव गुलाब शारिकाय पूजि लागय।
विन पोश बिय पंपोश राज्ञायि पूजि लागय॥

१ पर्बतस प्यठ रोजान अरदाह भुज धारान।
भक्तिन छख दिवान वर शारिकाय ०।

२ च्यय वनान चक्रीश्वरी चय हय माता पार्वती
शक्ति हंज छख सागर शारिकाय ०।

३ दुर्गा छुय च्योन नाव मनसय असि लोल आव
दुर्गति सम्रन्य दूर कर शारिकाय ०।

४ महिषासुर गोलथन पाताल च्य वोलथन
अ'रत्यन असि दया कर शारिकायि ०।

५ करि युस च'न्य सुमरण दुःख कति तस रोजन
दुखनय चय दवा कर शारिकाय ०।

६ बत्य छुस पथर प्योमुत मायायि भ्रोम रोवमुत
माता वन्य म्य ग्रथरुट कर शारिकाय o ।

७ च़्य हय म्योन मोल तय म'ज्य च़्ग म्यन्य बन्ध त बान्धव
चि सिवा कांह् छुम न सोर शारिकाय o ॥

८ जगदम्बा च़्य वनान पापन च़्य गालान
पापन म्यानिन क्षय कर शारिकाय o ॥

९ डेकि छुय सुनसुन्द ताज हटि छुय मुक्तय हार
छख सहस प्यठ च़्'य सवार शारिकाय o ॥

१० ग्रामुत छुसय शरणय चरणन प्यवान परनय
चरणन तल म्य थव जाय शारिकाय o ॥

११ च़्य छख मूक्षदाता च़्य म'ज्य सिद्धि दाता
ग्रष्ट सिद्धिय ग्रधीन छय शारिकाय o ॥

१२ पापव छुस वुलमुत नाव च्योन जांह न सुर मुत
पापन म्यानन नाश कर शारिकाय o ॥

१३ चानि डेड़ि तल युस ग्राव ना उमेद कांह ति मा द्राव
कामना सग्रन्यति पूर कर शारिकाय o ॥

१४ ग्रात्र युस योर सवाली दरबार द्राव न खाली
दिम दरशुन चलिम शर शारिकाय o ॥

१५ कर्म खुर छख कासान हल्य ग्रछर नाहवनावान
गांछतनय म्योन जर जर शारिकाय o ॥

१६ मनसय मंज़ रोज़तम कष्ट त संकट कास्तम
ग्रालोक छुय वनान ज़ार शारिकाय o ॥

आलम्बे जगदालम्बं हेरम्ब चरणाम्बुजं।
शुष्यन्ति यत्रजः स्पर्शात् सद्यः प्रत्यूहवारयः॥

ॐ नमः स्वच्छन्द भैरवाय।

त्रिपञ्चनयनं देवं जटामुकटमण्डितम्।
चन्द्रकोटिप्रतीकाशं चन्द्रार्ध कृतशेखरम्। १॥

पञ्चवक्त्रं विशालाक्षं सर्पगोनासमण्डितम्।
वृश्चिकैरग्निवर्णाभैर्हारेण तु विराजितम्। २॥

कपालमालाभरणं खड्गखेटकधारिणम्।
पाशांकुशधरं देवं शरहस्तं पिनाकिनम्। ३॥

वरदाभयहस्तं च मुण्डखट्वाङ्गधारिगम्।
वीणाडमरुहस्तं च घण्टाहस्तं त्रिशूलिनम। ४॥

वज्रदण्डकृताटोपं परश्वायुधहस्तकम्।
मुद्गरेण विचित्रेण वर्तुलेन विराजितम्। ५॥

सिंहचर्मपरीधानं गजचर्मोत्तरीयकम्।
अष्टादशभुजं देवं नीलकण्ठं सुतेजसम्। ६॥

ऊर्ध्ववक्त्रं महेशानि! स्फाटिकाभं विचिन्तयेत्।
आपीतं पूर्ववक्त्रं तु नीलोत्पलदलप्रभम्। ७॥

दक्षिणं तु विजानीयाद्वामं चैव विचिन्तयेत्।
दाडिमीकुसुमप्रख्यं कुङ्कुमोदकसन्निभम्। ८॥

चन्द्रार्बुदप्रतीकाशं पश्चिमं तु विचिन्तयेत्।
स्वच्छन्दभैरवं देवं सर्वकामफलप्रदम्। ९॥

ध्यायेद्वैयस्तु युक्तात्मा क्षिप्रंसिद्धयति मानवः।
या सा पूर्वं मया ख्याता अघोरा शक्तिरुत्तमा। १०॥

भैरवं पूजयित्वा तु तस्योत्संगे तु तां न्यसेत् ।
यादृशं भैरवं रूपं भैरव्यास्तादृगेव हि । ११ ॥

ईषत्करालवदनां गम्भीरविपुलस्वनाम् ।
प्रसन्नास्यां सदा ध्यायेद्भैरवीं विस्मितेक्षणाम् । १२ ॥

नौम्यहं तां परंब्रह्म महिषींचित्स्वरूपिणीम् ।
चराचरस्वरूपेण संस्थितां भक्तवत्सलाम् । १३ ॥

अथ श्री बहुरूपगर्भस्तोत्रम् ।
ॐ नमः स्वच्छन्दभैरवाय

ब्रह्मादिकारणातीतं स्वशक्त्यानन्दनिर्भरम् ।
नमामि परमेशानं स्वच्छन्दं वीरनायकम् । १ ॥

कैलास शिखरासीन देवदेवं जगदगुरुम् ।
पप्रच्छ प्रणता देवी भैरवं विगतामयम । २ ॥

श्री देव्युवाच
प्रायश्चितेषु सर्वेषु समयोल्लंघनेषु च ।
महाभयेषु घोरेषु तीव्रोपद्रवभूमिषु । ३ ॥

छिद्रस्थानेषु सर्वेष सदुपायं वद प्रभो ।
येनायासेन रहितो निर्दोषश्च भवेन्नरः । ४ ॥

श्री भैरव उवाच

शृणु देवि ! परं गुह्यं रहस्यं परमाद्भुतम् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखनिवारणम् । ५ ॥

प्रायश्चितेषु सर्वेषु तीव्रेष्वपि विमोचनम् ।
सर्वच्छिद्रापहरणं सर्वार्ति विनिवारकम् । ६ ॥

समयोल्लघने घोरे जपादेव विमोचनम् ।
भोगमोक्षप्रदं देवि ! सर्वसिद्धिफलप्रदम् । ७ ॥

शतजाप्येन शुद्धयन्ति महापातकिनोपिये ।
तदर्धं पातकं हन्ति तत्पादेनोपपातकम् । ८ ॥

कायिकं वाचिकं चैव मानसं स्पर्शदोषजम् ।
प्रमादादिच्छयावापि सकृज्जाप्येन शुद्धयति । ९ ॥

यागारम्भे च यागान्ते पठितव्यं प्रयत्नतः ।
नित्ये नैमित्तिके काम्ये परस्याप्यात्मनोऽपिवा । १० ॥

निश्छिद्रकरणं प्रोक्तं स्वभाव परिपूरकम् ।
द्रव्यहीने मन्त्रहीने ज्ञानयोग विवर्जिते । ११ ॥

भक्तिश्रद्धाविरहिते शुद्धिशून्ये विशेषतः : ।
मनोविक्षेपदोषे च विलोमे पशुवीक्षिते । १२ ॥

विधिहीने प्रमादे च जप्तव्य सर्वं कर्मसु ।
नातः परतरो मन्त्रो नातः परतरा स्तुतिः । १३ ॥

नातः परतरा काचित्सम्यक् प्रत्यङ्गिरा प्रिये ।
इयं समय विद्यानां राज राजेश्वरीश्वरि । १४ ॥

परमाप्यायनं देवि ! भैरवस्य प्रकीर्तितम् ।
प्रीणनं सर्वदेवानां सर्वसौभाग्यवर्धनम् । १५ ॥

स्तवराजमिमं पुण्यं शृणुष्वावहिता प्रिये । १६ ॥

अस्य श्रीबहुरूपभट्टारकस्तोत्रमन्त्रस्य, श्रीवामदेव ऋषि, अनुष्टपछन्दः श्रीबहुरूपभट्टारको देवता, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जितपापनिवारणार्थं चतुर्वर्गसिद्धयर्थे बहुरूपगर्भ पाठे विनियोगः । अघोरमन्त्रेण न्यासंकृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ।

अथ ध्यानम

वामे खेटकपाशशार्ङ्गविलसद्दण्डं च वीणाण्टिके
बिभ्राणं ध्वजमुद्गरौ स्वनिभदेव्यङ्कं कुठारं करे।
दक्षेस्यंकुश कन्दलेषुडमरून्वज्रत्रिशूलाभयान्
रुद्रस्थं शरवक्त्रमिन्दुधवलं स्वच्छन्दनाथं स्तुमः ।।

अथ गायत्री

ॐ बहुरूपाय विद्महे, कोटराक्षाय धीमहि, तन्नोऽघोरः प्रचोदयात् ।। ३ ।।

मूलं

ॐ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यश्च सर्वतः शर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपेभ्यः ।। १०८ ।।

ओं नमः परमाकाशशायिने परमात्मने।
शिवाय परसंशान्तनिरानन्दपदाय ते। १ ।।

अवाच्यायाप्रमेयाय प्रमात्रे विश्वहेतवे
महासामान्यरूपाय सत्तामात्रैकरूपिणे । २ ।।

घोषादिदशधाशब्दबीजभूताय शम्भवे ।
नमः शान्तोग्रघोरादिमन्त्रसंरंभगर्भणे । ३ ।।

रेवतीसंगविस्रम्भसमाश्लेषविलासिने ।
नमः समरसास्वादपरानन्दोपभोगिने । ४ ।।

भोगपाणे नमस्तुभ्यं योगीशैः पूजितात्मने।
द्वयनिर्दलनोद्योगसमुल्लासितमूर्तये । ५ ।।

थरहप्रसरबिक्षोभविसृष्टाखिलजन्तवे ।
नमो मायास्वरूपाय स्थाणवे परमेष्ठिने । ६ ।।

घोरसंसारसंभोगदायिने स्थितिकारिणे ।
कलादिक्षितिपर्यन्तपालिने विभवे नमः । ७ ॥

रेहनाय महामोहध्वान्तविध्वंसहेतवे ।
हृदयाम्भोजसंकोच भेदिने शिवभानवे । ८ ॥

भोगमोक्षफलप्राप्तिहेतुयोगविधायिने ।
नमः परमनिर्वाणदायिने चन्द्रमौलये । ९ ॥

घोषाय सर्वमन्त्राणां सर्ववाङ्मयमूर्तये ।
नमः सर्वाय शर्वाय सर्वपाशापहारिणे । १० ॥

रवणाय रवान्ताय नमस्ते रावराविणे ।
नित्याय सुप्रबुद्धाय सर्वान्तरतमाय ते । ११ ॥

घोषाय परनादन्तश्चराय खचराय ते ।
नमोवाक्पतये तुभ्यं भवाय भवभेदिने । १२ ॥

रमणाय रतीशांग दाहिने चित्रकर्मिणे ।
नमः शैलसुताभर्त्रे विश्वकर्त्रे महात्मने । १३ ॥

तमःपारप्रतिष्ठाय सर्वान्त पदगाय ते ।
नमःसमस्ततत्त्वाध्व व्यापिने चित्स्वरूपिणे । १४ ॥

रेवद्वराय रुद्राय नमस्ते रूपरूपिणे ।
परापरपरिस्पन्दमन्दिराय नमो नमः । १५ ॥

भरिताखिलविश्वाय योगिगम्याय योगिने ।
नमः सर्वेश्वरीशाय महाहंसाय शम्भवे । १६ ॥

चर्च्याय चर्चनीयाय चर्चकाय चरायते ।
रवीन्दुसन्धिसंस्थाय महाचक्रेश ते नमः । १७ ॥

सर्वानुस्यूतरूपाय सर्वाच्छादकशक्तये ।
सर्वभक्षाय शर्वाय नमस्ते सर्ववेदिने । १८ ॥

रम्याय वल्लभाक्रान्तदेहार्धाय वियोगिने ।
नमः प्रपन्न दुष्प्राप्यसौभाग्यफलदायिने । १९ ।।

तन्महेशाय तत्त्वार्थवेदिने भववेदिने ।
महाभैरवनाथाय भक्तिगम्याय ते नमः । २० ।।

शक्तिगर्भप्रबोधाय शरण्यायाशरीरिणे ।
शान्तिपुष्टयादिसाध्यार्थ साधकाय नमोऽस्तुते । २१ ।।

रक्तकुण्डलिनीगर्भप्रबोधप्राप्तशक्तये ।
उत्स्फोटनापटुप्रौढपरमाक्षरमूर्तये । २२ ।।

समस्तव्याप्तसंग्रस्तरश्मिजालोदरात्मने ।
नमस्तुभ्यंमहामीनरूपिणे विश्वगर्भिणे । २३ ।।

रेवारणिसमुद्भूतवह्निज्वालावभासिने ।
घनीभूतविकल्पात्मविश्वबन्धविलापिने । २४ ।।

भोगिनीस्यन्दनारूढि प्रौढिमालब्धगर्विणे ।
नमस्तेसर्वभक्ष्याय परमामृतलाभिने । २५ ।।

णफकोटिसमावेशभरिताखिलसृष्टये ।
नमः शक्तिशरीराय कोटिद्वितयसंगिने । २६ ।।

महामोहमलाक्रांतजीववर्गावबोधिने ।
महेश्वराय जगतां नमः कारणबन्धवे । २७ ।।

स्तेनोन्मूलनदक्षैकस्मृतये विश्वमूर्तये ।
नमस्तेस्तुमहादेवनाम्ने परम्वधात्मने । २८ ।।

रुग्द्राविणे महावीर्य रुरुवंशविनाशिने ।
रुद्राय द्रविताशेषबन्धनाय नमोस्तुते । २९ ।।

द्रवत्पररसास्वादचर्वणोद्युक्तशक्तये ।
नमस्त्रिदशपूज्याय सर्वकारणहेतवे । ३० ।।

रूपातीत नमस्तुभ्यं नमस्ते बहुरूपिणे ।
त्र्यम्बकाय त्रिधामान्तश्चारिणे चित्रचक्षुषे । ३१ ॥

पेशलोपायलभ्याय भक्तिभाजां महात्मनाम् ।
दुर्लभाय मलाक्रान्तचेतसांतु नमो नमः । ३२ ॥

भवप्रदाय दुष्टानां भवाय भवभेदिने ।
भव्यानां तन्मयानां तु सर्वदाय नमो नमः । ३३ ॥

अणूनां मुक्तये घोरघोरसंसार दायिने ।
घोरातिघोरमूढानां तिरस्कर्त्रे नमो नमः । ३४ ॥

सर्वकारणकलापकल्पितो-
ल्लाससंकुलसमाधिविष्ठराम् ।
हार्दकोकनदसंस्थितामपि
तां प्रणौमि शिववल्लभामजाम् । १ ॥

सर्वजन्तुहृदयाब्जमण्डलो-
द्भूतभावमधुपानलुम्पटाम् ।
वर्णभेदविभवान्तरस्थितां
तांप्रणौमि शिववल्लभामजाम् । २ ॥

इत्येवं स्तोत्रराजेशं महाभैरवभाषितम् ।
योगिनीनां परं सारं न दद्याद्यस्य कस्यचित् । १ ॥

अदीक्षिते शठे क्रूरे निःसत्ये शुचिवर्जिते ।
नास्तिके च खले मूर्खे प्रमत्ते विप्लुतेऽलसे । २ ॥

गुरुशास्त्रसदाचारदूषके कलहप्रिये ।
निन्दके चुम्भके क्षुद्रेऽसमयज्ञे च दांभिके । ३ ॥

दाक्षिण्यरहिते पापे धर्महीने च गर्विते ।
भक्तियुक्ते प्रदातव्यं न देयं परदीक्षिते । ४ ॥

पशूनां सन्निधौ देवि ! नोच्चार्यं सर्वथा क्वचित् ।
अस्य स्मृतिमात्रेण विघ्ना नश्यन्त्यनेकशः । ५ ॥

गुह्यकाः यातुधानाश्च वेतालाः राक्षसादयः ।
ड़ाकिन्यश्च पिशाचाश्च क्रूरसत्त्वाश्चपूतनाः । ६ ॥

नश्यन्ति सर्वे पठितस्तोत्रस्यास्य प्रभावतः ।
खेचरी भूचरी चैव डाकिनी शाकिनी तथा । ७ ॥

ये चान्ये बहुधा भूता दुष्टसत्त्वा भयानकाः ।
व्याधिदौर्भिक्षदौर्भाग्यमारिमोहविषादयः । ८ ॥

गजव्याघ्राश्च ये घोरा पलायन्ते दिशो दश ।
सर्वे दुष्टाः प्रणश्यन्ति चेत्याज्ञा पारमेश्वरी । ९ ॥

इति श्रीललितस्वच्छन्दे बहुरूपगर्भस्तोत्रराजः संपूर्णः ॥

ही माग्रज्य शारिका छुम बुड़ अरमान
स्वर हुम्र मन्य मंज़ न्यथ चोन ध्यान ॥

१

च्यानि डेढि प्यठ ग्रास प्रभात कालस
अन्दरिम हावस पूर कान्ये
चन्दछन छुस दीन दिम क्याह शाखसान
स्वर हुम्र मन्य मंज़०

२

च़ठतमबन्धन भव पाशव छुस
वुलमुत थुलमुत लंजि हन्दि पग्रठच
कढतम दकदिथ गरिगरि छिम वलान
स्वर हग्र मन्य मज़० ।

३

करतम ग्रनुग्रह वुछहग्र पनुनपान
यथ वुछनुक छुम सख ग्ररमान
हरतम मोह घट वरतम लोल सान
स्वर हग्र० ।

४

शुरि बग्रच़ ग्र'शनाव मायाय लारान
म्यति ज़ांह सारे न चग्रन्यी माय
कांह छुम न पननुय रट कस दामान
स्वर हग्र० ।

५

तापव त्रयव सख चापिथ ब थुवहोस
मलत्रय बनेयम साधन ग्रथ
भावतम तिछ़ श्यछ लभहग्र पज़ ज़ान
स्वर हग्र० ।

६

नख डख रोज़तम गोमुत ब बेड़ाल
वन क्याह हाल मग्रज्य छख महा दयाल
कठिन्यी दुख त दग्रद्य गाज़तख मूलसान
स्वर हग्र ० ।

७

जाल लुग वालवाशि ज़ीव संसारस
ह्यन आव अथि मंज़ सपुद मुबतिला
हावतम तिछ़ वथ रोज़ हय च्य़ लारान
स्वर हअ० ।

८

यछि पछि यम्य चोन रुट मअज्य दामन
लुभ तम्य हंग मंग कैवल्यधाम
अनुग्रह कर चठ यित गछि हंज़ हान
स्वर हअ० ।

९

क्षण क्षण घटि मंज़ वअछ ह्यन आस
थावतम खसि वसि मंज पनुन भास
ज्ञान योगबल रोजहअय च्य़य डेशान
स्वर हअ० ।

१०

अख रछा थव त मअज्य अज़ म्यकुन कन
संकल्पव रुछ थवतम यि मन
हल्य अछर रोजतम लल।'टक्य शेरान
स्वर हअ ० ।

११

रूदुम न योर यिथ कांह ति आब ताब
ईरम मअज्य यति बस तुज नाव
दम यलिय मोरचम रोज फेशान
स्वर हअ ० ।

१२

बनुम सत्गुरु दिम ज्ञानुक दान
मनमाल रोज़िहेम सोहम जपान
ज़ल स्मरण्य तन रोज़हम्र छलान
स्वर हम्र मन्य मंज़ न्यथ च्योन ध्यान ॥

१

मग्रज्य शारिक'य कर दया
वर दया ही भव'नी ।
कर दयाय हन्ज दृष्टी
स्वय छम ब'ड मेहरब'नी ।

२

ग्रायि लारान च्य निश योर
कर्म खुर्य भावग्रनी ।
मतय वुछतम कर्मन कुन
सग्ररी छी पशेमग्रनी ॥ मज्य० ॥

३

कुत ताम रोजि युन तय गछुन
कुत ताम रोजि क्रेशुन वदुन ।
तार दिवान सारिनय छख
ग्रसि ति रोज़ तारग्रनी ॥ मग्रज़्य० ॥

४

कुपुत्र छु माजि ग्रालान
मग्रज्य छन तसति रोशान ।

अस्य मंगान चश्रनी दया
जगतच राजरानी ॥ मश्रज्य० ॥

५

नखि छख डखि छख च़य
च्यय सिवा कांह ति छुन ब्याख ।
दोह त रात चोनुय फिरान
अख सदाह यि रूहअनी ॥ मश्रज्य० ॥

६

ओश वसान च़ालि च़ाले
मश्रज्य भवश्रन्य हावि दर्शुन ।
केंह० ति छुम तगान बोजुन
केंह नय अस्य छि ज़ानश्रनी ॥ मश्रज्य० ॥

७

बूजमुत छु हलि मुशकिल
वुन्य अस्य तवय आय योर ।
अख रछा करतय वुन्य गोर
हिमालच् राजि रश्रनी ॥ मश्रज्य० ॥

८

अष्टादशभुजा च़ छख
जगतस बश्रगरश्रन्यी ।
अस्य ति आमत्य छि ड़ेड़ितल
अनुग्रह छी मंगश्रन्यो ॥ मश्रज्य० ॥

९

अस्य आय चोन दरबार
दारि ओश छु वसश्रन्य़ी ।

कन थव बोज फरियाद
नाद छिय च्य लायश्रन्यी ॥ मश्रज० ॥

१०

पाप शाप कासतम चय
वालतम यिम पाप भश्ररी ।
गीर कुरहोस ब पापव
कें़ह नय छुस न जानश्रनी ॥ मश्रज० ॥

११

लुकचारस मशिथ गोम
बुजरस छुस स्वरान दय ।
कांह् ति यति छा म्यय ह्युह्
श्रन्जलि पोन्य सारश्रन्यी ॥ मश्रज्य० ॥

१२

दासस दर्शुन हाव
सन्मुख मश्रज्य जगतस ।
लोल चानि दोह् तय रात
नाद छुसय लायश्रन्यो ॥ मश्रज्य० ॥

१३

दास छुस दर इन्तिज़ार
भवसागरस दिम तार ।
ल्यम्बि मन्ज पंपोश खार
बोज़तय च म्यश्रन्य ज़री ॥ मश्रज्य० ॥

। आरती माता की ।

आंखें तरस रही हैं दीदार मां दिखा दो।
पत्थरा गई हैं आंखें साकार बनके आओ ॥

२

मैं हूं जन्म जन्म का मूर्ख व अभिमानी।
बेडा मेरा यहाँ से तू पार तो लगावो ॥ आंखें० ॥

३

तेरा न अन्त जाने ज्ञानी ऋषि व मौनी।
बुद्धिहीन कैसे जानूं ऐसा पता बताओ ॥ आँखें० ॥

४

केवल यही है वांछा दर पै रहूँ तुम्हारे।
कुछ भी रहे न चिंता दर ऐसा मां दिखाओ ॥ आँखे० ॥

५

मन में सदा तिहारा दृढ़ ध्यान रूढ़ होवे।
भवकी टलेगी बाधा वह रीति मां जता दो ॥ आंखे ० ॥

६

जिसने तुम्हारा थामा आँचल सदा सलोना।
कैसे उसे डसेगा दुःख नाग मां बतादो ॥ आंखें० ॥

७

खाली हृदय यह मेरा अज्ञान ने यह घेरा।
कैसे बने उजागर वह ज्योति मां जलादो ॥ आँखें० ॥

८

ब्रह्माने तुझको स्मरा शंकर ने तुझको पूजा।
विष्णु मुकट नत्रा के आदेश मां बतादो आंखें० ॥

९

जिसने तुझे बिसारा उसका बना बिगाडा।
प्राणी भला है तेरा जय माँ सदा तू गावो ॥ आंखें० ॥

१०

आया सुदूर से मैं जब तुमने मां बुलाया।
कर जोड़े दर पैबैठा आंखें ज़रा उठावो आंखें० ॥

११

कितने हज़ारूं प्राणी आते न जाने कैसे।
दर्शन तुम्हारा पाके पाते न क्या बतावो आंखें० ॥

१२

सूखी कंटीली मन की वाटी को मेरी निशिदिन।
अपने सुप्रेम रस से फल पूर्ण मां बना दो आंखे० ॥

१३

डाली गले में मेरे तेरे गुणों की माला।
जिसने मुझे तू उसके चरणों की रज बना दो आंखें० ॥

१४

परवाना बनके बैठा शमह तू मां है मेरी।
तेरा विरह न पलको कैसे सहूं बता दो आंखें० ॥

१५

माया के संग फंसा मैं खाता हूं ठोकरे मैं।
चरणों का जल पिलाके भ्रम जाल से निकालो आंखे ॥

१६

पानी विना ज्यों मछली जीती न छट पटाती।
तुझसे बिछुड़के कैसे जीता हूं यह बता दो आंखें० ॥

१७

मन में मनन किये ही आँखों में क्यों न छाती।
पथ से कहाँ डिगा मैं गुरु बनके माँ बताओ आंखें० ॥
आंखें तरस रही है दीदार मां दिखा दो।
पत्थरा गई हैं आंखें सरकार बनके आवो ॥

प्रसीद परदेवते! मम हृदि प्रभूतं तमो।
विदारय दरिद्रतां दलय देहि सर्वज्ञताम्।।
निधेहि करुणानिधे! चरणपद्मयुग्मंस्बकं।
विदारित जरामृतिं त्रिपुरसुन्दरि! श्री ईश्वरि!।।

ही जगतमाता रोजतम दयाये
गालतम हृदयुक मूह घटकार।
दारिद्र्यभाव म्योन दश्रन्य रम्रविथ म'श्रज्य
सोरुय ज़ाननुक दितम सत्कार।
ही दयासागर म'श्रज्य त्रिपुरसुन्दरी
हृदयस मज़ छुम बुड श्ररमान।
थावतम इचकस प्यठ दुन पाद्यकमलन
बुज्यरच्य त मरनच्य चल्यहेम हान।।

।श्री इन्द्राक्षीस्तोत्रम्।

अस्य श्री इन्द्राक्षीस्तोत्र मन्त्रस्य पुरन्दर ऋषि, अनुष्टुप्छन्दः, श्री इन्द्राक्षी देवता, ह्रीं बीजं श्रींशक्ति, क्लीं कीलक, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जित पाप निवारणार्थं सर्वं शुभफल प्राप्त्यर्थं श्री इन्द्राक्षी देवता सन्तोषणार्थं पाठे विनियोगः।

ध्यानम्।

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्रधरां शुभां।
वामे वज्रधरां सव्य हस्तेऽभयवर प्रदाम्।
सहस्रनेत्रां सूर्याभां नानालंकार भूषितां
प्रसन्नवदनां नित्यं अप्सरोगण सेविताम्।।
श्रीदुर्गां सौम्यवदनां पाशांकुशधरां परां।
त्रैलोक्यमोहिनीं देवीं भवानीं प्रणमाम्यहम।।

द्रुन नरचन धारव'न्य, कल्याण रूप सग्रस
ल्यदरघव वस्त्रव किन्य छि प्रजलान।
खोवुरिस अथस वयथ वज्रस धारवन्य
दछिन्यि अथ स'त्यन वर अभय दिवान।
त्रैलोक्य सुन्दरी दीवी भवअन्यी
इन्द्राक्षी भगवती तस ब गुल्य गड़ान ॥
सास नेत्रव सग्रस सूर्य हिश ज़ोतान
रंग ब रय़ गहनव किन्य छि प्रज़लान।
युस सदा माता असव'न्य मुख स'ग्रस
स्वर्गचिय अछरछ़ यस सीवान।
त्रैलोक्य सुन्दरी दीवो भवअनी
इन्द्राक्षी भगवती तस ब गुल्य गंड़ान ॥
सुन्दर मुख सग्रस युस परा भगवती
सारिन्यी दुख त द'अध्य दूर युस करान।
फांसि रज्ज वहरिथ खोवरिस अथस यस
टोंगुन ब्ययि अथ युस धारान।
त्रैलोक्य सुन्दरी देवी भवअ'नी
इन्द्राक्षी भगवती तस ब गुल्य गंड़ान ॥

॥ गायत्री ॥

शचीपतये विदमहे पाकशासनाय धीमहि, तन्नो इन्द्रः प्रचोदयात् ॥ ३ ॥
ॐ ह्रीं अंगुष्टाभ्यां नमः, श्रीं तर्जनीभ्यां नमः इन्द्राक्षी भगवत्यै मध्यमाभ्यां नमः, श्रीं अनामिकाभ्यां नमः, पें कनिष्ठिकाभ्यां नमः, नमः करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ॥

ॐ ह्रीं हृदय य नमः, श्रीं शिरसे स्वाहा, इन्द्राक्षी भगवत्यै शिखायै वौषट्, श्रीं कवचाय हुम, पें नेत्र त्रयाय वषट नमः अस्त्राय फट् ।
ॐ ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं पें नमः । १०८ ।

१

ॐ इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता।
गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता ॥

२

कान्त्यायनी महादेवी चन्द्रघन्टा महातपाः ।
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥

३

नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला ।
अग्निज्वाला रुद्रमुखी कालरात्री तपस्विनी ॥

४

मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी ।
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥

५

आनन्दा भद्रजा नन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया ।
शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी ॥

६

इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिपरायणा ।
महिषासुरसंहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता ॥

७

वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥

८

आनन्दा विजया पूर्णा मनस्तोषा अपराजिता ।
भवानी पार्वती दुर्गा हैमवती अंबिका शिवा ॥

९

शिवा भवानी रुद्राणी शंकरार्धं शरीरिणी ॥

एतैः नामपदैः दिव्यैः स्तुता शंकेण धीमता ।
आयुः आरोग्य ऐश्वर्यं सुखसंपत्ति कारकं ।।
क्षयापस्मार कुष्टादि ताप ज्वर निवारकम् ।।
शतं आवर्तयेत् यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।
आवर्तयेत् सहस्रेण लभते वांछितं फलम् ।।
राजा वशं अवाप्नोति सत्य एव न संशयः ।
लक्षं एकं जपेत्यस्तु साक्षात् देवी स पश्यति ।।
त्रिकालं पठते नित्य धन धान्यादि संपदः ।
अर्धरात्रे पठेत् नित्य मुच्यते व्याधि बन्धनात् ।।
इत स्तोत्रं महापुण्यं जपे तु फलवर्धनं ।
विनाशाय च रोगाणां अपमृत्युः हरति च ।।
राज्यार्थी लभते राज्यं धनार्थी विपुलं धनं ।
इच्छा कामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्मपक्षयम्
विद्यार्थी लभते विद्यां मोक्षार्थी परमं पदं ।
इन्द्रेण कथित स्तोत्रं सत्यं एव न संशयः ।।
इति श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रं समाप्तम् ।।

श्री गणेश पर जल चढ़ाने का मन्त्र ।

गणानान्त्वां गणपति हवामहे कविं कवीनां उपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन् ऊतिभिः सीद सादनम् ।।

भगवते विनायकाय एकदन्ताय कृष्ण [illegible] गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय [illegible] विघ्नभक्षयाय वल्लभा-सहिताय श्रीमहागणेशाय चतुर्दश स्नानानि नमः ।।

[illegible] महादेव पर जल चढ़ाने का मन्त्र :—

असंख्या [illegible] सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्यां । तेषां सहस्र [illegible]
[illegible] तन्मसि । यो [illegible] अग्नौ यो अप्सु यः [illegible] ओषधीषु यो
[illegible] यो रुद्र विश्वा भुवना [illegible] महाय
[illegible] अस्तु देवाः [illegible] भवाय [illegible] देवा
[illegible] पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भी[illegible]

देवाय, ईशानाय देवाय, ईश्वराय देवाय, उमासहिताय शिवाय, पार्वती सहिताय परमेश्वराय पंचदश स्नानानि नमः ॥

माता पर जल चढाने का मन्त्र ;—

जातवेदसे सुनवाम सोमं अराती यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥
भगवत्यै, अम्बायै, कामायै, चार्वंग्यै टंकधारिण्यै, तारायै, पार्वत्यै, यक्षिण्यै श्री शारिका भगवत्यै, श्री शारदा भगवत्यै, श्री महाराज्ञी भगवत्यै श्री ज्वाला भगवत्यै, व्रीडा भगवत्यै, वैखरी भगवत्यै, वितस्ता भगवत्यै, गंगा भगवत्यै, यमुना भगवत्यै, महा कालिका भगवत्यै, महालक्ष्मी भगवत्यै, महासरस्वती भगवत्यै, सिद्धलक्ष्म्यै, महालक्ष्म्यै, महात्रिपुरसुन्दरी भगवत्यै, सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अष्टौ स्नानानि नमः ॥

॥ समाप्तम् ॥

गणानां
ज्येष्ठराज
सदस ।

भगवते
भालच
सहिताय

असंख्या

भवाय देव

रुद्राय देवाय, पशुपतये देवाय, उग्राय देवाय, भी

वाय,

नः

ंदैये, राज्ञी वश्ये, लका ध्ये, वाग्ये

ॐ

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो नमोः धर्माय विष्णवे नमो यमाये रूद्राय कान्ताये नमः। ॐ तत्सत् ब्रह्म। पि पितामहाय प्रपितामहाय। मात्रे पितामहाय प्रपितामहाय। मातामहाय। प्रमातामहाय। वृद्ध प्रमामहाये।

माता मातामही प्रमातामही वृद्ध प्रमाता मही। समस्त मातापितृभ्यः दीपः स्वधा। धूपः स्वधा स्वधा।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि । श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥ १० ॥

रामाष्टकमिदं पुण्यं प्रातःकाले तु यः पठेत् ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥

इति श्रीरामाष्टकं संपूर्णम् ॥

अच्युताष्टकम् ।

श्रीगणेशाय नमः । अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्ण[illegible]दरं वासुदेवं हरिम् । श्रीधरं माधवं गोपि[illegible] जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥ १ ॥ अच्युतं केशवं [illegible] त्यभामामाधवं माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम् । [illegible] [illegible]तसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं [illegible] [illegible]ष्णवे जिष्णवे चक्रिणे रुक्मिणीरागि[illegible] [illegible] । वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने कंसवि[illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ कृष्ण गोविन्द हे राम ना[illegible] [illegible]वाजित श्रीनिधे । अच्युतानन्त हे

हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च । वेदै-
सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ ६ ॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवै-
ष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ७ ॥

इति श्रीभगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योग-
शास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सप्तश्लोकीगीता समाप्ता ॥

॥ अथ रामाष्टकम् ॥

ओं श्रीरामचन्द्राय नमः ॥ श्रीराम राम रघुनन्दन
राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम । श्रीराम
राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव
राम राम ॥ १ ॥ श्रीराम राम दिविजेश्वर राम राम
श्रीराम राम मनुजेश्वर राम राम । श्रीराम राम जग-
दीश्वर राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम
॥ २ ॥ श्रीराम राम त्रिगुणाश्रय राम राम श्रीराम
राम जगदाश्रय राम राम । श्रीराम राम कमलाश्रय
राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥ ३ ॥

श्रीराम राम गुणसागर राम राम श्रीराम राम गु-
णभूषण राम राम । श्रीराम राम गुणभाजन राम राम श्रीराम राम शरणं भव० ॥ ४ ॥ श्रीराम राम शुभमङ्गल राम राम श्रीराम राम शुभलक्षण राम राम । श्रीराम राम शुभदायक राम राम श्रीराम राम शरणं भव० ॥ ५ ॥ श्रीराम राम स्वजनप्रिय राम राम राम राम सुमुनिप्रिय राम राम । श्रीराम राम सुरकोविद राम राम श्रीराम राम शरणं भव [illegible] ॥ श्रीराम राम कमलाकर राम राम श्रीराम राम कमलेक्षण राम राम । श्रीराम राम क-[illegible] राम राम श्रीराम राम शरणं भव० ॥ ७ ॥ श्रीराम राम दनुजान्तक राम राम श्रीराम राम दुरि-[illegible] राम राम । श्रीराम राम नरकान्तक राम राम श्रीराम राम शरणं भव० ॥ ८ ॥ श्रीरामचन्द्रः स [illegible] रामचन्द्रमणिं विधाय । श्रीच-[illegible] चकार [illegible] शरणं गिरीशः॥६॥

माधवाधोक्षज द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक ॥ ४ ॥ राक्ष-
सक्षोभित सीतया शोभितो दण्डकारण्यभूपुण्यताका-
रणः । लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितोऽगस्त्यसंपूजितो
राघवः पातु माम् ॥ ५ ॥ धेनुकारिष्टकोऽनिष्टकृद्द्वेषिणां
केशिहा कंसजिद्वंशिकावादकः । पूतनाकोपकः सूरजाखे-
लनो बालगोपालकः पातु मां सर्वदा ॥ ६ ॥ विद्युदु-
द्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं प्रावृडंभोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम् । व-
न्यया मालया शोभितोरःस्थलं लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजा-
क्षं भजे ॥ ७ ॥ कुंचितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं रत्नमौलिं-
लसत्कुण्डलं गण्डयोः । हारकेयूरकं कङ्कणप्रोज्ज्वलं किं-
किणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे ॥ ८ ॥ अच्युतस्याष्टकं
यः पठेदिष्टदं प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम् । वृत्ततः सु-
न्दरं कर्तृविश्वम्भरं तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम् ॥९॥
इति श्रीशङ्कराचार्यविरचितमच्युताष्टकं संपूर्णम् ॥

अथ त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रम् ॥

श्री त्रिपुरसुन्दर्यै ॥ कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्ब-

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

बधाई ! महान पर्व महाशिवरात्रि पर ।



ॐ कैलासशैलविनिवास वृषाकपे
हे मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास ।
नारायणप्रिय मदापह शक्तिनाथ
संसारदुःखगहनाज्जगदीश रक्ष ॥

" Om Kailash Shaalvinivas Vrshakapay,
Haay Mritunjay Trinayan Trijagata Nivas,
Narayanpriya Madapaha Shaktinath,
Sansardukhgahanat Jagateesh Rakhsha "

O thou who dwellest on Mount Kailash ! Thou whose carrier is the bull ! O conqueror of death ! O Three eyed one ! Lord of the three worlds ! Beloved of Narayana, slayer of wish ! Thou Shakti's Lord !

As I am helpless, bowing to your Lotus feet (tonight, Night of Shiv Ratri) Rescue me from the trackless forest of this miserable world.

Om Shanti ! Shanti ! Shanti !

Chairman / Founder
Swami Svayamananda Ashram
Maha Maya Mata Uma Devi Temple
Lower Roop Nagar, Muthi - II, Jammu (J&K)
Phone 592822

AWAKE

ARISE ACT

ATTAIN

'महा शिवरात्री मुबारक'



ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च
नमः शंकराय च मयस्कराय च
नमः शिवाय च शिवतराय च ।

We offer our Salutations to Thee—the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee—the Auspiciousness. We offer our Salutations to Thee—the Bestower of Bliss and still greater Bliss.

May the auspicious Maha Shivratri bestow us peace and prosperity along with whole world.

Om Shanti ! Shanti ! Shanti !

Chairman/Founder
Swami Svayamananda Ashram
Maha Maya Mata Uma Devi Temple
Lower Roop Nagar, Muthi-II, Jammu (J&K)

शङ्खचक्रगदा शाङ्ख गृहीत
परमायुधे
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि
नमोऽस्तुते

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

जगत् अम्बा माता उमा देवी

वार्षिक महायज्ञ - 1997

माता उमा देवी मन्दिर (Lower Roop Nagar) मुट्ठी, जम्मू ।

मूल मन्त्र

विश्वे-श्वरि त्वं परिपासि विश्वं

विश्वा-त्मिका धारयसीति विश्वम् ।

विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति

विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः ॥

(दुर्गा-अ.ए.श्लो.-३३)

अर्थ : विश्व की स्वामिनी ! तुम विश्व का पालन करती हो, विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो । तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो । जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

VISHVESHWARI TUOM PARIPĀSI VISHWAM

VISHWĀTMIKĀ DHĀRYASITI VISHWAM

VISHWESH VANDYĀ BHAVTI BHAWANTI

VISHWĀSHRAYĀ YE TOUYI BHAKTI NAMRĀH

O Queen of the universe, you protect the universe. As the self of the universe, you support the uni[illegible] You are the (Goddess) worthy to be adored by the [illegible] of the universe. Those who bow in devotion to you [illegible] selves become the rufuge of the universe.

Ā-आ (ा), Ī-ई (ी), BH-भ

सोमा भवतु[illegible]

स्वयमानन्द [illegible]

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

सुभगा जेजान सध. मागाद्धवीसा
सांविदाना।
नारायणाय

लक्ष्मीसहिताय
अनुलेपनं नमः

ॐ

1988

मूलमंत्र महायज्ञ उमानगरी

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च ॥

हे अनुत्तर प्रकाशमयी ! अपने त्रिशूल (इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति) से ह[illegible] रक्षा कीजिए । हे भगवती अम्बा (पारमेश्वरी शक्तिविशेष) ! अपनी तलवार, घण्टा के [illegible]नाद और धनुष की मौर्वी की टङ्कार [illegible] ह[illegible] रक्षा कीजिए ।

O, The embodiment of S[illegible] [illegible] Light [illegible] protect us with Thy [illegible] [illegible] Shakti, Jnana-Shakti, Kri[illegible]-Shakti [illegible] Goddess Amb[illegible] [illegible] particular form [illegible] Divine-Shakti) protect us with thy [illegible] sound [illegible] [illegible] and the twang of [illegible]

[illegible]yamananda

Bansi Art Press

सुभगा जं जान सधमागा द्रुर्वसा संविदाना। नारायणाय
लक्ष्मीसहिताय अनुलेपनं नमः

1988

मूलमंत्र महायज्ञ उमानगरी

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
घण्टास्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निःस्वनेन च ॥

हे अनुत्तर प्रकाशमयी ! अपने त्रिशूल (इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति, क्रिया-शक्ति) से हमारी रक्षा कीजिए । हे भगवती अम्बा (पारमेश्वरी शक्तिविशेष) ! अपनी तलवार, घण्टा के [illegible]नाद और धनुष की मौर्वी की टङ्कार से हमारी रक्षा कीजिए ।

O, The embodiment of S[illegible] Divine Light ! protect us with Thy t[illegible] [illegible] Shakti, Jnana-Shakti, Kriya-Shakti [illegible] Goddess Amba ! (particular form [illegible] Divine Shakti) protect us with thy [illegible] sound of bell and the twang of [illegible]

[illegible]vanananda

Bansi Art Press

A-3[illegible]

[illegible] PRINTERS PATOLI, JAMMU-[illegible]

विपस्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्। वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय चरणाम् तं गृह्णामि नमः॥

अासनाय नमः गरुडासनाय नमः शतदलपद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभ भूषणाय। लक्ष्मीकलत्राय किमस्ति देवं वागीश किं ते वचनीयमस्ति॥

नमामी नारायण। पादपङ्कजम्। करोमि नारायण - पूजनं सदा। वदामि नारायण। नामनिर्मलं स्मरामि नारायण। तत्वमव्ययं गोविन्द २ हरेमुरारे। गोविन्द रथाङ्गपाणे। गोविन्द २ मुकुन्द गोविन्द २ नमो नमस्ते। उत्तिष्ठ भगवान्विष्णो उत्तिष्ठ। कमलानाम उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ। [illegible] नं कुरु। रघे अहोघृषमस्य [illegible]

[illegible] वरुणस्य राष्ट्रे [illegible]



(1) भगवते वासुदेवाय
लक्ष्मीसहिताय नारायणाय
मन्त्र गरुड़कं नमः)

(2) उद्दामने हंसाहूरः भृगोहि विपवत:*
प्रति। यातुधानस्य रक्षसो दहवि
रूज वीर्यम। भगवते वासुदेवाय
लक्ष्मीसहिताय नारायणाय आरात्रि
कं पारिकल्प याम्नि नमः—)

(3) तां वां वास्तुन्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो
भूरिशृङ्गा अयासः। अत्राह तदु
गायस्य वृष्णः परमं पदमव
भाति भूरि। नेत्रस्पर्शं नमः।)
गन्धकं चन्दनं चक्रं शङ्खस्य
तुलसीदलम। धम्रशिला
नामत्रमन्त्रम् ... चरणामृतम।
ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा
पश्यन्ति सूरयः दिवीव
चक्षुराततं। तद्विप्रासो

ॐ

1987

मूलमंत्र महायज्ञ उमानगरी

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
    रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् ।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
    त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥

Shri Durga Saptshati XI - 29

देवि ! तुम प्रसन्न होने पर सब रोगों को नष्ट कर देती हो और कुपित होने पर मनोवाञ्छित सभी कामनाओं का नाश कर देती हो। जो लोग तुम्हारी शरण में जा चुके हैं, उनपर विपत्ति तो आती ही नहीं। तुम्हारी शरण में गये हुये मनुष्य दूसरोंको शरण देने वाले हो जाते है।

O, Durga ! Thou in Thy acquiescent mood wardest off (our) all maladies, and in Thy provoke mood the drive of (our) desires; no misfortune ourtakes persons who have taken refuge with Thee; they (who have taken refuge) even become a shelter fo: other seekers.

Svayamananda

Bansi A

~~उत्क~~

उत्कृष्ट शिक्षाओं:

स्वयमानन्द

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

मूलमंत्र for 1985, महायज्ञ

ओमा नगरी 21st to 23rd sept.

एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् ।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायानि नमोऽस्तुते ॥

XI-25 (दु-स०)

कात्यायनी ! यह तीन लोचनों विभूषित तुम्हारा सौम्य मुख सब प्रकार के भयों से हमारी रक्षा करे । तुम्हें नमस्कार है ।

O Katyayani, Thy triple-eyed this auspicious countenance may protect us all from Fear ! Salutations be to Thee.

(Svayamananda)

BANSI ART PRESS

॥ श्री दुर्गायै नमः ॥

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ।

XI - 24

Thou, O Devi, Immanent in all forms, Supreme over all, Embodiment of all powers, protect us against all Fear. Salutation be to Thee, Devi Durga (Saviour)!

सर्वस्वरूपा, सर्वेश्वरी तथा सब प्रकार की शक्तियों से सम्पन्न दिव्यरूपा दुर्गे देवि । सब भयोंसे हमारी रक्षा करो, तुम्हें नमस्कार है ॥

Ahuti Mantra at 'Uma Nagri' Mahayajna on 3rd / 4th September, 1984.

Bansi Art Press,

स्वयमानन्द ...
JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

न जानामि चान्यत सदाहं शरण्ये
विवादे विबादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रु मध्ये
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि
अनाथो दरिद्रो जरारोग युक्तो
महाक्षीणदीनः सधा जाड्यवक्त्र
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहम्)
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका-
भवानि)

Bansi A

ॐ

न तातो न मातर न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता
न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानी
भवाब्धावपारे महादुःखभीरु
पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्त
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहम ।१
न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रं
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मातर
कुकर्मी कुसङ्गी कुबुद्धिः कुदासः
कुलाचारहीनः कदाचारलीनः
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्
[illegible] रमेशं महेशं सुरेशं
[illegible] निशीथेश्वरं वा कदा[illegible]

[illegible] स्वयमानन्द [illegible]

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

ॐ

दुर्गे स्मृता हरसि
भीतिम्-अशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिम्-
अतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःख - भय-
हारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार-करणाय
सदाऽऽर्द्रचित्ता। श्लोक १७।

(दुर्गासप्तशती अध्याय ४)

अर्थः- माँ दुर्गे ! आप स्मरण करने पर सब प्राणियों का भय हर लेती हैं और स्वस्थ पुरुषों द्वारा चिन्तन करने पर उन्हें परम कल्याणमयी बुद्धि प्रदान करती हैं। दुःख, दरिद्रता और भय हरने वाली देवि ! आप के बिना दूसरा कौन है जिसका चित्त सबका उपकार करने के लिये सदा ही दयार्द्र रहता है।

"स्वयमानन्द"

Vinod Printing Press Bijbehara

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

जगत् अम्बा माता उमा देवी
वार्षिक महायज्ञ - 1997

माता उमा देवी मन्दिर (Lower Roop Nagar) मुट्ठी, जम्मू ।

मूल मन्त्र

विश्वे-श्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वा-त्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति
विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः ॥

(दुर्गा-अ.ए.श्लो.-३३)

अर्थ : विश्व की स्वामिनी ! तुम विश्व का पालन करती हो, विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो । तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो । जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

VISHVESHWARI TUOM PARIPĀSI VISHWAM
VISHWĀTMIKĀ DHĀRYASITI VISHWAM
VISHWESH VANDYĀ BHAVTI BHAWANTI
VISHWĀSHRAYĀ YE TOUYI BHAKTI NAMRĀH

O Queen of the universe, you protect the universe. As the self of the universe, you support the universe. You are the (Goddess) worthy to be adored by the Lord of the universe. Those who bow in devotion to you them selves become the rufuge of the universe.

Ā-आ (ा), Ī-ई (ी), BH-भ

सोमा भवतु [illegible]
स्वयमानन्द [illegible]

[illegible] PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

शङ्खचक्रगदा शार्ङ्ग गृहीत
परमायुधे
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि
नमोऽस्तुते

AWAKE

AWAKE

ARISE ACT

ATTAIN

'महा शिवरात्री मुबारक'



ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च

नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च ।

We offer our Salutations to Thee—the Giver of Happiness. We offer our Salutations to Thee—the Auspiciousness. We offer our Salutations to Thee —the Bestower of Bliss and still greater Bliss.

May the auspicious Maha Shivratri bestow us peace and prosperity along with whole world.

Om Shanti ! Shanti ! Shanti !

Chairman/Founder

Swami Svayamananda Ashram

Maha Maya Mata Uma Devi Temple

Lower Roop Nagar, Muthi-II, Jammu (J&K)

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

जगत् अम्बा माता उमा देवी
वार्षिक महायज्ञ - 1997

माता उमा देवी मन्दिर (Lower Roop Nagar) मुट्ठी, जम्मू ।

मूल मन्त्र

विश्वे-श्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वा-त्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति
विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति-नम्रा: ॥

(दुर्गा-अ.ए.श्लो.-३३)

अर्थ : विश्व की स्वामिनी ! तुम विश्व का पालन करती हो । विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो । तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो । जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं ।

VISHVESHWARI TUOM PARIPĀSI VISHWAM
VISHWĀTMIKĀ DHĀRYASITI VISHWAM
VISHWESH VANDYĀ BHAVTĪ BHAWANTI
VISHWĀSHRAYĀ YE TOUYI BHAKTI NAMRĀH

O Queen of the universe, you protect the universe. As the self of the universe, you support the universe. You are the (Goddess) worthy to be adored by the Lord of the universe. Those who bow in devotion to you themselves become the rufuge of the universe.

Ā-आ (ा), Ī-ई (ी), BH-भ

सोमा भवतु तुष्टा
[illegible]मानन्द फलदायनी

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

AWAKE

सी जी की आरती

य २ तुलसी माता । सब जगकी सुखदाता
ा वरदाता । सब योगों के ऊपर सब रोगों के
् रज रचा करके भव त्राता । बहु पुत्री है
ासुर बल्ली है श्राम्या ॥ विष्णु प्रिए जो तुमको
ो तरजाता । हरिके शीश विराजत त्रिभुवन
े है बन्दित । पतित जनोंकी तारण, तुमहो
विख्यता ॥ लेकर जन्म बिजन में, आई दिव्य
न में । मानव लोक तुम्हीं ते, सुख सम्पति पाता ।
रिकी अति प्यारी, तुम श्याम वरण सुकुमारी,
ा अजब है उनका तुमसे कैसा नाता ॥

A-आ (1),

।। श्री केदारेश्वरो विजयते ।।

श्री केदारनाथ जी के तीर्थ पुरोहित

पं० नरेन्द्र किशोर तिवारी

आत्मज

स्व० पं० मुन्नालाल तिवारी

ग्राम दीवली, पो० लमगौंडी (गुप्तकाशी)

जिला चमोली (उ० प्र०) पिन० न० 246439

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना

महाराज्ञी आरती

" उद्यद्दिवाकरसहस्ररुचिं त्रिनेत्रां
सिंहासनोपरिगतामुरगोपवीताम् ।
खड्गाम्बुजाढ्यकलशामृतपात्रहस्तां
राज्ञीं भजामि त्रिकसद्वदनारविंदाम् ॥

—:०:—

प्रकाशक :
गीताभवन कथाकेन्द्र
सोमयार, हब्बाकद

The Normal Press, Srinagar

गौरीस्तुतिः

लीलारब्धस्थापितलुप्ताखिललोकां, लोकातीतैर्योगिभिरन्तर्हृदि मृग्याम् ।
बालादित्यश्रेणिसमानद्युतिपुञ्जां गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥

आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां पादाम्भोजध्यानपराणां पुरुषाणाम् ।
ईशीमीशाङ्गार्धहरां तां तनुमध्याम् । गौरीमम्बां ०

प्रत्याहारध्यानसमाधिस्थितिभाजां नित्यं चित्ते निर्वृतिकाष्ठां कलयन्तीम् ।
सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तडिदाभाम् । गौरीमम्बां ०

चन्द्रापीडानन्दितमन्दस्मितवक्त्रां चन्द्रापीडालंकृतलोलालकभाराम् ।
इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्माम् । गौरीमम्बां ०

नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका ।
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजाम् । गौरीमम्बां ०

मूलाधारादुत्थितवर्त्मा विधिरन्ध्रं सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम् ।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामभिवन्द्याम् । गौरीमम्बां ०

आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं भूते भूते भूतकदम्बं प्रसवित्रीम् ।
शब्दब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामाम् । गौरीमम्बां ०

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं भूयो भूयः प्रादुरभूदक्षतमेव ।
मर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीम् । गौरीमम्बां ०

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला सूत्रे यद्वत्क्वापि चरं चाप्यचरं च ।
तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयाम् । गौरीमम्बां ०

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च ।
विश्वत्राणक्रीडनशीलां शिवपत्नीं गौरीमम्बां ०

प्रातः (सायं) काले भावविशुद्धविदधानो भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः ।
वाचां सिद्धिं सम्पत्तिमुच्चैः शिवभक्तिं तस्यावश्यं पर्वतपुत्री विददाति ॥

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जगदीश हरे, भगत जनों के संकट क्षण में दूर करे
—ओं जय जगदीश हरे—

जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मन का सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका
—ओं जय जगदीश हरे—

मात पिता तुम मेरे चरण गहूँ किसकी तुम बिन और न दूजा आस करूँ किसकी
—ओं जय जगदीश हरे—

तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी पारब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी
—ओं जय जगदीश हरे—

तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता
—ओं जय जगदीश हरे—

तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति किस विध मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति
—ओं जय जगदीश हरे—

दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे अपने चरण लगाओ द्वार पड़ा तेरे
—ओं जय जगदीश हरे—

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा
—ओं जय जगदीश हरे—

तन मन धन सब कुछ है तेरा तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा।
—ॐ जय जगदीश हरे—

ध्यानरत्नमाला

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्यकलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिलुठन्तः समयिनः ।
जगतमातर्जन्मज्वरमयतमःकौमुदि वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरणमुपयामो भगवतीम् ॥

भवानि ! त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा
मिति स्तोतुं वांछन् कथयति भवानि त्वमिति यः
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमुकटनीराजितपदाम् ॥

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सद्म गृहणी
वपुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा मां विजहति ।

तदा मे भिन्दाना सपदि भयमोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने मातर्भव करुणया सन्निधिकरी ।।

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगणः
त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयाद् त्रातुं दातुं वरमपि च वाँछा समधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ।।

न जानामि ध्यानं तव चरणयोः प्रीतिजननं
न जानामि न्यासं मननमपि मातर्न गिरिजे ।
तदेतदक्षन्तव्यं न खलु सत्वरोषः समुचितं
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ।।

महाराज्ञी भवानी

दिम म्य रच़ त शुद्ध वाणी महाराज्ञी भवानी ।
यछ त पछ़ छम म्य च्या'नी महाराज्ञी भवानी ।।१।।

मंगहाय चेय ब वरदान छुम न मंगनुक म्य त्युथ ज्ञान
रूज़ मे चान्य म्य निगरानी महाराज्ञी० ।।२।।

यलि न च थवक म्याज कल वन कस ब छुस दुर्बल
कुस लभन च़ेय ह्यु ब दानी महाराज्ञी० ।।३।।

यल छु चोनुय योत दरबार पूर बरि बरि छि अंबार
तोलनस छि ब्रह्म ज्ञानी महाराज्ञी० ।।४।।

कांह अखा ति आशावान वाति युस चे निश माग्यि सान
लभि न ज़ांह सु मान हानी महाराज्ञी० ।।५।।

यस च़ रोज़ख पान डखिदार दिख सुमन भक्त अधिकार
पोरि कुस तस प्राणी महाराज्ञी० ।।६।

भक्तिभावस च़ छख ला'र फल दिनस छा च़े निश ता'र
छुय चे़ नाव ईशानी महाराज्ञी० ।।७।।

छख शिवा च़ शिव शक्ति चय हय युक्ति त मुक्ति
च़य उमा च़य ब्रह्माणी माता राज्ञी० ।।८।।

नव निधान छिय च़े बडि कोश दिम म्य परम सुख त 'संतोष'
छुस मंगान ब सुय च़े ज्यानी महाराज्ञी० ।।९।।

AWAKE

ARISE ॐ ACT

ATTAIN

जगत् अम्बा माता उमा देवी
वार्षिक महायज्ञ - 1997

माता उमा देवी मन्दिर (Lower Roop Nagar) मुठी, जम्मू ।

मूल मन्त्र

विश्वे-श्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वा-त्मिका धारयसीति विश्वम् ।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ति
विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति-नम्राः ॥
(दुर्गा-अ.ए.श्लो.-३३)

अर्थ : विश्व की स्वामिनी ! तुम विश्व का पालन करती हो। विश्वरूपा हो, इसलिये सम्पूर्ण विश्व को धारण करती हो। तुम भगवान् विश्वनाथ की भी वन्दनीया हो। जो लोग भक्ति पूर्वक तुम्हारे सामने मस्तक झुकाते हैं, वे सम्पूर्ण विश्व को आश्रय देने वाले होते हैं।

VISHVESHWARI TUOM PARIPĀSI VISHWAM
VISHWĀTMIKĀ DHĀRYASITI VISHWAM
VISHWESH VANDYĀ BHAVTĪ BHAWANTI
VISHWĀSHRAYĀ YE TOUYI BHAKTI NAMRĀH

O Queen of the universe, you protect the universe. As the self of the universe, you support the universe. You are the (Goddess) worthy to be adored by the Lord of the universe. Those who bow in devotion to you themselves become the rufuge of the universe.

सोमा भवतु सन्तुष्टा
सर्वानन्द फलदायनी

A-आ (ा), I-ई (ी), BH-भ

JYOTI PRINTERS PATOLI, JAMMU-572617

तुलसी जी की आरती

जय २ तुलसी माता । सब जगकी सुखदाता
ाता बरदाता । सब योगों के ऊपर सब रोगों क
ऊपर रज रक्षा करके भव त्राता । बहु पुत्री है
यामासुर बल्ली है ग्राम्या ॥ विष्णु प्रिए जो तुमको
वे सो तरजाता । हरिके शीश विराजत त्रिभुवन
से हे बन्दित । पतित जनोंकी तारण, तमहो
विख्याता ॥ लेकर जन्म विजन में, आई दिव्य
में । मानव लोक तुम्हीं ते, सुख सम्पति पाता ।
रिकी अति प्यारी, धुम श्याम वरण सुकुमारी,
म अजब है उनका तुमसे कैसा नाता ॥

गौरी अस्तुति

लीलारब्धस्थापित लुप्ताखिललोका
...तैर्योगिभिरन्तहृ...भाव्याम्
बालादित्य श्रेणि स्मानद्योत पुञ्जाम्
गौरींअम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे ॥१॥

लीलायि किन उपदावान ठहरावान,
लोका लोकन नाश चूय करान
लोकन निश दूर रूज़िथ यिम योगी,
हृदयस मंज़ तिम च्यि छान्डान
बाल सूर्यन हृन्दि तन्दलन बराबर,
च्यामि दीप्ती होन्द छु लोद आसान
गौरी माता पंपोश निभव च, च्यानी छुसय ब तोता करान

आशा पाश क्लेश विनाशं विदधानाम्
...म्भोज ध्यानपराणां पुरुषाणाम्
ईशीमीशाङ्गार्धहरां तां तनुमध्याम् गौरीं० ॥२॥

आशा पाशन क्लेशन न दुखन,
छख चूय ही माज्य नाश करान
तिमन पुरुषन यिम च्यान्यन पम्पोश,
पादन प्यठ छिय लगिथ आसान
ज़ाविल कमर सुस छख चूय ही माज,
शिव सन्द... छिय च्यि वनान
गौरी ... पो...

प्रत्याहार ध्यान समाधिस्थति भाजाम्
नित्य चित्ते निर्वृतिकाष्टां कलयन्तीम्
सत्यज्ञानानन्द मयीं त्वां तडिथआभाम् गौरीं० ॥३॥

यिम निथ च्यानीस ध्यानस समाधी
मंज़ छिय चोनुय सेवन करान
संसारचि शान्ति हुंज़ काष्टा
छख तिमन च़ ही माज्य भासनावान
तिमन सत् ज्ञान आनन्द शकली चूय
उज़मलि हन्दि पाठ्य छख चमकान
ही गौरी माता पंपोश नित्रव च़ च्यानी छुसय ब तुता करान

चन्द्रापीड नन्दित मन्दास्मितवक्त्राम्
चन्द्रा पीडालन्कृत लोलालकभाराम्
इन्द्रोपेन्द्रार्माचित पाद म्बुजयुग्मम् गौरीं० ॥४॥

ताज़ छुय चन्द्रम आनन्द त असवनि
मुख सुस ही माज्य छख रोज़ान
चन्द्रम ताज के गह सूति ही माज्य
मस भारि च्यानी छीय शूभान
नारायण बेयि इन्द्राज़ छिय तिम
पम्पोश पाद ज्योर च्यानी पूज़ान
ही गौरी माता पम्पोश नित्रव च़ च्यानी छुसय ब तोता करान

नानाकारैः शक्ति कदम्बैर्भुवनानि
व्याप्य स्वैरं क्रीडा यासौ स्वयमेका
...मामीं त्वां कल्पलतामानति भाजाम् गौरीं० ॥५॥

नाना रंग शक्ति हुंन्द समोह
संसारस मंज छियी च्ये वनान
छुयि संसार च्येयि सोरुय व्यापमुत
पानय छख चूय खेलः करान
ही कल्याणी चूय कल्प थूर छख
छुस च्ये ब प्रणाम त सेवा करान
ही गौरी माता पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान

मूलाधारादुत्थित वन्तीं विधिरन्द्रम्
सौर चान्द्र धाम विहाय ज्वलितांगीम्
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरांतामभिवन्धिाम् गौरीं० ॥६॥

मोलाधारः प्यठ उथित ब्रह्म रन्द्रस तान्य
ही माज्य छख वांतान
सूर्यस त चन्द्रम सून्दिस तेजस होर कुन
व्राविथ छक चमकान
थूलस सूक्ष्मस सूक्ष्म खोतः सूक्ष्मस
रूपस च्यानिस ब प्रणाम करान
ही गौरी माता पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान

आध्यन्त्यान्तं अक्षर मूर्त्या विलसन्तीं
भूती भूती भूत कदम्ब प्रसवित्रिम्
शब्दब्रह्मा नन्दमयीं त्वां अभिरामाम् गौरीं० ॥७॥

अ प्यठ क्ष हस तामत ही माज्य-
अक्षर रूप किन्य चूय शोभान
जीवन जीवन जीव खिल्यन छख
ही माज्य पानय च उपदावान
शब्द ब्रह्म आनन्द रूप छख

हीं माज्य पानय चूय विकसान
ही गौरीं माता पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान

यस्या कुक्षौ लीन अखन्डं जगत अन्डम्
भूयो भूयः प्रादुरभूदुत्तमेव
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं गौरीं० ॥८॥

सालिम जगत ब्रह्माण्ड सोरुय
यमिस कोछि मन्ज़ छुय वातान
युसः पत्रः नाश रुस भिय भिय
ब्रह्माण्डन पानय युसः उपदावान
कैलास पर्वतस प्यठ रूज़िथ
स्वामियस सूति सूति युसः फेरान
ही गौरी माता पंपोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान

यस्य मेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रेयद्वत्क्वापि चरं चाप्यचरं च
तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयाम् गौरीं० ॥९॥

यमिस मन्ज़ यिम ब्रह्माण्ड मालाय दानन
हन्दि पाठ्य वुरिथ रोज़ान
यिथ पाठ्य रजि मंज थावर त जन्गं
सोरुय तथि गन्डिथ आसान
सुय छख च अध्यात्म ज्ञानकि पदवी
किज छख च ही माज्य जानन ईवान
माता पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान ।

नित्यः सत्यो निष्कलएको जगदीशः
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणेच
विश्वत्राण क्रीडनशीलां शिवपत्नीं गौरीं० ।१०।।

नित सते निशकल जगत ईश्वर
सुय छुय ब्योनुय साक्षी वनान
सारूय सृष्टी उपदावनस प्यठ त
बयि छुख तथ संहार चूय करान
ही पारवती तथि रछान छिख चूयि
इहै खेल चोन सुभाव आसान
हौ गौरी मातर पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय व तोता करान

प्रातः (सायं) काले भावविशुद्ध विदधानां
भक्त्या नित्यं जल्पित गौर दशकंयः
वाचां सिद्धिं सम्पदमुच्चैः शिवभक्तीं
तस्यावश्य पर्वतपुत्री सिद्धिदात्रे ।। ११

प्रभात समयि शुद्ध भावनायि किन्य
आसिय युस च्यानी भक्ती करान
प्रथ दोह आसिय लोल किन्य ही माज्य
च्यानी यिम दह श्लोक परान
वाक्षसिद्धी सम्पदा शिव भक्ति
ही माज्य अवश्य छख तस चूय दिवान
ही गोरी माता पम्पोश नेत्रव च, च्यानी छुसय ब तोता करान ।।